मनोरंजन पुस्तकमाला-५०

काशी नागरीप्रचारिणी सभा की ओर से

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

रोम का इतिहास

लेखक

डाक्टर प्राणनाथ विद्यालंकार

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९२८

प्रथम बार १०००]

[मूल्य

विषय-सूची

भूमिका

युरोप की जातियाँ जहाँ एक दूसरी से भाषा, नियम, रीति-रिवाज आदि में सर्वथा भिन्न हैं, वहाँ उनमें एक प्रकार की समानता भी विद्यमान है जो उन्हें संसार की अन्य सब जातियों से पृथक् कर देती है। इस रहस्य का उद्भेदन रोम के इतिहास को बिना जाने नहीं हो सकता। रोम का किसी काल में लगभग संपूर्ण युरोप पर साम्राज्य था। उसने अपनी भाषा तथा सभ्यता का प्रचार प्रत्येक देश में किया था। कुछ समय के अनंतर जर्मनी के असभ्यों ने रोमन साम्राज्य पर आक्रमण करना प्रारंभ किया और वे कई स्थानों पर रोमन राज्य में आ बसे। इन असभ्यों के स्वभाव, रीति-रिवाज भिन्न भिन्न थे। जर्मनी के असभ्यों की तरह अन्य असभ्य भी युरोप में आ बसे। उन्होंने भी अपने रीति-रिवाजों को न छोड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि युरोप की जातियों की सभ्यता जहाँ एक दूसरी से सर्वथा भिन्न है, वहाँ उनमें एक प्रकार की समानता भी साथ ही साथ विद्यमान पाई जाती है। उनमें रोमन सभ्यता के कारण तो समानता है तथा असभ्यों की रीति, रिवाज, भाषा आदि के कारण विभिन्नता है। किस सीमा तक युरोपियन जातियों में पारस्परिक समानता है

रोम के इतिहास से वर्तमान युरोप की स्थिति समझने में सहायता

और किस सीमा तक विभिन्नता है, यह रोम के इतिहास के पढ़ने से ही स्पष्ट हो सकता है।

प्राचीन काल के विषय में रोम के इतिहास की शिक्षा

रोम की सभ्यता का युरोप में किस अंश तक प्रचार हुआ, इसके जानने के अतिरिक्त रोम के इतिहास से यह भी स्पष्ट होगा कि किस प्रकार रोम जैसा एक छोटा सा नगर सारे युरोप पर राज्य करता रहा तथा उसने कैसे सारे युरोप को विजय किया। रोम ने सब से पहले इटली को अधीन किया; फिर वह मध्य सागर के इधर उधर रहनेवाली जातियों को अधीन करने का यत्न करने लगा। विजय करने के बाद रोम ने इन सब स्थानों पर अपनी सभ्यता फैलाई, अपने राजनियमों को प्रचलित किया। इन सब विजयों के अनंतर रोम ने युरोप भी जीता और वहाँ पर भी उसने पूर्ववत् ही सब कार्य किए। रोम का इतिहास संसार के इतिहास में एक शृंखला का कार्य करता है। युरोप की जातियों ने रोम की अधीनता में बहुत कुछ उन्नति की। उन्नत होने के अनंतर ही उन्होंने अपने आपको धीरे धीरे रोम के पंजे से छुड़ा लिया।

प्रस्तावना

रोम एक छोटा सा नगर था। उसने अपने नागरिकों के बाहुबल तथा बुद्धिबल से संपूर्ण युरोप तथा एशिया के कुछ भाग को विजय किया। अफ्रीका का बहुत सा प्रदेश उसकी अधीनता में आ गया। इन सब अपूर्व विजयों में रोमनों के स्वातंत्र्य-प्रेम, अपूर्व साहस, नियमपालन, शासन-पद्धति तथा सहन-शक्ति आदि गुणों का बड़ा भारी भाग था, यह रोम का इतिहास पढ़नेवालों से छिपा नहीं रह सका है। रोम नगर पर विपत्ति पड़ती है, उसके मुख्य शासक ससैन्य घाटियों में शत्रुओं द्वारा घेर लिए जाते हैं, कृषि पर गुजारा करने और सादा जीवन बितानेवाले दरिद्र सिंसिनारस से रोम के दूत प्रार्थना करते हैं कि महाशय, आप ही इस समय रोमन राष्ट्र की रक्षा कर सकते हैं। चलिए, एक मात्र शासक का पद ग्रहण कीजिए, संपूर्ण नागरिक आपके इशारों पर चलने को तैयार हैं। सिंसिनारस रोम में जाता है, नवीन सेना तैयार कर रोमन शासकों को सेना-सहित छुड़ा देता है। यह कार्य करके वह रोम नगर को आते ही अपने आपको शासक के पद से पृथक् कर लेता है तथा पुनः वही पवित्र कृषि कार्य्य करने के लिये अपने घर चला जाता है। यह कोई कथा नहीं है, सच्ची घटना है। ऐसे महा-

पुरुषों ने ही समय समय पर रोम का उद्धार किया। उत्पात के दिनों में रोम की जनता का जो आचार था, उसे आदर्श कह दिया जाय तो अत्युक्ति न होगी। धनिकों तथा दरिद्रों या साधारण जनों का ३०० वर्ष तक झगड़ा होता है। विचित्रता तो यह है कि इतने लंबे समय में खून की नदियाँ नहीं बहाई जातीं, संपूर्ण झगड़े शांति से ही किए जाते हैं। ३०० वर्ष के अंत में रोम की शासन पद्धति पलट जाती है, साधारण जनों का राज-कार्य में प्राबल्य हो जाता है। परंतु यह सब क्रांति शांति से ही हो जाती है, रक्त नहीं बहाया जाता। आश्चर्य की सीमा नहीं रहती है जब कि हम यह देखते हैं कि इन्हीं पारस्परिक झगड़ों के दिनों में रोम बाह्य शत्रुओं से चारों ओर से घिरा था। शत्रु से लड़ते समय साधारण जन तथा धनाढ्य एक हो जाते थे। उनके आपस के झगड़े तभी तक रहते थे जब तक देश पर किसी शत्रु के आक्रमण का भय न होता था।

सारांश यह कि रोमन अपनी पुरी को अपनी माता के सदृश समझते थे जिसकी रक्षा करना वे अपना मुख्य उद्देश्य मानते थे।

कार्थेज का अधःपतन तथा गाल-निवासियों का मध्य इटली से निकल जाना, इन दोनों घटनाओं ने जहाँ रोम की कीर्ति तथा निश्चिंतता को बढ़ाया, वहाँ उसके सत्तानाश का बीज भी बो दिया।

कार्थेज का राष्ट्र जब तक शक्ति-संपन्न था, रोम नगर-निवासियों के प्रत्येक दल का ध्यान उसी ओर लगा रहता था। अपने शत्रु का उच्छेद करने की ही उन्हें दिन रात चिंता लगी रहती थी। गाल-निवासियों के मध्य इटली में विद्यमान रहने से रोमन अपने आपको बचाने के लिये ही अस्त्र शस्त्र रखा करते थे। भाई भाई मिलकर रहते थे। परंतु इन दोनों शत्रुओं से छुटकारा पाते ही रोमन वे प्राचीन रोमन न रहे। पारस्परिक झगड़ों ने रोम में प्रबलता पाई। नियमों का अतिक्रमण किया जाने लगा। एक दल दूसरे दल के खून का प्यासा हो गया। उमंगी, भोगी, विलासी जनों को अपनी कामनाओं को पूर्ण करने का अवसर मिल गया। स्वार्थ तथा अभिमान ने अंतरंग सभा के सभ्यों में अवतार ले लिया। शक्ति तथा भय ने जनता के चित्त को ग्रस्त कर लिया। शासकों का स्वेच्छाचारित्व बढ़ने लगा। बदमाशी तथा लुच्चेपन ने नागरिकों के हृदय में घर कर लिया।

रोम के अधःपतन का सूत्रपात करने के लिये जनता की उपरि-लिखित आचार-भ्रष्टता ही पर्याप्त थी। परंतु इतने पर ही बस न हुआ। एक और कारण ने रोम का अधःपतन आवश्यक कर दिया। रोम की सेना शक्ति-शालिनी हो गई। उसने शासकों के चुनाव में अपना हस्तक्षेप किया। अब क्या था। सैनिकों ने जिसका पक्ष ले लिया, वही रोम का शासक बनने लगा। सेनापति सेनापति से लड़ते थे।

जो विजय पाता था, वही रोम का शासन अपने हाथ में ले लेता था। इस प्रकार रोमन सेना एक ओर अपने सेनापतियों की आज्ञा का पालन करती थी तो दूसरी ओर रोम के राज-नियमों को एक व्यक्ति की खातिर पैरों तले कुचलती थी। यहाँ पर यह न भूलना चाहिए कि इस भयानक स्वेच्छाचारित्व के दिनों में रोम की सेना में स्वतंत्र पुरुष सैनिक के तौर पर न थे, अपितु पैसों के दोस्त प्रांतीय ग्रामीण थे। इन लोगों को अपने वेतन से मतलब था। जो वेतन देता था, उसी के लिये ये लोग अपना खून बहाने के लिये सदा सन्नद्ध रहा करते थे। इन सैनिकों को रोम की स्वतंत्रता के नाशक, डाकू, अत्याचारी कहना भी अनुचित नहीं हो सकता।

इन सैनिकों के हस्तक्षेप तथा स्वेच्छाचारित्व से रोमन राष्ट्र को बचाने की इच्छा से सम्राटों ने किसी न किसी व्यक्ति को अपने जीवन काल में ही उत्तराधिकारी बनाने की विधि का अवलंबन कर लिया। डायोक्लीशियन के अनंतर प्रत्येक सम्राट् ने किसी न किसी व्यक्ति को अपना उत्तराधिकारी अवश्यमेव नियत किया। इन्हीं सम्राटों ने सैनिकों की शक्ति को भी कम करने का यत्न किया। इस विधि से रोमन राष्ट्र में रक्त की नदियों का बहना कुछ कुछ कम हो गया। सम्राटों को भी स्वाभाविक मृत्यु से मरना मिला। परंतु इन सब बातों के होने से सम्राट् पूर्वीय राजाओं के रूप में ही परिवर्तित हो गए। राज्य का व्यय बहुत ही अधिक बढ़ गया। दरबारियों

तथा खुशामदियों का जमघट सदा सम्राटों के चारों ओर लगा रहता था। सैनिकों का अत्याचार सम्राट् के हाथ में चला गया। जो कार्य पहले सैनिक करते थे, वह सम्राट् करने लगे। सारांश यह कि राष्ट्रीय जनता का कष्ट पूर्ववत् ही बना रहा, यद्यपि अब सैनिकों के स्थान पर सम्राट् कष्ट देनेवाला हो गया। संपूर्ण साम्राज्य में न्याय की मूर्ति भंग हो गई। प्रसिद्ध प्रसिद्ध योग्य व्यक्तियों का प्रति दिन घात किया जाने लगा।

राजकीय दरबार के कांस्टैंटिनोपल में चले जाने से रोम नगर के महत्त्व को बड़ा भारी धक्का लगा। कांस्टैंटिनोपल की रक्षा के लिये भिन्न भिन्न पल्टनों के चले जाने से रोम सर्वथा अरक्षित सा हो गया। इटली की भी बुरी दशा हो गई। संपूर्ण धनाढ्य व्यक्तियों के कांस्टैंटिनोपल में चले जाने से इटली एक उजाड़ दरिद्र प्रदेश हो गया। जिस समय सिसली तथा अफ्रीका में अन्न की फसल न हुई, उस समय इटली की जो दयनीय दशा हो गई, उसका वर्णन करना अति कठिन है।

राजकीय दरबार के स्थान-परिवर्तन से रोम को जो कुछ धक्का पहुँचना था, वह तो पहुँचा ही; पर धर्म के परिवर्तन से उसको बहुत ही अधिक हानि पहुँची। ईसाई लोगों का जिस प्रकार आरंभ में रोम में कत्लेआम किया गया था, इस समय उसका उन्होंने भी बदला चुकाया। **कांस्टैंटाइन**

दि ग्रेट के ईसाई बनने के अनंतर ही रोमन साम्राज्य में अत्याचार की प्रबलता हो गई। सर्वत्र देवताओं की मूर्त्तियाँ भंग की गईं। देवताओं के सामने बलि चढ़ाना बंद किया गया। इस प्रकार के अपराध करनेवाले को मृत्युदंड देना निश्चित किया गया। विजय की देवी को उखाड़ दिया गया। इस विषय को यहीं पर समाप्त करके यह कह देना उचित प्रतीत होता है कि ईसाई मत के तलवार के जोर से फैलाए जाने के कारण रोमनों की प्राचीन बची बचाई स्वतंत्रता का भी उच्छेद हो गया। ईसाई मत के ग्रहण से रोमन लोगों को लड़ाई से घृणा हो गई। वीरता तथा साहस ने उनके हृदयों से प्रयाण कर दिया। रोम के सेनापति लोग वीरता से लड़ने के समय युद्ध-जन्य विपत्तियों पर शोक प्रकाशित करने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि रोम की स्वतंत्रता को बड़ा भारी धक्का लगा।

रोम के दुश्मनों का स्वभाव रोमनों से सर्वथा भिन्न था। वे असभ्य लोग युद्ध के सिवा अन्य किसी बात का स्वप्न न देखते थे। उन्हें अधिक उपजाऊ भूमि तथा अच्छे जल-वायु की आवश्यकता थी। तलवार ही उनकी शक्ति तथा अधिकार था जिसके बल पर वे रोम से लड़ते थे। उनको हम चाहे जंगली असभ्य क्यों न कहें, परंतु इसमें संदेह नहीं कि वे लोग रोमनों की अपेक्षा जहाँ आचार में उन्नत थे, वहाँ उनमें बल भी पर्याप्त था। भोग-विलास का उन्हें पता तक न था। कठोरता

तथा परिश्रम से जीवन व्यतीत करने के कारण उन्हें रोग तथा कष्ट का भय न था। वे मृत्यु को बड़ी प्रसन्नता से ग्रहण किया करते थे। विश्वास तथा धर्म को वे लोग अच्छी तरह से समझते थे। यदि उनमें किसी बात की कमी थी तो वह केवल तर्क की। उन्हें तर्क द्वारा सत्य को असत्य तथा पाप को पुण्य का रूप देना, आजकल के सभ्य लोगों के सदृश, न आता था।

रोमन लोग इस प्रकार के असभ्यों से क्या मुकाबला कर सकते थे? भय तथा मूर्खता से प्रेरित होकर उन्होंने जो कुछ भी किया, वह उनके योग्य न था। आदि में तो उन्होंने रुपए देकर उन असभ्यों को आक्रमण करने से रोका। कुछ समय के लिये वे शांत हो जाते थे, परंतु फिर वे आक्रमण करने की धमकी देते थे। रोमन फिर उन्हें रुपए देकर शांत कर देते थे। इस प्रकार बार बार रुपए देना रोमनों के लिये बड़ा ही मँहगा पड़ा। असभ्यों ने इसे 'कर' का रूप दे दिया तथा वे रुपए लेने में अपना अधिकार प्रकट करने लगे। रोमन लोग जब कभी रुपए देने में आनाकानी करते थे, तो वे असभ्य लोग उनको आक्रमण का डरावा देते थे। इस प्रकार के आक्रमणों से भयभीत होकर रोमनों ने अपने बचाव का एक तरीका निकाला। वह यह था कि बहुत से असभ्यों को रुपए देकर अपनी सेना में रखा तथा उन्हीं को आक्रमण करनेवाले असभ्यों से लड़ाया।

कुछ समय के लिये तो इस विधि ने लाभ पहुँचाया, परंतु अंत में इसने रोमनों की स्वतंत्रता का सर्वनाश ही कर दिया। रोमनों की सेना में नौकर असभ्यों ने कुछ समय के बाद रोमनों के विरुद्ध ही अपने हथियार उठा लिए तथा अपने अन्य साथियों को बुलाकर देश को खूब लूटना प्रारंभ किया। रोमन सम्राट् ने 'मरता क्या न करता' के अनुसार धोखेबाजी से अपने दुश्मनों से अपने आपको बचाना चाहा, परंतु इससे उल्टी हानि पहुँची। जिस शक्तिशाली व्यक्ति को मरवाना होता था, उसे सम्राट् मित्रता के बहाने से अपने दरबार में बुला लेता था और चुप्पे से ही मरवा डालता था। परंतु यह रोमन साम्राज्य के लिये बड़ा ही हानिकारक सिद्ध हुआ।

रोमन लोगों की धोखेबाजी, बदमाशी आदि से क्रुद्ध होकर बदला लेने पर सन्नद्ध, असभ्यों ने रोमनों की संधि आदि की बात सुनना बंद कर रोमन साम्राज्य पर आक्रमण करना प्रारंभ कर दिया। जिधर गए, उधर ही उन्होंने खून की नदियाँ बहा दीं। जिस प्रांत में उन्होंने पैर रखा, उसे ही उजाड़ बना दिया। इटली को समय समय पर खूब लूटा गया। इस प्रकार लूट मार करते हुए असभ्यों ने लगभग संपूर्ण युरोप को अपने हाथ में कर लिया। ५वीं सदी में विसिगाथ्स ने स्पेन को, फ्रैन्क्स ने गॉल को, सैक्संस ने दक्षिणीय ब्रिटन को, हंज ने पैनोनिया (Painnonia) को तथा ऑस्ट्रोगाथ्स ने इटली को अपने अधीन कर लिया। संपूर्ण रोमन साम्राज्य

की गति बदल गई। नए नियम, नया राज्य, नई भाषा तथा नई रीति-रिवाजों का सारे युरोप में प्रचार हो गया। इस परिवर्तन के साथ साथ जहाँ भिन्न भिन्न प्रांतों का तथा जातियों का अपना अपना इतिहास प्रारंभ होता है, वहाँ रोम का अपना इतिहास समाप्त हो जाता है।

रोम का इतिहास

१—प्रारंभिक इतिहास और नगर-स्थापना

अति प्राचीन काल में आस्कन नामी जाति इटली में रहती थी। फिर कुछ समय के पश्चात् प्लास्जी जन-समूह वहाँ में आकर बसा। यह प्लास्जी यूनान के प्लास्जियों के संबंधी थे। आस्कनों को प्लास्जियों ने पर्वतों में भगा दिया। सभ्य होने के कारण इन्होंने बहुत बड़े बड़े नगर बसाए तथा ये व्यापार में रत हुए। कई सौ वर्षों के अनंतर एट्रूरिया का निवासी 'एट्रूस्कन' जन-समूह इटली में आया। इनकी भी उत्पत्ति अनिश्चित है, यद्यपि ऐतिहासिकों ने उसे ढूँढ़ निकालने में बहुत सा यत्न किया। अधिकतर ऐतिहासिकों की सम्मति यही है कि यह लघु एशिया से इटली में आए थे। इनकी शासन की रीति भी प्रशंसनीय थी। उच्च जाति पुरोहितों की थी, शेष जातियाँ साधारण कार्य में लगी रहती थीं। पुरोहितों में से ही एक वर्ष के लिये प्रधान न्यायकर्ता चुना जाता था। प्रतीत होता

प्लास्जियों का आगमन

है कि एट्रस्कन लोग शकुनों पर बहुत विश्वास रखते थे। इनमें व्यापार का पर्याप्त प्रचार था। इनमें से बहुत से लोग धनाढ्य भी थे। उनकी सभ्यता के जो जो चिह्न इटली में खोदने से मिले हैं, वे अतिशय चकित करनेवाले हैं। एट्रस्कनों ने झीलों तथा दलदलों से पानी निकालकर कृषि के लिये भूमि निकाल ली थी। नदियों के बहुत बड़े बड़े बाँध बनाए थे, नहरें तथा पत्थर के उच्च प्रासाद खड़े किए थे। उनमें शिल्प का भी कार्य उत्तम था। उनकी बनाई हुई मूर्तियाँ खोदने से निकली हैं जिनकी कारीगरी प्रशंसनीय है। इटली में इनकी विद्यमानता ईसा से १२०० वर्ष पूर्व मानी जाती है, क्योंकि इन्हीं दिनों में ईनस इटली में आया था।

रोम्युलस तथा रोमस् की उत्पत्ति

ट्राजन के युद्ध से ६० वर्ष पूर्व राजा इवैंडर अर्कोडिया नामी देश से एक सत्यप्रिय तथा धार्मिक जनसमुदाय को अपने देश में लाया। पैलाटाइन पर्वत की अधित्यका में टाइबर नदी के तट पर उसने एक नगर बसाया। राजा इवैंडर मंगल देवता का पुत्र था। उसे पूछने से मालूम हुआ कि इटली का राजा भी देव-वंश से है। कुछ समय के अनंतर ही इटली का राजा टर्नस तथा इवैंडर घनिष्ठ मित्र हो गए। टर्नस ने ही अपने देशवासियों को लिखना पढ़ना सिखाया, जो कि स्वयं उसने हरकुलीज से सीखा था। इवैंडर के विषय में हमें कुछ विशेष पता नहीं है। इटली में जिस स्थान पर

ईनस आया, उस स्थान के राजा का नाम **लैटिनस** था। ईनस तथा लैटिनस में मित्रता हो गई। लैटिनस ने अपनी पुत्री लैर्गनिया का विवाह ईनस से कर दिया, यद्यपि उसने टर्नस से इस बात का वचन दिया था। इसका यह परिणाम हुआ कि ईनस तथा लैटिनस दोनों से ही टर्नस की लड़ाई प्रारंभ हो गई। इस युद्ध में टर्नस तथा लैटिनस दोनों ही मारे गए। ईनस बच गया, अतः उसी की विजय हुई और वह दोनों ही राजाओं के राज्य का अधिपति हो गया। ईनस ने अपनी स्त्री के सम्मान में लैवीनियम नामक नगर बसाया। कुछ ही दिनों के बाद **न्यूमिसियस** नदी के तट पर ईनस को एक युद्ध करना पड़ा जिसमें वह मारा गया। उसकी मृत्यु के अनंतर उसका पुत्र **अस्केनियस** राज्य पर बैठा। उसने पिता के बसाए हुए नगर को नापसंद किया, क्योंकि उस स्थान का जलवायु अच्छा न था। इसने **अल्वान** पर्वत के ऊपर 'अल्वालांगा' नामी नगर बसाया। इस नगर ने यथासमय बहुत उन्नति की। कहते हैं कि ३० नगरों में यह एक नगर गिना जाता था।

इटली में अस्केनियस के वंश का ३०० वर्ष तक राज्य रहा। अंत में **अम्युलस** अपने बड़े भाई न्यूमिटर को राज्य से पदच्युत कर सिंहासन पर आ बैठा। एक बुरे कार्य से अन्य बुरे कार्य उत्पन्न होते हैं। यद्यपि न्यूमिटर ने ही अम्युलस को पाला था, तथापि अम्युलस ने अपने राज-सिंहा-सन के दूसरे वंश में चले जाने के भय से अपने भाई की कन्या

सिल्विया को कैद कर लिया तथा उसके पुत्र को मरवा डाला। कैद में ही यथासमय इस कन्या के दो पुत्र उत्पन्न हुए। क्रूर राजा ने जब यह सुना, तब उसने दोनों बच्चों के साथ ही सिल्विया को भी नदी में फेंकवा दिया जिससे सब झगड़ा सदा के लिये समाप्त हो जाय।

रोम्युलस तथा रेमस का राज्य प्राप्त करना

परमात्मा जिसकी रक्षा करता है, उसको कौन मार सकता है! नदी बढ़ी हुई थी। पर वे दोनों बच्चे दैवात् पैलाटाइन पर्वत के नीचे किनारे पर जा लगे, यद्यपि उनकी माता डूबकर मर गई। वहाँ पर राजा के एक गड़रिए ने उन बच्चों को उठा लिया। उस गड़रिए का नाम **फास्टलस** था। वह इन बच्चों को अपनी धर्मपत्नी के पास ले गया, यद्यपि उसके १२ बालक पहले से ही थे जिनका पालन उसे करना पड़ता था। यथासमय रोम्युलस तथा रेमस दोनों ही भाई जवान हुए तथा सब गड़रियों के नेता के रूप में माने जाने लगे। इनके बाबा की भेड़ें अवंटाइन पर्वत पर चरा करती थीं। एक दिन ऐसा हुआ कि फास्टलस तथा नूमिटर के गडरियों के बीच में झगड़ा खड़ा हुआ। रेमस को पकड़कर नूमिटर के सम्मुख लाया गया। नूमिटर ने उसे देखते ही समझ लिया कि यह तो उसकी कन्या सिल्विया का पुत्र है। जब दोनों भाइयों को यह पता लगा, तब उन्होंने सेना एकत्र कर नूमिटर के भाई को राजगद्दी से उतार दिया और

रोमस को गद्दी पर बैठा दिया। दोनों भाइयों ने अपने बाब
से जमीन ली तथा जिस स्थान पर वे पले थे, वहीं पर उन्होंन
एक नगर बसाना प्रारंभ किया।

यह लोकोक्ति है कि 'रोम' एक दिन में नहीं बसा
रोम्युलस की सम्मति **पैलाटाइन** पर्वत पर नगर बसाने क

रोम नगर का बसाना

थी, परंतु रोमस की एवंटाइन पर्वत प
बसाने की थी जहाँ पर उसके बाब
की भेड़ें चरा करती थीं। दोनों ने शकुन द्वारा इस बात क
निर्णय करना स्वीकार किया। रोम्युलस की विजय हुई तथ
पैलाटाइन पर्वत पर ७३३ ई० पू में पहली अप्रैल के दिन रोम
नामक नगर बसाना निश्चित हुआ।

नियत दिन के आने पर एक गोल चक्कर खोदा गया
उस गड्ढे में प्रत्येक मनुष्य ने नई फसल का प्रत्येक प्रकार क
अनाज डाला; तथा जो जो मनुष्य जिस जिस देश का था,
उसने अपने अपने देश की एक मुट्ठी भर मिट्टी डाली
इसके अनंतर गड्ढा भर दिया गया। गड्ढे के ऊपर एक वेदी
बनाई गई और उस पर आग जलाई गई। इस प्रकार नगर
का मध्य स्थिर किया गया। इसके अनंतर रोम्युलस ने एक
सफेद गौ तथा बैल को जोतकर हल चलाना प्रारंभ किया
और नगर की बाहरी दीवार की सीमा नियत की। सीलर
नामक व्यक्ति को यह आज्ञा दी गई कि जो मनुष्य इस
लकीर को लाँघने का यत्न करे, उसको मार डालो। दैवी

घटना से **रोमस** ही बिना जाने गुजरने लगा और सीलर के बरछे से मारा गया। जब रोम्युलस को यह पता लगा, तो उसे बहुत दुःख हुआ, यद्यपि उसने वह दुःख बड़े धैर्य से एक रोमन की तरह सहन कर लिया। इस हृदयविदारक घटना को सुनते ही रोम्युलस ने जो शब्द कहे, वे स्मरणीय हैं। उसके मुँह से उस समय यह निकला कि यह उन सब के साथ हो जो भविष्यत् में भी मेरी दीवार को लाँघने का यत्न करें। रोम्युलस ने एक देवी का मंदिर बनवाया और यह घोषणा की कि जो कोई इस मंदिर की शरण लेगा, उसकी रक्षा की जायगी तथा उसे उसके दुश्मन के सपुर्द न किया जायगा। इस घोषणा का यह प्रभाव हुआ कि बहुत ही शीघ्रता से रोम नगर की जनसंख्या बढ़ने लगी। इधर उधर के दुःखित लोग रोम की शरण लेने लगे। रोमवालों को एक कष्ट था। वह यह कि उनके नगर में स्त्रियाँ न थीं। अविवाहितों का ही वह उपनिवेश था।

अतः इस कष्ट से बचने के लिये एक उपाय सोचा गया। २१ अगस्त के दिन कांसस का उत्सव होता था। उसमें घुड़-दौड़ हुआ करती थी। रथों का तेजी में मुकाबला हुआ करता था। रोमवालों ने अपने समीपवर्ती स्त्री पुरुषों को इस उत्सव में सम्मिलित होने को बुलाया। बहुत से नगरों के लोग अपनी स्त्री और बाल बच्चों के साथ वह उत्सव देखने गए। उत्सव का दिन आया और घुड़दौड़ इत्यादि खूब जोर से हो रही

थी। रोम्युलस ने इशारा किया। इशारा पाते ही उसके अनुयायियों ने एक एक स्त्री पकड़ी और लेकर भाग गए। रोम्युलस ने उत्सव में आए हुए दर्शकों को समझाया कि तुम लोगों की कन्याओं के साथ बुरा व्यवहार न किया जायगा—वह घर की मालकिन बनाई जायँगी। परंतु इस पर किसी को प्रसन्नता न हुई। वे लोग रुष्ट होकर अपने अपने घरे चले गए और अपने देशवासियों को रोम के विरुद्ध युद्ध करने के लिये उभाड़ने लगे। सैवाइन जाति का राजा टिटस टेटिअस युद्ध के लिये उद्यत हो गया तथा एक भारी सेना एकत्र करने की तैयारी करने लगा। लैटिन नगरों की दो सेनाएँ उससे पूर्व ही लड़ने चली आई थीं; परंतु वे दोनों की दोनों पराजित हुईं। लैटिन नगरों के मनुष्यों को रोम नगर का नागरिक बना लिया गया। इस प्रकार रोम की शक्ति और बढ़ गई।

कैपिटोलाइन पर्वत पर रोमनों का एक दुर्ग था। टेटिअस की इच्छा उसे जीतने की थी। रोमनों से लड़ाई हुई जिसमें टेटिअस की पहले पहल विजय हुई; परन्तु रोम्युलस ने ईश्वर की एक बार प्रार्थना करके पुनः अपने साथियों को उत्तेजित किया। युद्ध भयानक रूप से प्रारम्भ हुआ। इसी युद्ध में **सैवाइन** जाति की स्त्रियाँ जो कि अब अपने रोमन पतियों से प्रेम करने लग गई थीं, आ कूदीं तथा जोर से कहने लगीं कि हमें दोहरा कैदी मत बनाओ। हम तो विधवा हो जायँगी, यदि हमारे पति इस भयानक युद्ध में मर गए। इसके परिणाम

स्वरूप शांति हुई। दोनों जातियों का परस्पर मेल हो गया। साथ ही दोनों ने यह संधि कर ली कि हम दोनों पर बारी बारी से एक एक जाति का पुरुष शासक होगा, यद्यपि आरंभ में रोम्युलस तथा टेटिअस एक साथ ही शासन करते रहे।

रोम्युलस ने जनता के दो विभाग किए—एक पैट्रोशियन (धनिक) दूसरे क्लियन्टस (दरिद्र)। दूसरे पहले के आश्रित थे;

रोम्युलस की शासन रीति

और जहाँ पैट्रोशियनों का राज्य में पूरी तरह पर हाथ था, वहाँ इनका उसमें हस्तक्षेप न था। पैट्रोशियनों में भी तीन विभाग थे—(१) रोमन, (२) एट्रस्कन, (३) सैवाइन। इसी प्रकार एक तीसरा जनसमुदाय रोम में आकर बसा था जिसको प्लीशियंस (साधारणजन) के नाम से पुकारा जाता था। इसमें विजित देशों के निवासी तथा शरणागत शामिल थे। इनका भी राज-कार्य में हस्तक्षेप न था, यद्यपि ये किसी व्यक्ति के अधीन भी न थे। इनमें अच्छे अच्छे बुद्धिमान् लोग भी थे; परंतु धनिक लोग स्वत: इन्हें कब अधिकार देने लगे थे। आगे चलकर हम देखेंगे कि किस प्रकार शान्ति तथा बुद्धिमत्ता से लड़ते हुए इन साधारण जनों ने समुदाय के राज्य में शक्ति प्राप्त कर ली। प्रत्येक दल दस विभागों में विभक्त था। इन विभागों का नाम क्यूरी था। धनिकों के ३० क्यूरी मिलकर एक प्रबंधकारिणी सभा बनाते थे जिसे राज्य का सारा प्रबंध करना होता था। राजा को यही चुनती थी; साथ ही न्यायालय का कार्य भी यही

करती थी। इसी प्रकार धनिकों में बहुत से वृद्ध लोग मिलकर एक अंतरंग सभा बनाते थे। वे राजा को प्रबन्ध में सहायता देते थे। १८ फर्वरी को रोम्युलस की मृत्यु हो गई। एक वर्ष तक राज्य में कोई राजा शासन के लिये नहीं चुना गया। जनता की यह शिकायत थी कि हम पर एक के स्थान पर १०० राजाओं का शासन है, क्योंकि वास्तव में राज्य तो अंतरंग सभा करती है और सदा न्याय से भी काम नहीं करती। अन्त में एक वर्ष के बाद यह निर्णय हुआ कि रोमन सैवाइन जाति में से एक व्यक्ति को अपने राजा के तौर पर चुन लें। सर्व सम्मति से जनता ने नूमापाम्पिलियस को राजा चुना।

नूमापाम्पिलियस

यह अपने समय का बड़ा विद्वान् था। सब प्रकार के नियमों से परिचित था तथा बहुत विक्षोभों को पसंद न करता था। रोम से दो दूत क्यूरस नामक स्थान पर उसे बुलाने के लिये भेजे गए। नूमा ने दूतों का बड़ा स्वागत किया। वह बहुत प्रेम से उनसे मिला। परंतु जब दूतों ने उसे रोम का राजा बनने को कहा, तब उसने उत्तर दिया कि मुझे जीवन का यह परिवर्तन पसंद नहीं है। जीवन जितना एक-रस हो, उतना ही उत्तम है। किसी को पागलपन ही प्रेरित कर सकता है कि वह अपने शान्त जीवन का परित्याग कर ऐसे कार्यों में फँसे। मैं तो रोम के राज्य के सर्वथा अयोग्य हूँ। कहाँ मैं शन्तिप्रिय, कहाँ युद्धप्रिय रोमन! मेरा तो विश्वास है कि मुझे वहाँ की प्रजा हँसेगी, यदि मैं उन्हें

विद्या-धर्म, कर्म आदि कुछ भी सिखाने का यत्न करूँगा; क्योंकि रोमन युद्ध में अधिक रुचि रखते हैं। उन्हें तो वह नेता प्रिय हो सकता है जो उन्हें युद्धों में विजयी बनावे। इस प्रकार जितना वह राजा बनने से घबराने लगा, रोमन उतना ही उसे राजा बनाने के अधिक उत्सुक हुए। अंत में नूमा के पिता ने अपने पुत्र को समझाया कि एक युद्धप्रिय जाति के लिये एक शांतिप्रिय राजा ही उचित है। और जब ईश्वर की यही इच्छा है, तब तुम्हें 'न' नहीं करना चाहिए। जाओ, ईश्वर की इच्छा पूर्ण करो। इसी में भला है। इस पर नूमा ने राजा बनना स्वीकार कर लिया। पूजा आदि करके वह रोम की ओर चल पड़ा।

(१) रोम्युलस ने जहाँ रोमनों को युद्ध संबंधी नियम

नूमा का शासन

सिखाए थे, वहाँ नूमा ने उनको पूजा, उपासना, धर्म कर्म आदि सिखाया।

(२) नूमा ने राज्य की भूमि को प्रजा में विभक्त किया और इस प्रकार अपने आपको एक योग्य शासक सिद्ध किया।

(३) रोम में सीमा के रक्षक देवता टर्मिनस की पूजा प्रचलित की।

(४) इसने ९ शिल्पियों के ९ संघ बनाए। वे इस प्रकार हैं—(१) बाजा बजानेवाले (२) बढ़ई (३) सुनार (४) चमार (५) रंगसाज (६) कुम्हार (७) लुहार (८) चमड़ा रँगनेवाले (९) सर्वशिल्पियों के कार्य करनेवाले।

(५) मनुष्यों का बलि चढ़ाना बंद किया।

(६) गणेश (Janus) का मंदिर खड़ा किया जो कि शांति के समय में बंद रहता था तथा युद्ध के समय में खोला जाता था।

(७) रोम्युलस ने वर्ष भर में १० मास नियत किए थे; परंतु नूमा ने इसे अशुद्ध देखकर इसमें दो महीने और जोड़ दिए। पहला शांति के देवता जेनो (गणेश) के नाम पर जनवरी, दूसरा पवित्रता के देवता फब्रुआ पर फेब्रुअरी।

अत्यन्त वृद्ध होने के कारण नूमा स्वाभाविक मृत्यु से मरा। रोम का यह स्वर्ण काल या सतयुग समझा जाता है। कवियों का कथन है कि नूमा के राज्य में तूरी तथा नगाड़े की कभी किसी ने आवाज नहीं सुनी, तलवार तथा बर्छों पर जंग लग गए। देश में न ईर्ष्या थी, न द्वेष था, न किसी प्रकार का कभी षड्यंत्र रचा गया। जिधर देखो, उधर शांति ही शांति विराजमान थी। धर्म का राज्य सर्वत्र विद्यमान था।

२—राज्यतंत्री शासन

नूमा की मृत्यु के अनंतर कुछ समय तक अंतरंग सभा रोम का शासन करती रही। अंत में सैबाइन जाति ने टूलस हास्टिलियस नामक एक युद्धप्रिय व्यक्ति को राजा चुना।

टूलस हास्टिलियस

इसका विचार था कि नूमा के शांतिमय राज्य से रोमनों का दबदबा इधर उधर के नगरों में कम हो गया है, अतः इसने युद्ध करने का प्रत्येक अवसर ढूँढा। रोम तथा आल्बा के कृषकों में झगड़ा हुआ। आल्बावाले प्रत्येक प्रकार से जहाँ शांति करने को सन्नद्ध थे, वहाँ टूलस युद्ध करने पर उतारू था। अंत में युद्ध करने का निर्णय हुआ। यह एक प्रकार का गृह युद्ध था, क्योंकि आल्बन तथा रोमन संबंध में भाई भाई लगते थे तथा एक ही गोत्र के थे। दोनों ओर की सेनाएँ सन्नद्ध होकर अभी लड़ाई प्रारंभ करने ही को थीं कि आल्बा के एक नेता ने आकर एक व्याख्यान दिया, जिसमें उसने दिखाया कि रोमन, सैलाइंज तथा हम लोग दुश्मनों से घिरे हुए हैं। वे लोग तो चाहते ही हैं कि हम लोग परस्पर लड़-कर कमजोर हो जायँ। अतः उसने प्रस्ताव किया कि निर्णय इस प्रकार हो जाय जिससे जनघात अधिक न हो सके।

टूलस का शासन

यह एक दैवी घटना हुई कि आल्बा तथा रोम की सेना में एक ही अवस्था के तीन तीन भाई थे। एक आल्बन भाइयों का नाम कुरेशी था तथा दो रोमन भाइयों का नाम हुरेशी था। मिलकर यह निर्णय हुआ कि दोनों जातियों के स्थान पर ये छः व्यक्ति लड़ें। जिधर के व्यक्तियों की विजय हो, वही जाति विजयी समझी जाय। तीनों कुरेशी तथा तीनों होरेशी आपस में युद्ध करने के लिये तैयार हो गए। कुछ समय के अनंतर आल्बन जाति की विजय होने में कोई संदेह न रहा, क्योंकि जहाँ तीनों कुरेशी घायल थे, वहाँ दो होरेशी मर चुके थे, केवल एक बचा था। इस पर बचा हुआ वह अकेला होरेशी युद्ध-क्षेत्र से भाग खड़ा हुआ। उस समय रोमनों की लज्जा का कोई अंत न था। तीनों क्षत विक्षत कुरेशियों ने उसका पीछा किया, पर घायल होने के कारण वे एक दूसरे से पृथक् पृथक् हो गए। होरेशी यही चाहता था। उसने पीछे लौटकर एक एक कर तीनों कुरेशियों को मार डाला। रोमन विजयी हुए तथा आल्बनों ने अपने अपने शस्त्र रख दिए।

जब कुरैशी विजय की प्रसन्नता में अपने घर पर आया, तब उसकी सगी बहिन ने उसे अपने पति का वस्त्र पहने हुए पाया। यह एक हुरैशी को आल्बा में ब्याही गई थी। जब उसे अपनी पति की मृत्यु का कारण अपना सगा भाई ही मालूम पड़ा, तब उसने भाई को बहुत बुरा भला कहा। कुरैशी क्रोध में भर गया और उसने न इधर देखा न उधर; उसी तलवार से बहिन

का गला धड़ से जुदा कर दिया। साथ ही उसने गुस्से में कहा कि रोम की सब स्त्रियों की, जो रोम के शत्रु की मृत्यु पर रोवें या शोक मनावें, यही दशा हो। दूसरा युद्ध टूलस ने ऐट्र-स्कन से किया। इसमें आल्बन ने एक मित्र की तरह साथ न दिया, अत: उनके नगर को गिराकर आल्बन को रोम में कोली-यन पर्वत पर बसा दिया गया। कुछ धनिकों को तो पैट्रीशियन विभाग में ले लिया गया, परंतु अवशिष्ट आल्बनों को साधारण जनों के विभाग में शामिल किया गया। तीसरा युद्ध टूलस ने सैवाइनों से किया तथा उन्हें जीत लिया। इसका उसे ईश्वर की ओर से पर्याप्त दंड मिला और उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो गई। अब सैवाइन जाति का आन्कस मार्सस राजा चुना गया।

आन्कस मार्सस का शासन

यह नूमा का पोता था। इसका स्वभाव भी बहुत कुछ नूमा से मिलता जुलता था। इसने रोम में निम्न लिखित कार्य किए--

(१) रोमनों को पुन: पूजा पाठ, धर्म कर्म आदि का ध्यान दिलाया।

(२) लैटिन जाति को जीता और रोम में उन्हें बसा दिया।

(३) टाइबर नदी पर बड़ा मजबूत लकड़ी का पुल बनाया जिसका वृत्तांत आगे आवेगा।

(४) नगर में पहला कैदखाना बनवाया।

(५) चौबीस वर्ष तक राज्य कर अन्कस मर गया, और एट्रस्कन जाति का एक व्यक्ति राजगद्दी पर बैठा।

लुकोमो

लुकोमो कारिंथ के एक बहुत बड़े उच्च घराने का पुरुष था। दैवी घटना से इसके पिता माता टार्क्वीनी में बसने आ गए थे और वहीं पर इसका जन्म हुआ था। टार्क्वीनीवाले इन लोगों को विदेशी समझते थे तथा इन्हें राज्य में कोई अधिकार न देते थे। लुकोमो उमंगी पुरुष था। उसे यह कब सह्य हो सकता था कि वह एक ऐसे नगर में रहे जिसमें उसके उच्च होने की कोई आशा पूरी न हो सके। उसने टार्क्वीनी छोड़कर रोम जाने का इरादा किया। रोम में वह बड़े भारी जलूस के साथ गया। जिस समय वह रोम के अंदर **जैनीकलम** नामक स्थान पर पहुँचा, उस समय कुछ ऐसे सगुन हुए जो उसका सौभाग्य सूचित करते थे। वह ऐसी शान से नगर में गुजरा कि प्रत्येक रोमन उसे देखने के लिये अपने अपने घर से बाहर आया। लुकोमो ने सब के साथ बहुत ही उत्तम व्यवहार किया। उसने रोम में एक बड़ा आली-शान महल खरीदा तथा उसमें रोम के सब बड़े बड़े मनुष्यों को भोज दिया। राजा से भी उसका परिचय हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि रोम में शीघ्र ही वह सर्वप्रिय हो गया। आंकस मार्सस की मृत्यु पर रोमनों ने लुकोमो को ही अपना राजा चुना।

लुकोमो अट्रस्कन जाति का था। उसे यूनानियों की संपूर्ण सभ्यता का पूरा पूरा ज्ञान था, क्योंकि उसके पूर्वज कारिंथ के रहनेवाले थे। इसका परिणाम यह हुआ कि रोम की सभ्यता भी बहुत ही शीघ्रता से उन्नत होने लगी। कुछ एक बातें नीचे दी जाती हैं।

लुकोमो का शासन

(१) रोम में पत्थर के शिल्प की उन्नति का आरंभ इसी के समय से हुआ था।

(२) पैलेटाइन तथा कैपिरोलाइन नामक पर्वतों के बीच में जो बहुत सा जल था, उसे निकालकर वहाँ की भूमि कृषि तथा रहने के योग्य बना दी गई।

(३) नए नए खेलों का देश में प्रचार किया गया।

(४) आस पास के बहुत से देशों को जीता गया।

(५) देश में फलित ज्योतिष विद्या का प्रचार किया गया।

लुकोमो के घर पर एक बालक था, जिसके कुछ एक चिह्नों से लुकोमो की धर्मपत्नी को यह विश्वास हो गया कि किसी समय यह बहुत योग्य पुरुष होगा तथा राज्य का भार सँभालेगा। अत: उसने अपने पति से उस बालक के विशेष पालन पोषण पर जोर दिया। जब वह युवावस्था को प्राप्त हुआ, तब लुकोमो ने उसके साथ अपनी कन्या का विवाह कर दिया। उसका नाम सर्विअस टूलियस था। पहले राजा आन्कस के दो पुत्र लुकोमो तथा सर्विअस के मारने की चिंता में थे, क्योंकि लुकोमो ही उनकी राज्य-प्राप्ति में बाधक हुआ था;

और अब लुकोमो के बाद सर्विअस रोम में सर्वप्रिय हो रहा था, अतः उसी को राजा चुना जाता था। आंकस के पुत्रों ने राजा के पास दो गड़रिए भेजे जिन्होंने मौका पाकर लुकोमो का घात कर दिया। परंतु उसकी धर्मपत्नी बहुत ही बुद्धिमती थी, अतः उसने लुकोमो की मृत्यु की खबर छिपा ली तथा मकान की खिड़की से जनता से कहा कि राजा अभी मरा नहीं है, उसे सख्त चोट आ गई है। अतः जब तक राजा अच्छा न हो जाय, तब तक सर्विअस ही राज्य का प्रबंध देखे भालेगा। बहुत दिनों तक राजा की मृत्यु छिपाई गई तथा सर्विअस सिंहासन पर बैठकर ठीक तौर पर प्रबंध करता रहा। अंत में लुकोमो की मृत्यु प्रकट की गई तथा अंतरंग सभा की सहायता से सर्विअस राज्य पर स्थिर रूप से आ बैठा। आन्कस के दोनों पुत्रों को देश निकाला दे दिया गया।

सर्विअस की उत्पत्ति का यद्यपि किसी को पता नहीं है, तथापि यह निश्चित है कि वह शासन श्रेणी के लोगों में से न था। इस दशा में साधारण जनों से उसकी सहानुभूति का होना स्वाभाविक ही था। इसका कार्य निम्न लिखित था।

सर्विअस तथा साधारण जनों का समुत्थान

(१) इसने राज्य में शांति स्थापित की। इधर उधर के प्रदेश इसने जीते, परंतु विजय के साथ साथ प्रजा के प्रिय होने का भी इसे ध्यान रहा, अतः इसने अत्याचार नहीं किया।

(२) विजय से रोम नगर की जातीय संपत्ति बढ़ाने के साथ ही साथ इसने लैटिन जाति के ३० नगरों से संधि कर ली। अवन्टाइन पर्वत पर देवी दीना का मंदिर खड़ा किया, जिसकी पूजा रोमन, लैटिन और सैवाइन जातियों के लोग मिलकर इस उद्देश्य से करते थे कि वह देवी संघटन करनेवाली है, अत: वह हमारे अंदर भी सदा संघटन को बनाए रखे। यह सब नगर भ्रातृ-भाव से एक दूसरे से मिले हुए थे तथा एक ही हो गए थे, यद्यपि यह समझा जाता था कि रोम उनका नेता है।

(३) इस कार्य से सर्विअस का राज-सिंहासन स्थिर हो गया। अत: उसने दो मनुष्य नियत किए जिनका कार्य यह था कि वह प्रजा की गणना करें तथा उनका 'धन' की दृष्टि से ऊँच नीच का विभाग करें। इस गणना का प्रभाव बहुत ही विचित्र हो गया; क्योंकि इससे साधारण जनों की शक्ति भी पूर्वापेक्षा बहुत अधिक बढ़ गई। धनिकों में जो कम आमदनीवाले थे, वे साधारण जनों की श्रेणी में हो गए। साधारण जनों में जो धनिक थे, वे धनिक श्रेणी में गिने जाने लगे। राज्यप्रबंध में भी उनका हाथ हो गया। गणना से प्रतीत हुआ कि उस समय रोम की जनसंख्या ८३००० थी।

(४) इस जन संख्या वृद्धि का एक परिणाम यह हुआ कि सर्विअस को रोम नगर की सीमा बढ़ानी पड़ी। सर्वि-

अस ने पत्थर की एक दीवार नगर के चारों ओर बनाई जिसके घेरे में (१) पैलेटाइन (२) अवंटाइन (३) कैपिटोलाइन (४) कोलियन (५) किटिनल (६) विमिनल (७) ऐस्क्विलिअन—ये सात पर्वत शामिल किए गए और यह घेरा साम्राज्य काल तक परिवर्तित न किया गया।

(५) पहले यह लिखा जा चुका है कि सर्विअस ने धन की दृष्टि से नागरिकों का विभाग किया। इस प्रकार के कार्य से प्राचीन धनिक श्रेणी, जो कि जन्म के अनुसार ऊँच नीच मानती थी, दिल ही दिल में सर्विअस से बिगड़ उठी। सर्विअस ने इसकी विशेष चिन्ता न करके पूँजी के अनुसार विभक्त धनिकों की एक सभा बनाई जिसका नाम 'जातीय सभा' रखा। यह **कैम्पस मार्टिअस** नामक स्थान में रखी गई। इनमें से कुछ एक मनुष्य नगर के प्रबन्धकर्ता के तौर पर चुने गए तथा उन्हीं के हाथ में राज-नियम बनाना, बड़े बड़े मुकदमों का फैसला करना, युद्ध तथा शांति की घोषणा करना आदि काम दे दिए गए।

(६) सर्विअस प्राचीन प्रबंधकर्त्री सभा का सर्वथा उच्छेदन न कर सका, अतः उसने यह आज्ञा निकाली कि नवीन जातीय सभा का कोई प्रस्ताव पास नहीं हो सकता, जब तक कि प्राचीन प्रबंधकर्त्री सभा स्वीकृत न कर ले।

(७) भिन्न भिन्न श्रेणी के अस्त्र शस्त्र भिन्न भिन्न नियत किए गये। वे इस प्रकार थे—

(क) प्रथम श्रेणी के लोग शरीर-रक्षा के लिये कवच, पादरक्षक, दस्ताने, ढाल और पीतल का शिरस्त्राण धारण करें तथा भाला, तलवार आदि हथियार रखें।

(ख) द्वितीय श्रेणी के लोगों को कवच पहनने का अधिकार न था।

(ग) तृतीय श्रेणी को पादरक्षक पहनना मना था। शेष अधिकार द्वितीय श्रेणी की तरह थे।

(घ) चतुर्थ श्रेणी के पास भाले को छोड़कर एक भी हथियार न था। शेष अधिकार पूर्ववत् थे।

(ङ) पंचम श्रेणी के लोग पत्थर आदि युद्ध के आवश्यक सामान उठा कर ले जाते थे। बाजे आदि बजाना भी इसी विभाग का कार्य था।

यह सब सुधार रोम के लिये बहुत ही उपयोगी थे। साधारण जन सर्विअस से अत्यन्त प्रसन्न थे। परन्तु प्राचीन धनिक श्रेणी उससे बहुत ही रुष्ट थी; तथा कई बार उसे उनकी ओर से यह इशारा भी किया गया कि वह प्रजा की सम्मति के पूछे बिना ही प्रबन्ध करता है। सर्विअस को भी इन धनिकों की गुप्त मंत्रणा तथा शत्रुता की चिन्ता रहती थी; अतः उसने इनके षड्यंत्रों से बचने के लिये लुकोमो के दो पुत्रों से अपनी

दो कन्याओं का विवाह कर दिया। परन्तु इससे उसको बहुत ही हानि पहुँची।

सर्विअस के दो दामादों में से एक तो शान्तिप्रिय था, दूसरा उमंगी और किसी प्रकार के धर्म कर्म को न माननेवाला था। यही स्वभाव उसकी दोनों कन्याओं का था। परन्तु भाग्य के फेर से उमंगी अधर्मात्मा कन्या शान्तिप्रिय दामाद से व्याही गई और दूसरी धर्मात्मा तथा शान्त स्वभाव-वाली कन्या अपने स्वभाव के ठीक विपरीत स्वभाववाले पति से व्याही गई। कुछ ही समय के बाद पापिनी, उमंगी कन्या अपनी दूसरी बहिन के पति से मिली; तथा उन दोनों ने गुप्त मंत्रणा की कि एक अपनी स्त्री को मार डाले और दूसरी अपने पति को। दोनों ने ही गुप्त मंत्रणा के अनुसार कार्य किया। कुछ समय के अनन्तर दोनों का विवाह भी हो गया। विवाह होने के अनन्तर ही टूलिया ने अपने नवीन पति लूसियस टार्कीनियस से कहा कि मैं तो तुमको रोम का राजा देखना चाहती हूँ। लूसियस ने अपने पक्ष के बहुत से मनुष्य एकत्र किए और एक दिन अवसर प्राप्त कर, जब कि सर्विअस कहीं गया हुआ था, वह राजसिंहासन पर अपने दल-वालों के साथ आ बैठा; और उसने अपने आपको रोम का राजा घोषित करके अन्तरंग सभा को बुलाया तथा उसी के बीच में सर्विअस पर समन जारी करके अपने आदमियों द्वारा उसे पकड़वा मँगाया। सर्विअस ने आते ही लूसिअस

से कहा कि मेरे जीते जी तू राजसिंहासन पर कैसे आ बैठा। लूसिअस ने सर्विअस को अपमानजनक शब्द कहे तथा उसे वृद्ध देखकर, कमर से पकड़, राजदरबार से बाहर कर नगर की सड़क पर जा पटका। उसके एक साथी ने सर्विअस का काम तमाम कर दिया।

टूलिया ने जब अपने पति का राजा हो जाना सुना, तब वह उसे धन्यवाद देने के लिये रथ पर चढ़कर राजदरबार की ओर आई। राजदरबार के समीप पहुँचते ही सारथी झिझक गया, क्योंकि उसने पुराने राजा सर्विअस की लाश मार्ग पर पड़ी देखी। टूलिया ने सारथी को इस बात पर बाध्य किया कि तू रथ को मेरे पिता की लाश के ऊपर से ले चल। इस प्रकार पिता के रक्त के छींटे अपने वस्त्र पर डालती हुई वह पति के पास पहुँची। परंतु पाप का फल देर तक भोगना नहीं मिलता, यह अभी आगे चलकर हम देखेंगे।

लूसियस स्वेच्छाचारी राजा था। उसने साधारण प्रजा के सब अधिकार छीन लिए। अपनी रक्षा के लिये वह एक सेना अपने चारों ओर रखने लगा। उसने धनिक श्रेणी के बहुत से व्यक्तियों को देश-निकाला दे दिया। इधर उधर के देशों से लड़ाई छेड़ी और उनकी लूट के धन से कैपिटोलाइन पर्वत पर एक बहुत ही सुन्दर भवन बनवाया। कुछ समय के अनंतर एक अशकुन हुआ जिसके विषय में

अभिमानी लूसियस का शासन तथा अधः-पतन

राजा ने अपने दो पुत्रों तथा एक भतीजे को डेल्फी में उनका अर्थ पूछने के लिये भेजा। वहाँ के पुजारियों ने कहा कि इस अशकुन का अर्थ लूसियस का अध:पतन है। इस पर उसके पुत्रों ने पूछा कि उसके बाद राज्य पर कौन बैठेगा? डेल्फी के पुजारियों ने उत्तर दिया—'वही मनुष्य राज्य पर बैठेगा जो अपनी माता को पहले चूमेगा'। ब्रूटस ने पुजारियों को बहुत सा सुवर्ण देकर इस भविष्यद्वाणी का अर्थ उनसे पूछ लिया। ब्रूटस रोम में पहुँचकर भूमि पर गिर पड़ा और उसने अपनी मातृ-भूमि को चूम लिया।

रोम की सेना आर्डिया नामक स्थान पर घेरा डाले पड़ी थी कि लूसियस के पुत्रों तथा चाचा में झगड़ा खड़ा हुआ कि किसकी स्त्री सबसे अधिक धर्मात्मा है। उनके चाचा कालैनिनस की धर्मपत्नी बहुत धर्मात्मा तथा पतिव्रता थी। उसका नाम लुक्रीशिया था। परंतु राजा के पुत्रों की धर्मपत्नियाँ दूषित आचरण की थीं। लूसियस के पुत्र सक्सरस ने जब अपने चाचा की स्त्री को देखा, तब वह उसकी सुंदरता देखकर मोहित हो गया। एक दिन रात को सक्सरस ने उस देवी का धर्म बिगाड़ा। इस पर जब कालैरिनस और ब्रूटस घर पर आए, तब लुक्रोशिया ने अपने दु:ख की सारी कथा सुनाई और देखते देखते वह अपनी छाती में छुरा भोंककर मर गई। यह हृदयविदारक दृश्य देखकर ब्रूटस का क्रोध उमड़ आया। उसने ऊँची आवाज से यह प्रण किया कि आज से मैं लूसियस,

उसकी धर्मपत्नी तथा उसके परिवार को रोम पर कदापि न राज्य करने दूँगा और न रहने ही दूँगा। प्रजा को यह सारी घटना सुनाई गई। प्रजा को लूसियस के विरुद्ध ब्रूटस ने शीघ्र ही उत्तेजित कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि लूसियस को सपरिवार रोम से भागना पड़ा।

इस घटना के अनंतर रोमन लोगों ने राजा द्वारा शासित होने का विचार त्याग दिया। उन्होंने ब्रूटस और कालैरियस को वर्ष भर के लिये रोम का शासक चुन लिया। लूसियस ने बाहर बैठे हुए ही अपने पक्ष का एक षड्यन्त्र रोम में रचा। दैवी घटना से षड्-यन्त्र पकड़ा गया और सबके सब व्यक्ति (जो इस बुरे कार्य में सम्मिलित थे) पकड़कर जातीय सभा के पास निर्णय के लिये लाए गए। उनमें ब्रूटस के दो पुत्र भी वर्त्तमान थे। ब्रूटस ने उनको एक वीर रोमन की तरह मृत्युदण्ड की आज्ञा दे दी।

रोम में प्रजातंत्र-राज्य

लूसियस जब एक बार षड्यंत्र रचने में विफल हो गया, तब उसने रोम पर आक्रमण करने की बात सोची। इस काम में उसे वी तथा टार्किनी के रहनेवालों ने सहायता दी। अर्सिया के समीप एक भयानक युद्ध हुआ, जिसमें ब्रूटस मारा गया। परंतु अंतिम विजय रोमवालों की ही रही। रोम की स्त्रियों ने ब्रूटस की मृत्यु पर वर्ष भर शोक मनाया; क्योंकि वह लुक्रीशिया जैसी पतिव्रता स्त्री के घातकों से बदला लेनेवाला था। लूसियस ने थोड़े ही समय के उपरांत एट्रूरिया के

राजा की सहायता प्राप्त की और एक बड़ी भारी सेना के साथ रोम पर चढ़ आया। रोम में बड़ी घबराहट फैल गई; क्योंकि टाइबर नदी को काठ के पुल से पार करते ही रोम में उसका ससैन्य आ जाना बहुत ही सहज था। पुल को काटने में समय लगना था, अतः पुल के काटे जाने के समय वीर होरे-शियस ने अपने शत्रुओं को रोक रखा तथा एक कदम भी आगे न बढ़ने दिया। पुल के टूटते ही वह भी टाइबर नदी में कूद पड़ा और तैरकर रोमनों की तालियों तथा हर्ष-ध्वनि में पार आ लगा। इस पर लूसियस ने रोम नगर पर घेरा डाल दिया। रोमन तैयार तो थे ही नहीं, अतः शीघ्र ही रोम में दुर्भिक्ष पड़ने लगा। इस पर कायस भूमियस नामक एक वीर पुरुष ने लूसियस को उसके शिविर में ही मार डालना चाहा। वह शत्रुओं के शिविर में प्रविष्ट हुआ और उसने भ्रम से स्वामी के बदले उसके मंत्री को मार डाला और वहीं पकड़ लिया गया। उसने एट्रूरिया के राजा पोर्सना के सामने अपना हाथ आग में डाल दिया। जब उसका हाथ जलकर भस्म हो गया, तब उसने राजा से कहा कि मेरे ३०० ऐसे साथी हैं जो मृत्यु तथा विपत्ति से नहीं डरते। उन लोगों ने तुझे मार डालने का प्रण किया है। इस पर डरकर पोर्सना ने रोमन लोगों से संधि कर ली और रोम में केवल हल बनाने का काम छोड़कर लोहे के और सब प्रकार के हथियार आदि बनाना बंद कर दिया। साथ ही रोम के १० नगर भी छीन लिए। लूसि-

यस ने तीसरी बार एक और प्रयत्न किया; परंतु हारकर कूमी नामी एक नगर में भाग गया, जहाँ बुढ़ापे के कारण मर गया।

यह हम पूर्व ही लिख चुके हैं कि लूसियस के पक्षपाती रोमनों ने राजा द्वारा शासित न होने का प्रण कर लिया था।

रोम का प्रजातंत्र-राज्य

पहले पहल एक डिक्टेटर या शास्ता चुना गया जो वर्ष भर एक राजा के रूप में रोम पर शासन कर सकता था। परंतु शासन की शक्ति एक व्यक्ति के हाथ में दे देना उचित न समझा गया; अतः रोम का प्रबंध करने के लिये प्रजा द्वारा दो प्रधान चुने गए। रोमन लोगों ने किसी को 'डिक्टेटर' चुनने का काम किसी विशेष विपत्ति के समय के लिये रख लिया। ये दो प्रधान जहाँ सेना के सेनापति होते थे, वहाँ अंतरंग सभा के भी प्रधान होते थे। इन्हीं दिनों में जातीय सभा की शक्ति प्रबल होने लगी। इन सब सुधारों के होते हुए भी साधारण जनों की दशा अति शोचनीय थी। यह हम पूर्व ही लिख चुके हैं कि साधारण जनों में से बहुत से कृषक थे। इन कृषकों को बिना किसी प्रकार के वेतन के सेना में लड़ने के लिये जाना पड़ता था। समय समय पर पर्याप्त कर भी देना पड़ता था। इसका परिणाम यह होता था कि बहुत से कृषक युद्ध से लौटने पर ऋणी होते जाते थे; और यदि वे जमीन बेचकर भी ऋण न चुका सकते थे तो उन्हें धनिक श्रेणी के उत्तमर्ण अपने निज के कारागार में डाल देते थे तथा उनके साथ सहस्रों प्रकार के

अत्याचार करते थे। ४६५ ई० पूर्व की बात है कि एक वीर ऋणी, जो कि रोम के लिये कई लड़ाइयों में लड़ चुका था, अपने उत्तमर्ण का कैदखाना तोड़कर भाग आया। रोम नगर के निवासियों के सामने ही उसने अपनी बेड़ियाँ तोड़ डालीं तथा अपनी सारी दुःख-कहानी कह सुनाई। उसकी बातें सुनकर समस्त साधारण श्रेणी के लोग उत्तेजित हो गए। उन्होंने अपनी रक्षा का उपाय शीघ्र ही करने का संकल्प कर लिया। उसी समय दूतों ने सूचना दी कि शत्रु की सेना रोम पर आक्रमण करने के लिये आ रही है। धनिक श्रेणी के प्रबंधकर्त्ताओं ने साधारण जनों से लड़ाई के लिये नाम लिखाने को कहा; पर उन्होंने स्वीकार न किया और कहा कि तुम लोग जाकर लड़ो; युद्ध जीतने से हम लोगों को तो कोई सुख मिलेगा ही नहीं। इस पर उच्च पदस्थ अधिकारियों ने यह आज्ञा उद्घोषित करके साधारण जनों को आश्वासन दिया कि आगे से किसी योद्धा का घर कोई उसके पीछे बिकवा नहीं सकता, उसके घर में से किसी को कैद नहीं कर सकता और न उसका माल असबाब ही छू सकता है। साथ ही किसी व्यक्ति को युद्ध में जाने से रोककर कैद नहीं किया जा सकता। इस पर साधारण जनों ने युद्ध में जाने के लिये नाम लिखाया तथा शीघ्र ही शत्रु पर विजय प्राप्त करके उद्घोषणा की शर्त्तों के पूरा होने की आशा करने लगे। परंतु उनकी आशाएँ पूरी नहीं की गईं। इस पर उन्होंने दूसरे वर्ष के आरंभ में

ही रोम नगर से तीन मील दूर अवंटाइन पर्व्वत पर अपने घर जा बनाए। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि अब हम लोग रोम के लिये न लड़ेंगे। युद्ध की हानियाँ भी वही धनिक लोग उठावें जिन्हें युद्ध के सब लाभ प्राप्त होते हैं। कुछ ही समय में साधारण जनों ने अपने नए निवासस्थान में किला बनाकर उसे मजबूत कर लिया। रोम नगर के सब लोग चिंतित हो गए, क्योंकि साधारण जनों के पृथक् हो जाने पर रोम का शत्रुओं से रक्षित रहना कठिन था। अतः धनिकों ने मिलकर एक बुद्धिमान् पुरुष को, जिसका नाम मैनेनिअस अग्रिप्पा था, साधारण जनों के पास भेजा। उसने वहाँ पहुँचकर उन्हें रोम लौट चलने के लिये समझाया। जब उन लोगों ने अस्वीकार किया, तब उसने उन्हें एक कथा सुनाई जो इस प्रकार थी—"एक बार शरीर के भिन्न भिन्न अंगों ने पेट के प्रति द्वेष प्रकट किया। उनकी शिकायत यह थी कि पेट शरीर के मध्य में है। हम लोग सारा काम करते हैं, पर सारा फल यह भोगता है। अतः उन्होंने काम करना छोड़ दिया जिससे पेट को उनकी कमाई का अनाज न मिल सके। परंतु जब उन्होंने ऐसा किया, तब स्वयं वे भी कमजोर पड़ने लगे। अतः हे साधारण जनो, तुम धनिकों को जहाँ कष्ट पहुँचाओगे, वहाँ तुम स्वयं भी कष्ट उठाओगे"। अंत में उन्होंने बहुत मनाने पर इस शर्त्त पर रोम में लौटना मंजूर कर लिया कि राज्य में उनके दो प्रतिनिधि अपने होंगे जो

उनकी रक्षा के जिम्मेवार होंगे। इन प्रतिनिधियों का नाम ट्रिब्यूनज था और हम आगे इन्हें इसी नाम से लिखेंगे। इस गृह-कलह के कारण रोमन लोग विजय-प्राप्ति में अपना जीवन न लगा सके। परतु यह स्मरण रखना चाहिए कि रोम इन्हीं दिनों में भावी विजय के योग्य हुआ था। इसका कारण यह है कि रोम के प्रजा-सत्तात्मक राज्य के पहले २०० वर्ष (५००—३०० ई० पू०) धनिकों तथा साधारण जनों के अधिकार-प्राप्ति के इन झगड़ों में बीत गए। परंतु इस पारस्परिक कलह में दोनों ही दल रोम को अपना समझते थे; तथा एक दूसरे को अपना सहवासी समझते रहे, चाहे उनका झगड़ा किसी बात पर हो। यह झगड़ा बड़ी शांति से होता रहा। रक्तपात बहुत ही कम हुआ और घरेलू युद्ध कभी हुआ ही नहीं। जब उनके शत्रु बाहर से रोम पर आते, तब वे मिल जाते और उनको निकालने का प्रयत्न करते थे।

रोमनों ने गृह-कलह से क्या शिक्षा ली

किसी अच्छे आदमी के लिये यह एक शिक्षा का स्थान था। इसने रोमन लोगों को उमंगी, उद्योगी तथा कर्मण्य होना सिखाया। प्रत्येक मनुष्य को अपने राष्ट्र के लिये कर्त्तव्य-ज्ञान दिया। साथ ही अपना भला अपने आप कैसे किया जा सकता है, यह भी सिखलाया। इसमें साधारण जन धनिकों का सम्मान करते थे और जानते थे कि हम रोम की भलाई के लिये कार्य करते हुए ही अधिकारों में उनसे बढ़ सकते हैं; और यह

बात सिद्ध करने का प्रयत्न करते थे कि जो अधिकार हम मांगते हैं, उनके लिये हम सर्वथा योग्य हैं। इस प्रकार रोमन लोगों ने आज्ञापालन, आत्मसंयम और दूरदर्शिता सीखी। उन्होंने केवल अपने वैयक्तिक जीवन को ही उन्नत करना नहीं सीखा, बल्कि राष्ट्र का भी सदा ध्यान रखा; क्योंकि वे यह जानते थे कि हम सब राष्ट्र का एक अंग हैं। असल वस्तु तो राष्ट्र है, जिसकी रक्षा करना हम सब का कर्त्तव्य है। इस राजनीतिक बुद्धि ने उन्हें पीछे बड़ा लाभ पहुँचाया। वे पुरानी संस्थाओं के साथ दृढ़ रूप से संबद्ध थे, इसलिये उन्होंने यह बात सीखी कि परिवर्त्तन अवश्य होता रहना चाहिए, और उन्होंने यह बात भी सीखी कि प्रस्तुत वस्तुओं को नष्ट किए बिना किस प्रकार शनैः शनैः परिवर्तन हो सकता है।

धनिक तथा साधारण जनों ने किस विषय में यत्न किया

धनिकों तथा साधारण जनों की कशमकश २०० वर्षों में समाप्त हुई। हम इस समय को दो भागों में विभक्त कर सकते हैं। पहला भाग सन् ४९४-४५० ई० पू० का है। इन पचास वर्षों में साधारण जन दुःख के कारण भाग रहे थे। दूसरा भाग सन् ४५०-३०० ई० पू० का है। इन १५० वर्षों में साधारण जन राष्ट्र में इतना ही अधिकार प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे थे जितना धनिकों का था।

साधारण जनों के दुःख दूर करने के लिये सब से पहला नियम सन् ४८६ ई० पू० में स्वीकृत हुआ था। यह इतिहास में

स्प्यूरियस कैशस का अग्रेरियन या भूमि संबंधी नियम कहलाता है। स्प्यूरियस कैशस स्वयं धनिक श्रेणी में से था और रोम

स्प्यूरियस कैशस का एग्रेरियन नियम

का प्रधान बन चुका था। जब वह प्रधान था, तब उसने लैटिन लोगों से संधि करके राष्ट्र की अच्छी सेवा की थी। उसने साधारण जनों की दु:खित अवस्था देखी और जिन जिन करों के देने के लिये वे बाध्य किए जाते थे, उन उन करों ने ही उन्हें दु:ख में डाल रखा था और उनके नाश के हेतु हो रहे थे। अतएव उसने प्रस्ताव किया कि राष्ट्र की जमीन साधारण जनों में, जो दरिद्र हैं, बाँट देनी चाहिए। राष्ट्र की भूमि वह भूमि थी जो युद्ध में जीती गई थी और राज्य के अधीन थी। इस भूमि का कुछ भाग युद्ध के पश्चात् योद्धाओं में बाँटा गया था, और कुछ भाग देवताओं के मंदिरों के लिये दे दिया गया था। जो कुछ बचा था, वही राज्य के पास था। परंतु अभी तक राज्य धनिकों के हाथ में था; इस कारण धनिक लोग उसमें अपने पशु चराते थे और उसे अपना समझकर काम में लाते थे। स्प्यूरियस कैशस ने जो प्रस्ताव किया, वह यह था कि इस भूमि का कुछ भाग निर्धन जनसाधारण में बाँटा जाय; और उन धनिकों को, जो अपने पशु शेष भाग में चराते हैं, इस काम के लिये राज्य को कुछ कर देना चाहिए। यह नियम स्वीकृत तो हो गया, परंतु प्रतीत होता है कि इसका कोई प्रभाव न पड़ा; क्योंकि धनिकों ने मार्ग में बहुत सी कठिना-

इयाँ खड़ी कर दीं। इस नियम के कारण वे स्प्यूरिअस कैशस से घृणा करने लग गए थे। उस पर राजशक्ति ग्रहण करके राजा बनने का दोष लगाकर उसे ४८५ ई० पू० में मार डाला गया। परंतु यह भूमि संबंधी नियम बराबर स्मरण रखना चाहिए; क्योंकि इसके विषय में आगे बहुत कुछ लिखा जायगा।

कैशस की मृत्यु के उपरांत साधारण जनों के कष्ट बढ़ते ही गए। परिणाम यह हुआ कि साधारण जनों को दबाकर

ट्रिब्यून कैसे शक्तिशाली हुए

ट्रिब्यून अधिक शक्तिशाली हो गए। साधारण जन अपने ट्रिब्यून को मजिस्ट्रेट की भाँति समझते थे; और ट्रिब्यून सामयिक प्रश्नों पर वाद विवाद करने के लिये साधारण जनों को बुलाते थे। साधारण जन वहाँ जाकर अपने परिवारों के अनुकूल सम्मतियाँ देते थे। पहले पहल वे हमारे जन समाजों (Public meetings) की तरह नियम स्वीकृत मात्र कर देते थे और ऐसा कोई उपाय नहीं करते थे जिससे उनका प्रभाव पड़े। धनिक लोग इस प्रकार की सभाओं को पसंद न करते थे और उन्हें तंग करते रहते थे। परंतु साधारण जन शक्तिशाली बनने के लिये जल्दी जल्दी सभाएँ किया करते थे। अब रोम में वस्तुतः दो राज्य थे। प्रधान लोग अंतरंग सभा को बुलाकर नियम बनाते और पास करते थे; परंतु ट्रिब्यून साधारण जनों को बुलाकर सभाएँ करते थे; और यद्यपि वे केवल नियम बनाते थे, तो भी शक्तिशाली थे। क्योंकि यदि प्रधान कोई

ऐसा नियम बनाते जिसे साधारण जन बुरा समझते थे, तो ट्रिब्यून नियम तोड़नेवालों की रक्षा करते थे। इससे उन नियमों का कोई प्रभाव न पड़ता था।

यह स्पष्ट ही है कि इस प्रकार नगर की अस्थिर दशा देर तक नहीं रह सकती थी। ४६१ ई० पू० में साधारण जनों ने कहा कि प्रधान और ट्रिब्यून नहीं होने चाहिएँ।

दशक

और १० नए मजिस्ट्रेट धनिक और साधारण जनों में से समान रूप से चुने जाने चाहिएँ। इन मजिस्ट्रेटों का काम नियम बनाकर और लिखकर बाजार में लगा देना था, जिसमें सबको पता लग जाय और किसी के साथ अन्याय न हो सके। अभी तक धनिक स्वयं नियम बनाया करते थे और साधारण जनों का जैसा चाहते थे, वैसा न्याय करते थे। सन् ४५१ ई० पू० तक (१० वर्ष तक) इस प्रस्ताव के लिये झगड़ा होता रहा और अंत को १० मजिस्ट्रेट नियत किए गए। जन-साधारण की स्वीकृति के लिये वे नियमों को प्रकाशित करते थे। दशक में से एपिअस क्लाडिअस नामक एक व्यक्ति धनिक श्रेणी का प्रतिनिधि था जो बड़ा अभिमानी और गरम मिजाज का था और सर्वदा सब से विचित्र ढंग से रहता था। वह विर्जिनियस की पुत्री को अपने नौकर के लिये रखना चाहता था। अंत को उसे एक ऐसा आदमी मिला जो कहता था कि विर्जिनिआ नाम की लड़की वास्तव में विर्जिनियस की लड़की नहीं है, बल्कि उसके किसी

दास की है। यह मामला अंत को एपिअस क्लाडियस के पास लाया गया और एपिअस ने फैसला किया कि विर्जिनिआ मेरे एक दास की कन्या है। कन्या का पिता एक सिपाही था। वह छावनी से रोम में आ गया और अपनी कन्या को अंतिम आशीर्वाद देने के लिये एक ओर ले गया। वह बाजार से अपने साथ कसाई का एक छुरा लेता आया था। लड़की की छाती में उसने वही छुरा भोंक दिया और साथ ही कहा— "पुत्री! तुम्हें स्वतंत्र करने का यही एक मार्ग बचा था।" इस घटना का समाचार सुनते ही साधारण जन एपिअस के विरुद्ध उठ खड़े हुए और उन्हों ने दशक को हटाकर प्रधान और ट्रिब्यून लोगों का फिर से चुनाव किया। अब साधारण जन नियम बनवा चुके थे, अतएव अधिक शक्तिशाली हो गए थे। दशक के पश्चात् अर्थात् सन् ४५० ई० पू० में वे वैसे शक्तिहीन न रह गए थे जैसे कि पहले थे।

सेनुसर्स कैसे बनाए गए

सन् ४५० से ३०० ई० पू० तक, जब यह दलबंदी का झगड़ा शांतिपूर्वक समाप्त हो गया, तब साधारण जनों ने इस बात का प्रयत्न किया कि धनिकों की भाँति हम लोगों में से भी कुछ लोग न्यायाधीश और शासक हों। ४५० ई० पू० तक साधारण जनों के लोग राष्ट्र में प्रबंधकर्त्ता नहीं थे और न उन्हें राज्य का कोई पद प्राप्त था। परंतु ३०० ई० पू० के बाद उनके आदमी भी राज्य में पदाधिकारी होने लगे थे।

राज्य में जिस पद के लिये वे प्रयत्न करते थे, उस पद पर वे ही चुने जाते थे। इसके सिवा और कई अधिकार वे प्राप्त कर चुके थे जो धनियों को प्राप्त न थे। जो मुख्य अधिकार उन्होंने अपने हाथ में लिया था, वह प्रधानत्व का था। धनिक लोग इसको रोकने के लिये जी जान से लड़े; पर जब वे देर तक न ठहर सके, तब उन्होंने नए राज्याधिकारी बनाकर प्रधानों की शक्ति कम कर दी तथा वह नया अधिकार अपने ही हाथ में रखा। सब से पहले उन्होंने ४४२ ई० पू० में सेंसर्स (Censors) बनाए, जिनका काम ५ वर्ष तक राज्य को सँभालना और मनुष्यगणना करके सब नागरिकों की श्रेणी के अनुसार सूची प्रस्तुत करना था। सेंसर्स यदि चाहते तो ये श्रेणियाँ घटा बढ़ा भी सकते थे; अतः इस दृष्टि से वे लोग बहुत शक्तिशाली थे। आज कल भी मनुष्य-गणना की रीति प्रचलित है, पर पहले पहल यह रोमन राष्ट्र से ही युरोप में गई थी।

इन्हीं दिनों में रोम कई युद्धों में भी लगा हुआ था, और जन साधारण अच्छे सिपाही बनने के साथ ही साथ रोम में शक्ति प्राप्त कर रहे थे। शक्ति पाने के कई उपायों में से एक उपाय सभाओं द्वारा अपना संघटन करना भी था। जनसाधारण चाहते थे कि जो प्रस्ताव हम पास करते हैं, वह उसी प्रकार राष्ट्र के नियम हो जाने चाहिएँ, जिस प्रकार

जन साधारण की संघटन शक्ति

प्रधान और अंतरंग सभा के प्रस्ताव नियम हो जाते हैं। धनिकों को यह बात भी माननी पड़ी; परंतु वे सर्वदा इनके नियमों का पालन करने से इनकार करते थे, इसलिये झगड़ा बराबर जारी रहा।

अंत में सन् ३७६ ई० पू० में दो ट्रिब्यूनों ने, जिनका नाम केचस लिसिनिअस और ल्यूसिअस सैक्टियस था, विचार किया कि प्रधान का पद जन-साधारण के हाथ में आ जाय। उन्होंने एक साथ ही तीन नियम पास किए और कहा कि इनका पालन अभी से आरंभ हो जाय इन नियमों से दरिद्र और धनी दोनों ही को लाभ था, क्योंकि साधारण जनों में बहुत से धनी लोग हो गए थे, यद्यपि प्राचीन धनिक श्रेणी के लोग उनको घृणा की दृष्टि से देखते थे। इस-लिये धनी और दरिद्र सभी ने मिलकर कार्य्य करना आरंभ किया। वे नियम इस प्रकार थे—(१) गरीब लोगों को कर से मुक्त करने में सहायता देनी चाहिए। (२) जब गरीब लोग कर से मुक्त हो जायँ, तब वे उस राष्ट्रीय भूमि को सँभाल लें जो उन्हें दी गई था; और उसके किसी नियत भाग में धनी लोगों को हल चलाने या पशु चराने की आज्ञा दे दें। और (३) प्रधानों में जन साधारण का एक व्यक्ति अवश्य ही होना चाहिए। प्रस्तावक के नाम से इनका नाम लिसिनिअन नियम है। धनिकों ने दस वर्ष तक इनके विरुद्ध घोर युद्ध

लिसिनियस और सैक्टिअस का नियम

किया। परंतु लिमिनियस और सेक्स्टियस ट्रिब्यून प्रति वर्ष चुने जाते थे और अपनी शक्ति का सब से बड़े ट्रिब्यून के समान प्रयोग करते थे। उन्होंने रोम में यह घोषणा कर दी कि जो प्रधान तथा रोमन मजिस्ट्रेट का नियम भंग करेगा, उसकी रक्षा हम करेंगे। इसका परिणाम यह हुआ कि प्रधान तथा मजिस्ट्रेट का पद व्यर्थ हो गया। इस प्रकार उन्होंने प्रधान तथा मजिस्ट्रेट का पाँच वर्ष के लिये होनेवाला चुनाव बंद कर दिया। अंत को धनिकों ने हार मान ली और सन् ३६६ ई० पू० में पहले पहल जनसाधारण का व्यक्ति प्रधान चुना गया।

पैट्रिशियन और प्लीबियन के युद्ध की समाप्ति

सन् ३६६ ई० पू० में वस्तुत: जनसाधारण की विजय हुई। लिसिनियस के नियमों के पास होने के पीछे वे धनिकों से उनको स्वीकृत कराने के लिये लड़ते रहे। 'राष्ट्र की भूमि' विषयक नियम शीघ्र ही भुला दिया गया; क्योंकि जनसाधारण को अपने एक प्रधान को चुनवाने के लिये निरंतर प्रयत्न करना पड़ता था। इसके पश्चात् इन्होंने धनिकों को अपने साथ अन्य कार्यों में सम्मिलित होने के लिये बाध्य किया; और इस प्रकार सन् ३०० ई० पू० में धनिक तथा जनसाधारण दोनों को ही न्याय और शासन-विभाग में तुल्य अधिकार मिलने लगे। वास्तव में जनसाधारण ने धनिकों की अपेक्षा अधिक अधिकार ले लिए थे, क्योंकि उनका ट्रिब्यून केवल उनके लिये

था और धनिकों का मजिस्ट्रेट केवल उनके लिये ही नहीं होता था। नियम यह था कि दो प्रधानों में से एक साधारण जन अवश्य होना चाहिए। परंतु यदि सम्मति दोनों के लिये आवे, तो दोनों ही साधारण जनों के हो सकते थे। इस से यह विदित होता है कि किस प्रकार धनिकों ने अपने प्रत्येक अधिकार की रक्षा के लिये पूरा प्रयत्न करके भी वास्तव में सब कुछ खो दिया। दोनों दलों का यह युद्ध बड़ा आश्चर्य-जनक है। दोनों दल एक ही शहर में रहते थे और गलियों में एक दूसरे के साथ मुकाबला किया करते थे। परंतु वहाँ लहू की एक बूँद भी न गिरी। अपने युद्धों में वे उन उपायों को काम में लाते थे जिनकी नियम आज्ञा देते थे; और जनसाधारण नियमों का पालन करते थे, चाहे वे उनके बदलने का यत्न भले ही करें। दोनों पक्षों ने बड़े जोर शोर से युद्ध किया; पर दोनों अपने को काबू में रखते थे। वे जल्दी नहीं करते थे, क्योंकि वे जानते थे कि अंत को बलवान् पक्ष ही जीतेगा। इँगलैंड के सिवा और कोई देश अपने झगड़ों का निपटारा करने में ऐसा बुद्धिमान् और धीर प्रमाणित नहीं हुआ।

३—इटली का अधिपति रोम

जब तक रोम में जनसाधारण तथा धनिकों का गृह-कलह रहा, तब तक रोम बहुत उच्च दशा को न प्राप्त हो सका। इतना होने पर भी रोम से इटलीवाले डरते थे। उसका कारण यह था कि रोम के साधारण लोग अपने नगर के लिये इस वीरता से लड़ते थे कि इटली की अन्य जातियों की उनके सामने कुछ भी बन न पड़ती थी। धनिकों का जनसाधारण को अधिकार दे देने का भी यही कारण था कि वह रोम के सच्चे वीर पुत्र थे तथा रोम को अपना समझते थे। रोम के युद्धों को समझने के लिये यह जान लेना अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है कि रोम चारों ओर से किन लोगों से घिरा हुआ था। आल्प्स पर्वत के दक्षिण में गाल लोग रहते थे। रोम के उत्तर में समुद्र के पश्चिमी किनारे पर एट्रस्कन जाति की बस्तियाँ थीं और दक्षिण तथा पूर्वी किनारों पर यूनान के बहुत से उपनिवेश थे जो पर्याप्त समृद्ध तथा सभ्य थे। सिसली के किनारे पर भी बहुत से यूनानी नगर थे। अवशिष्ट प्रदेश भिन्न भिन्न जातियों से बसा हुआ था जिनमें से लैटिन जनसमुदाय के साथ रोम एक था। इटैलियन जातियों के रीति रिवाज भिन्न भिन्न थे। उनमें से

इटली के निवासी

कई जातियाँ अत्यंत वीर थीं, जिनसे रोम को तथा उसकी मित्र जाति लैटिन को दिन रात भय लगा रहता था।

सन् ४९४ ई० पू० में रोम के प्रधान स्प्यूरियस कासियस ने लैटिन तथा हर्निकों के साथ मित्रता कर ली थी। ये तीनों साथी अपने शत्रुओं से अपनी रक्षा करने को उद्यत हुए। परंतु अभी तक रोम की शक्ति बहुत थोड़ी थी। सन् ४०५ ई० पू० में उसे एक ही समय में लड़ना पड़ गया। ये दोनों जातियाँ रोम के अत्यंत समीप रहती थीं। इनके संपूर्ण युद्धों का वृत्तांत हमें नहीं मिलता, पर फिर भी दो कथाएँ हम यहाँ देते हैं जिनसे उस समय की दशा पर बहुत कुछ प्रकाश पड़ सकता है।

रोम के आरंभिक युद्ध

केअस मार्सियस के वृत्तांत से पता चलता है कि गृह-कलह से रोम किस प्रकार शक्तिहीन हो रहा था। साथ ही यह भी प्रकट होगा कि रोमन लोग किस प्रकार अपने माता पिता की आज्ञा पर चलते थे। केअस मार्सियस धनिक श्रेणी में से था। एक बार यह वीर योद्धा रोमन सेना के साथ वाल्सियन लोगों के नगर कोरिओलाई का घेरा डाले हुए था। वाल्सियन लोग नगर से बाहर लड़ने आए, परंतु उन्हें हारकर नगर में भाग जाना पड़ा। केअस मार्सियस उनका पीछा करता करता उनके शहर में चला गया। वह अकेला था, अतः अपने शत्रुओं के बीच में घिर गया। परंतु वह वीरता से वहीं पर लड़ने

केअस मार्सियस कोरिओलेनस

लगा और उसने लड़ते लड़ते नगर का मुख्य द्वार जा खोला। इस प्रकार रोमन सेना नगर में आ घुसी और नगर जीत लिया गया। इस कारण केअस मार्सियस को कोरिओलेनस का पद दिया गया जिसका अभिप्राय है—'वह मनुष्य जिसने कोरिआली नगर में वीरता दिखाई है।'

इस युद्ध के कुछ काल के अनंतर ही रोम में बड़ा भारी दुर्भिक्ष पड़ा। जब गेहूँ सिसली से मँगाया गया, तब रोम की अंतरंग सभा ने इसे साधारण जनों में बेचना उचित समझा। परंतु केअस मार्सियस ने कहा—जब तक ये लोग धनिक श्रेणी की आज्ञा का पालन न करें, तब तक इन लोगों को अनाज मत दो। यह बात सुनकर साधारण जनों में बहुत हो क्षोभ फैला; अतः ट्रिब्यून ने केअस मार्सियस पर मुकदमा चलाया। केअस स्वयं अपने को अपराधी समझता था; अतः डरकर वाल्सियन जाति के राजा के पास चला गया और कहने लगा कि मैं रोम के विरुद्ध तुम्हें सहायता दूँगा। राजा ने उसे एक बड़ी भारी सेना दी। वह सेना के साथ रोम के विरुद्ध लड़ाई के लिये चल पड़ा। रोमवाले यह सुनकर डर गए और उन्होंने शांति के लिये प्रार्थना की, पर इसने न माना। अतः अंतरंग सभा के वृद्ध सभ्यों को भेजा गया। उनकी भी इसने एक न सुनी। पुरोहितों को भेजा गया; पर वे भी निराश होकर लौट आए। स्यात् वह अपनी स्त्री तथा माता का कहना मान ले, यह विचारकर उन दोनों को भेजा गया।

उसकी माता रोम की बहुत सी स्त्रियों के साथ उसके पास गई। केश्रस माता को देखते ही उसके पैरों पर सिर रखने के लिये आया; परंतु माता दूर हट गई और बोली—"पहिले तू यह बता कि तू मेरा शत्रु है या पुत्र।" यह कहकर उसकी माता और उसकी स्त्री आदि सबकी सब स्त्रियाँ उसके पैरों पर गिर गईं। इस पर उसने रोम पर आक्रमण न करना मंजूर कर लिया और रोकर कहा—"माता! यह तुम्हारी तो आनंद-पूर्ण विजय हुई, पर मेरा सत्तानाश हो गया"।

एक और कथा रोमन लोग एकियन युद्ध के विषय में सुनाते हैं जिससे स्पष्ट हो जाता है कि उन लोगों का कितना सादा जीवन था और किस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति राष्ट्र की सेवा करना अपना कर्तव्य समझता था। उस समय रोम का प्रधान मिनसियस था जो एकियन जाति से लड़ रहा था। परंतु इस जाति ने बड़ी चतुरता से समस्त रोमन सेना को उसके प्रधान सहित एक घाटी में बंद कर दिया तथा घाटी के दोनों मुखों पर अपनी सेनाएँ खड़ी कर दीं। जब यह भयानक समाचार रोम में पहुँचा, तब अंतरंग सभा ने कहा कि केवल एक ही व्यक्ति रोम में है जो इस समय राष्ट्र को बचा सकता है, और वह है सिन्सिनाटस। अतः सिन्सिनाटस के पास दूत दौड़ाए गए। सिन्सिनाटस अपने खेत में हल जोत रहा था। अभी वह वस्त्र भी न पहनने पाया था कि रोम के राजदूत

लूसियस क्विन्टियस सिन्सिनाटस

उसे जा मिले। उसने अपनी स्त्री से वस्त्र आदि मँगाकर पहने तथा राजदूतों के साथ शीघ्र ही रोम जा पहुँचा। अंतरंग सभा ने उसे छः मास के लिये एक राजा के पूरे अधिकार दे दिए। उसने रोम में आज्ञा प्रचारित की कि प्रत्येक व्यक्ति, जो शस्त्र धारण करने के योग्य हो, तुरंत युद्ध के लिये प्रस्तुत हो जाय तथा अपने साथ भोजन और १२ बड़ी बड़ी लकड़ियाँ ले ले। सिन्सिनाटस रातों रात शत्रु पर जा पड़ा। उसकी सेना ने बड़ा भारी शोर मचाया जिससे घाटी के अंदर की रोमन सेना को समाचार मिल जाय कि रोम की सेना उसे छुड़ाने के लिये आ गई है। रातो रात रोमन सेना ने एक्कियन के चारों ओर एक खाई खोद डाली तथा उसमें प्रत्येक सैनिक ने अपने बारह बारह लट्ठे लगाकर एक बड़ा भारी जँगला तैयार कर दिया एक्कियन सेना ने प्रातःकाल अपने को कैद पाया, अतः उसने हथियार डाल दिए। सिन्सिनाटस समस्त रोमन सेना के साथ नगर में आया। उसने अपना राजा होने का अधिकार त्याग दिया और अपने घर पर खेती करने चला गया।

एक्कियन तथा वाल्स्कियन के युद्धों से रोम को कष्ट अवश्य पहुँचा, परंतु इन युद्धों को हम भारी युद्ध नहीं कह सकते।

एट्रस्कन के साथ युद्ध

पर आगे चलकर रोम को जो युद्ध करने पड़े, वे कई प्रबल जातियों के साथ थे। एट्रस्कन बहुत सभ्य थे। इनके बनाए हुए मकान देखने योग्य होते थे। व्यापार में भी वे बहुत कुशल थे। कार्थेजियन तथा एट्र-

स्कन के हाथ ही में बहुत समय तक मध्य सागर का व्यापार था। यूनानी लोग भी व्यापार करना चाहते थे, परंतु यह दोनों ही उन्हें ऐसा करने से रोकते थे; अतः ४७४ ई० पू० में यूनान के साथ इनका एक भयानक समुद्री युद्ध हुआ जिसमें ये बड़ी बुरी तरह से हारे। जब रोमवालों ने यह देखा, तब उन्होंने भी एट्रस्कन पर आक्रमण करना प्रारंभ किया। उनका पहला आक्रमण अपने समीप के नगर वी पर हुआ। दस वर्ष तक वी नगर का घेरा चला परंतु उन्होंने हार न मानी। अंत में मार्सस कूरियस कैमिलियस नामक सेना-पति ने नगर को जीता। इसने विजय के अनंतर ही एट्रस्कन के अन्य नगरों पर आक्रमण किया और उन्हें जीतता चला गया। इस प्रकार इन विजयों से रोम की सीमा सिमिनियन पर्वत-माला तक जा पहुँची। कैमिलियस बड़ा योग्य तथा धर्मात्मा मनुष्य था। एक बार वह कैलिरी नामक नगर पर घेरा डाले पड़ा था। एक दिन की घटना है कि उसी नगर का एक मुख्याध्यापक अपने साथ बहुत से बालकों को लिए हुए इसके पास आ पहुँचा। ये बालक कैलिरी नगर के बड़े बड़े सरदारों के थे। मुख्याध्यापक ने कैमिलियस से कहा कि इन बालकों को आप कैद कर लीजिए तो नगर आपके हाथ में शीघ्र ही आ जायगा। इस पर कैमिलियस ने मुख्या-ध्यापक के हाथों में हथकड़ी डालकर विद्यार्थियों को कोड़े दे दिए तथा उनसे कहा कि इस अध्यापक को कोड़ों से पीटते

हुए अपने नगर में ले जाओ और सबको इसका कमीनापन बता दो। जब नगरवालों ने यह देखा, तब वे कैमिलियस के धर्मात्मापन पर चकित हुए और उन्होंने बड़ी प्रसन्नता से ऐसे मनुष्य की अधीनता स्वीकृत कर ली।

थोड़े दिनों के बाद रोमवालों की एक बड़ी भारी पराजय हुई। गाल भी एट्रस्कन को उत्तर की ओर से विजय कर रहे थे।

रोमनों का गालों द्वारा पराजय

रोमवाले दक्षिण की ओर से एट्रस्कनों पर टूट पड़े थे। रोम ने उत्तर के एट्रस्कनों को गाल लोगों के विरुद्ध सहायता दी। इसका परिणाम यह हुआ कि गाल एट्रस्कन का पीछा छोड़कर रोमवालों पर ही टूट पड़े। वे रोमवालों को एलिया नदी पर बुरी तरह हराकर रोम नगर को मटियामेट करने के लिये ससैन्य आगे बढ़े।

गाल लोगों के साथ रोमवाले एलिया नदी पर हारे, यह अभी बतलाया जा चुका है। इस युद्ध में इतने रोमन मारे गए

रोम पर गालों का अधिकार

थे कि नगर की रक्षा करना उनके लिये कठिन हो गया था। इसलिये नगर के लोग इधर उधर भाग गए। पर कुछ वीर सैनिकों ने ऐसा न किया। वे किले के अंदर चले गए और किले का द्वार बंद करके उसी में से युद्ध करने की तरकीब सोचने लगे। धनिक श्रेणी के कुछ वृद्ध लोगों ने रोम नगर न छोड़ा तथा अंतरंग सभा-भवन में सज धजकर जा बैठे।

गाल रोम नगर में प्रविष्ट हुए। नगर को उन्होंने शून्य पाया। नगर में इधर उधर घूमते हुए वे अंतरंग सभा-भवन में पहुँचे। वहाँ उन्होंने बहुत से वृद्धों को बैठे हुए देखा। एक गाल ने उनमें से एक वृद्ध रोमन की दाढ़ी पकड़कर उठाया। इस पर वह वृद्ध गुस्से में कुछ बोला। इसका परिणाम यह हुआ कि गाल उन बुड्ढों पर जा टूटे तथा उनको मारकर उन्होंने नगर में आग लगा दी। इसके उपरांत गाल लोग रोम नगर का दुर्ग जीतने के लिये आगे बढ़े। परंतु दुर्ग तक पहुँचना कठिन था; क्योंकि दुर्ग की पहाड़ी बिलकुल सीधी थी और उस पर चढ़ना प्राय: असंभव था। कुछ समय तक अन्वेषण कर अंत में गाल लोगों ने मार्ग बना लिया और रातो रात दुर्ग पर जा पहुँचे। दुर्ग पर उन्होंने चढ़ना प्रारंभ किया। परंतु अभी पहला ही मनुष्य दुर्ग के शिखर पर पहुँचा था कि दुर्ग के ऊपर की बत्तक ने शोर मचा दिया। मार्सस मैनलियस की निद्रा भंग हुई और वह ठीक मौके पर जा पहुँचा। उसने अपनी ढाल से ऊपर पहुँचनेवाले गाल निवासी को ऐसे ढंग से धक्का दिया कि वह अपने बीसियों साथियों को अपने साथ लुढ़काता हुआ नीचे पृथ्वी पर जा गिरा। अन्य रोमनों को समाचार मिल गया और वे भी दुर्ग की रक्षा के लिये उसी स्थान पर आ पहुँचे। इस प्रकार दुर्ग बच गया। कुछ ही समय के उपरांत गाल

लोग लौटकर अपने देश को चले गए; और बहुत सा लूट का सामान अपने साथ लेते गए।

रोम के जलाए जाने से एक हानि यह हुई कि रोम का पिछला सारा इतिहास जल गया। बात यह थी कि उन दिनों पुरोहित लोग ही इतिहास लिखा करते थे और लिखकर मंदिर में ही रख देते थे। जब रोम में आग लगी, तब वे सब मंदिर जल गए। अतः इस समय से पूर्व का जो कुछ इतिहास लिखा गया है, उसकी सत्यता पर हम पूरा भरोसा नहीं कर सकते। इसके उपरांत जो इतिहास लिखा गया, उसे बहुत कुछ प्रामाणिक तथा सत्यता से पूर्ण समझना चाहिए।

रोम के जलाए जाने का प्रभाव

जब रोमन सेना लौटी, तब उसने नगर को बिलकुल उजाड़ और खँडहरों के रूप में पाया। अतः उनका विचार यह हुआ कि इस स्थान को छोड़कर वी नगर में बस जाना चाहिए। परंतु कैमिलियस ने रोम में ही बसना उचित समझा, अतः वह सब को रोम के पुनरुद्धार के लिये ले चला। इससे साधारण जनों को बहुत कष्ट हुआ। वे इतना अधिक व्यय न उठा सके और ऋणी होकर अमीरों की कैद में जाने लगे। मैनलियस को यह देखकर बहुत दुःख हुआ। उसने नगर में घोषणा करा दी कि जब तक मेरे पास धन है, तब तक मैं यह नहीं देख सकता कि किसी को ऋण के लिये कैद में जाना

मार्कस मैनलियस तथा साधारण जन

पड़े। साधारण जनों ने उसके इस कार्य से उसे प्रेम की दृष्टि से देखना आरंभ किया। इस पर धनिकों ने उस पर 'राजा' बनने का दोष मढ़कर उसे मरवा डाला। इससे साधारण जनों को यह शिक्षा मिली कि नियम ही बदलवाने चाहिएँ, व्यक्ति हमारी कब तक रक्षा कर सकते हैं!

गाल लोगों के इस भयानक आक्रमण से रोम को बहुत कष्ट उठाने पड़े। रोम के दुश्मन एकियन का तो गालों ने सत्तानाश ही सा कर दिया था। रोम ने इस पराजय से निम्नलिखित शिक्षाएँ ग्रहण कीं—

गालवालों के आक्रमण का प्रभाव

(१) रोम ने सेना में उन्नति करना आरंभ किया और युद्ध में अधिक सावधान होना सीखा।

(२) गाल लोग लेपो नदी के किनारे के आसपास के देशों को लूटते जाते थे और प्रति-वर्ष आगे ही आगे बढ़ रहे थे। परंतु रोम ने उनका मुकाबला करना बिलकुल छोड़ दिया।

(३) रोमवाले अवसर पाकर गाल लोगों को धीरे धीरे पीछे हटा देते थे। इसका परिणाम यह हुआ कि ३५० ई० पूर्व के बाद गाल लोगों का रोम को कोई भय न रहा।

गालों के साथ होनेवाले इन छोटे छोटे युद्धों ने रोम को पूरा क्षत्रिय बना दिया। उसकी शक्ति बढ़ गई। समीपवर्त्ती नगर रोम को अपना रक्षक समझने लगे, क्योंकि रोम ने गालों से उनकी रक्षा की थी।

गाल लोग रोम के दक्षिण के एकियन के नगर तथा कुछ यूनानी नगरों पर विजय न प्राप्त कर सके थे। सैमनाइट नामक एक दूसरी इटालियन जाति ने इन्हें जीतना आरंभ किया। सैमनाइटों ने केपुआ नगर के निवासियों को इतना कष्ट पहुँचाया कि उन्होंने रोमन लोगों की सहायता चाही। यह ३४३ ई० पू० की बात है। इसी समय से रोम का सैमनाइट जाति से युद्ध आरंभ हुआ जो पचास वर्षों तक चलता रहा और २९० ई० पू० में समाप्त हुआ। ये पचास वर्ष रोम के इतिहास में स्मरणीय हैं, क्योंकि इन्हीं दिनों में रोम संपूर्ण इटली में प्रबल हो गया। प्रथम सैमनाइट युद्ध बहुत दिनों तक न चला और शीघ्र ही समाप्त हो गया। इसका कारण यह था कि इसी बीच में रोम को अपनी मित्र जाति लैटिन से भय होने लग गया था।

सैमनाइट युद्धों का आरंभ

गाल लोगों के चले जाने पर लैटिन यह नहीं चाहते थे कि हम रोमन लोगों के साथ रहें। ३४० ई० पू० में उन्होंने रोमनों के पास यह सूचना भेजी कि तुम हमें अपने बराबर अधिकार दे दो। लैटिनों की यह इच्छा थी कि रोम हमारे दल का नेता न हो। जो कुछ वे चाहते थे, वह यह था कि रोम की अंतरंग सभा के सभासद दूने हो जायँ और दो रोमन प्रधानों के साथ साथ प्रति वर्ष दो लैटिन प्रधान भी चुने जाया करें। रोम ने यह न माना, अतः

लैटिन युद्ध

दोनों जातियों में भयानक युद्ध छिड़ गया। तीन वर्ष तक वह युद्ध चलता रहा। विसूवेयस पर्वत की अधित्यका में एक भयानक युद्ध हुआ। विजय देर तक संदिग्ध रही। यह किंवदंती थी कि जिस पक्ष का सेनापति लड़ते लड़ते अपनी जान दे देगा, वही पक्ष विजयी होगा। इस पर पलियस डेसियसमस नामक रोमन सेनापति शत्रुओं के बीच में कूद पड़ा और वीरता से लड़ता हुआ मारा गया। धीरे धीरे रोम की विजय हो गई।

रोमन लोग कितने न्यायपरायण तथा नियम-पालक थे, यह नीचे की घटना से स्पष्ट हो जाता है। मैनलियस रोम का प्रधान था। उसने आज्ञा निकाली थी कि कोई रोमन शत्रु-दल के किसी व्यक्ति से द्वन्द्व युद्ध न करे। दैवी घटना से उसका पुत्र ही इस अपराध में पकड़ा गया। मैनलियस ने उसका सिर काटने की आज्ञा दे दी और स्वयं भी उसके घात के समय उपस्थित हुआ। इस घटना से समस्त रोम में आतंक छा गया। परंतु रोमन कर ही क्या सकते थे, क्योंकि मैनलियस नियम पर दृढ़ था।

मैनलियस का न्याय

रोम ने लैटिनों के सब नगर जीत लिए। उन सब पर इसने अपनी प्रधानता प्रकट की। रोम ने लैटिनों को जीता, परंतु उनके साथ कठोर व्यवहार न किया। इसका कारण यह था कि रोमन तथा लैटिन बहुत समय से भाई भाई की तरह रहते थे। साथ ही बीसियों बार वे मिलकर शत्रु के साथ लड़े

रोम द्वारा लैटिन का शासन

थे। रोमन लोगों ने लैटिनों से ऐसा व्यवहार किया जिससे भविष्य में वे रोम के विरुद्ध फिर कभी शस्त्र न ग्रहण करें। रोम ने लैटिन नगरों का पारस्परिक व्यापार बंद करके सबको अपने साथ व्यापार करने की आज्ञा दी; और यह आशा दिलाई कि यदि वे विश्वासपात्र रहे, तो उन्हें भी रोमन नागरिकों के अधिकार दे दिए जायँगे। इसका परिणाम यह हुआ कि लैटिन अपनी पराजय भूल गए और रोम द्वारा शासित होने में ही अभिमान प्रकट करने लगे। रोम ने इस समय यह समझ लिया था कि विजित जातियों को किस प्रकार वश में किया जा सकता है। यह स्मरण रखना चाहिए कि रोम भविष्य में सब युद्धों में दो तरीके काम में लावेगा। एक तो विजित नगरों को एक दूसरे से पृथक् कर देगा; दूसरे उन्हें यह आशा दिलावेगा कि यदि वे विश्वासपात्र रहे तो उन्हें बहुत कुछ स्वतंत्रता दे दी जायगी और शासन में भी उन्हें कुछ अधिकार मिल जायगा।

रोम ने यह अच्छा किया कि लैटिनों को संतुष्ट कर दिया, क्योंकि रोम को ३२७ ई० पू० में पुनः दूसरी बार सैमनाइट जाति से युद्ध करना पड़ा जो पूरे २२ वर्ष तक चलकर ३०५ ई० पू० में समाप्त हुआ।

द्वितीय सैमनाइट युद्ध

दोनों जातियाँ बहुत भयानक रूप से लड़ीं; क्योंकि इटली में प्रधानता का निर्णय इन युद्धों से ही करना था। सैमनाइटों का केअस पांटियस नामक एक योग्य सेनापति था। इसने एक बार तो सारी रोमन सेना को नष्ट ही कर दिया था। इसने

क्या किया कि अपनी सेना को भगा दिया। रोमनों ने एक छोटे मार्ग से उसका पीछा किया। परिणाम यह हुआ कि रोमन सेना अपनी गलती से एक घाटी में कैद हो गई और उसने हथियार डाल दिए। पांटियस ने उन्हें इस शर्त पर छोड़ दिया कि आगे वे युद्ध न करेंगे। परंतु रोमनों ने इस संधि को न माना और कहा कि अंतरंग सभा के बिना किसी को संधि करने का अधिकार ही नहीं है। अत: रोमन प्रधान को रोमनों ने कैदी के तौर पर पांटियस के पास भेज दिया। पांटियस ने कहा कि प्रधान सहित सारी सेना को उसी प्रकार कैदी के रूप में मेरे सपुर्द कर दो। परंतु रोमनों ने न माना। इस पर पांटियस ने रोमन प्रधान को छोड़ दिया। युद्ध पुन: आरंभ हो गया। इस स्थान पर रोमनों ने न्याय का अतिक्रमण किया, यह स्पष्ट ही है। इस युद्ध में एट्रस्कन भी रोम की शक्ति से डरकर सैमनाइटों से मिल गए। परंतु ३०४ ई० पू० में दोनों ही पराजित हुए तथा सैमनाइट सेना को अपने हथियार रख देने पड़े।

शांति देर तक न रही। ३०० ई० पू० में सैमनाइटों से रोम का तीसरा युद्ध हुआ। इटली की सभी जातियाँ रोम को कुचलने के लिये सैमनाइटों से आ मिलीं। २९५ ई० पू० में सैंटिअस नामक स्थान पर एक भयानक युद्ध हुआ जिसमें रोम ने सबको पराजित किया। दो वर्ष बाद वीर केअस पांटिअस रोम में कैद होकर

तृतीय सैमनाइट युद्ध

आया और वह राज्य की ओर से मरवा डाला गया। रोमन अपने शत्रुओं के साथ बड़ी निर्दयता का व्यवहार करते थे। यही कारण था कि विजित नगर उनके विरुद्ध बहुत कम उठे।

तृतीय सैमनाइट युद्ध से रोम इटली का शासक हो गया। परंतु इटली के दक्षिण में बसे हुए कुछ यूनानी नगर रोम के विरुद्ध शस्त्र उठाने को तैयार थे। ये नगर शक्तिशाली तथा समृद्ध थे। टैरंटिअस नगर के निवासी रोमनों से ईर्ष्या करते थे। एक बार कुछ रोमन जहाज टैरंटिअस के बंदरगाह के समीप से गुजरे। इन्होंने क्रोध में आकर उन जहाजों को डुबा दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि २८२ ई० पू० में युद्ध आरंभ हो गया।

यूनानी नगरों के साथ युद्ध

टैरंटिअस निवासी रोम से लड़ने में असमर्थ थे; अतः उन्होंने एपिरस के राजा पाइर्‌हस से सहायता मांगी। पाइ-र्‌हस ने स्वीकार कर लिया; क्योंकि वह अपनी शक्ति बढ़ाने का बड़ा इच्छुक था। वह एक बड़ी सेना के साथ इटली में आ गया। सिरिस नदी के किनारे हेराक्लिया नगर में रोमन सेना पाइर्‌हस से हार गई। इसका कारण यह था कि रोमन अश्वारोही सेना यूनानी अश्वा-रोहियों से दुर्बल थी। रोमनों के घोड़े यूनानी सेना के हाथियों को देखकर घबरा गए थे। यद्यपि पाइर्‌हस जीता, परंतु

पाइर्‌हस के साथ युद्ध

उसके इतने घोड़े तथा आदमी मर गए थे कि उसने स्वयं ये शब्द कहे—"यदि कुछ और ऐसी विजय हों तो मेरा तो सर्वस्व ही नष्ट हो जाय।" अत: उसने रोम से सन्धि करना चाहा। संधि के लिये संसार-प्रसिद्ध बुद्धिमान् सिनिआस को रोम की अंतरंग सभा में भेजा गया। सिनिआस ने इस तरह बातें कीं कि रोमन अंतरंग सभा संधि के लिये तैयार ही हो गई थी। पर एक वृद्ध अंधे रोमन ने (जो पहले रोम का प्रधान भी रह चुका था) उठकर कहा कि जब तक पाइर्‌हस इटली में है, तब तक संधि कभी मत करो। सिनिआस लौटकर राजा के पास आया और कहने लगा—"रोम से लड़ना व्यर्थ है; क्योंकि वहाँ की अंतरंग सभा तो राजाओं की सभा है।" दूसरे वर्ष पाइर्‌हस ने पुन: रोमन सेना को हराया और स्वयं सिसली की ओर चला गया। वहाँ दो वर्ष तक लड़ने के बाद जब लौटकर आया, तब उसकी सेना बहुत कमजोर हो गई थी। २७५ ई० पू० के युद्ध वैनिवैंटम नामक स्थान पर वह हारकर अपने देश को चला गया। वहाँ अर्गस के दुर्ग के घेरे के समय एक स्त्री ने उसके सिर पर ऐसा पत्थर मारा कि वह मर गया।

पाइर्‌हस के यूनान चले जाने पर रोम ने संपूर्ण इटली को विजय कर लिया। रोम के नागरिक भिन्न भिन्न विजित नगरों का शासन करने के लिये चुने जाते थे और वहीं पर जाकर शासन करते थे। रोमन नागरिकों से कुछ कम लैटिनों के अधिकार

रोम द्वारा इटली का शासन

थे। परंतु उन्हें यह आशा थी कि समय पर हमें भी पूर्ण अधिकार मिल जायँगे। लैटिनों के अनंतर इटैलियन नगरों के अधिकार थे। परंतु उन्हें रोम की आज्ञा माननी पड़ती थी; तथा समय पर रोम की सेना में काम करना पड़ता था। रोम ने दो विधियों से इटली को अपने अधीन कर लिया था जो ये थीं—(१) रोमन उपनिवेश और (२) रोमन सड़कें।

रोमन उपनिवेश

इटली में जहाँ जहाँ रोम ने जीता, वहाँ वहाँ की कुछ भूमि लेकर अपने कुछ नागरिकों को दे दी तथा उन्हें वहाँ बसने की आज्ञा दे दी। इस प्रकार संपूर्ण इटली में स्थान स्थान पर रोमन उपनिवेश बस गए। इन उपनिवेशों के रोमन लोग अपनी मातृभूमि को कभी न भूलते थे तथा रोम के लिये सदा अपने प्राण देने के लिये सन्नद्ध रहते थे। इन्होंने रोम के राज्य को स्थिर रखने में बड़ी सहायता की। साथ ही इटली में रोमन सभ्यता फैलाने में भी इनका बड़ा हाथ समझना चाहिए। इस प्रकार इन उपनिवेशों के द्वारा इटैलियन रोमन रीति रिवाजों से परिचित हो गए तथा स्वयं भी उसी सभ्यता को ग्रहण करने का यत्न करने लगे।

रोमनों ने बहुत बड़ी बड़ी सड़कें बनाई थीं। उनकी बनाई हुई सड़कें ऐसी अच्छी और मजबूत होती थीं कि बहुत सी सड़कें अब तक चली आती हैं। इन सड़कों

का केंद्र रोम था। वहीं से इटली के भिन्न भिन्न प्रांतों को सड़कें जाती थीं। इनके द्वारा रोम अपनी सेना दूर दूर के स्थानों में बहुत शीघ्रता से भेज सकता था। समस्त इटली को बहुत समय तक वश में रखने का एक कारण इन सड़कों को भी समझना चाहिए।

रोमन सड़कें

रोम इटली का शासन किस प्रकार अपनी सड़कों तथा उपनिवेशों द्वारा किया करता था, यह दिखाया जा चुका है। सैमनाइट तथा पाइर्‌हस के युद्धों के समय रोम अपनी पूरी उन्नति तथा शक्ति पर न था; क्योंकि रोमन धन की दृष्टि से अभी तक समृद्ध न थे, अतः उन्हें बहुत परिश्रम करना पड़ता था। बहुत सी ऐसी कथाएँ प्रचलित हैं जिनसे उस काल के रोमनों की सादगी का पता चलता है। रोम के सेनापति तथा राजनीतिज्ञ एक साधारण नागरिक की तरह रहा करते थे। उनको यदि कोई उपहार भेजता तो वे उसे नहीं लेते थे। एक बार की घटना है कि सैमनाइटों ने मैनियस कूरियस नामक एक रोमन सेनापति को बहुत सा सुवर्ण उपहार में भेजा। जिस समय सैमनाइटों के दूत उसके पास यह सब लेकर पहुँचे, उस समय वह खेती का काम कर रहा था। थोड़ी ही देर के बाद वहीं पर उसने शलगम पकाए और काठ के बरतनों में उन दूतों

प्राचीन रोमनों का स्वभाव

को भी खाने को दिया। भोजन आदि के अनन्तर उन दूतों ने मैनियस कूरियस को सुवर्ण देने का यत्न किया, परंतु उसने न लिया और कहा—'हमारे लिये उत्तम है कि हम स्वयं सुवर्ण न रखें, बल्कि उन पर राज्य करें जिनके पास सुवर्ण है'। परंतु अब वह समय आ ही रहा था जिसमें रोमन भी धनलोलुप हो गए। उनका प्राचीन सादा जीवन सदा के लिये उनको छोड़कर चला गया।

४—रोम का कार्थेज के साथ युद्ध

पाइर्‌हस के लौट जाने के ग्यारह वर्ष पश्चात् रोम को एक दूसरे देश से युद्ध करना पड़ा जिसका नाम कार्थेज था।

कार्थेज एक नगर था जो अफ्रिका के उत्तरी किनारे पर बसा हुआ था और सिसली के बहुत समीप था। कार्थेज उस फिनीशियन जाति का एक उपनिवेश था जो उस समय के संसार में अपने व्यापार के लिये प्रसिद्ध थी। इसके जहाज फ्रांस तथा इँगलैंड तक जाया करते थे।

कार्थेज का आरंभ

रोम से सौ वर्ष पूर्व कार्थेज की नींव डाली गई थी। परंतु वह थोड़े ही समय में रोम की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली हो गया; क्योंकि व्यापार से उसके पास बहुत सा धन आ गया था। कार्थेज के शासक वहाँ की धनिक श्रेणी के लोग थे जिनके हाथ में कार्थेज के व्यापार की बागडोर थी। अफ्रिका के किनारे पर बसे हुए बहुत से देशों को कार्थेजवालों ने जीत लिया था; परंतु उनके साथ वे वैसा अच्छा सलूक न करते थे जैसा रोमवाले इटलीवालों के साथ करते थे।

इन बातों का प्रभाव इस युद्ध में स्पष्ट रूप से दिखाई देगा; क्योंकि युद्ध में हार जीत का कारण बहुत कुछ यह भी था।

रोमन और कार्थेजियन पहले पहल आपस में सिसली में मिले। साइसल लोग, जिनके कारण ही द्वीप का नाम भी सिसली पड़ा था, इटैलियन जाति के थे और प्राचीन काल के लैटिनों से बहुत कुछ मिलते थे; क्योंकि ग्रीक लोगों ने ७३५ ई० पू० में सिसली को अपना उपनिवेश बना लिया था। अत: साइसल लोगों ने ग्रीक लोगों का रीति रिवाज ग्रहण कर लिया और वैसे ही रहने लगे जैसे ग्रीक लोग रहते थे।

सिसली में कार्थेजियन

ये ग्रीक लोग भी वैसे ही बड़े व्यापारी थे जैसे कार्थेजियन लोग थे। अत: स्वाभाविक ही था कि ये दोनों आपस में लड़ते रहते। कार्थेजियन सिसली से ग्रीक-निवासियों को निकाल बाहर करना चाहते थे। पर ग्रीक लोग भला कब निकलना स्वीकार करने लगे थे! अत: दोनों में घमासान युद्ध होते रहते थे। जिस समय रोम इटली में लड़ रहा था, उस समय सिराक्यूज के राजाओं तथा कार्थेज के बीच लगातार लड़ाइयाँ हो रही थीं।

कार्थेज और रोम के बीच जो पहला युद्ध हुआ, उसे प्रथम प्यूनिक युद्ध कहते हैं। इस युद्ध का कारण यह था कि कुछ इटालियन लोग सिसली के मसाना नामक नगर में, जो इटली के बहुत पास था, उतरे। परंतु कार्थेजियन तथा ग्रीक दोनों ही इनको आने से रोका करते थे। इस पर इन्होंने रोम से

प्रथम प्यूनिक युद्ध

सहायता माँगी। रोम ने स्वीकार कर लिया और तुरंत अपनी सेना भेज दी। इस पर दोनों में युद्ध आरंभ हो गया जो २३ वर्षों तक (२६४-२४१ ई० पू०) चलता रहा।

जहाँ रोम के पास एक भी जहाज न था, वहाँ कार्थेजियन लोगों के पास बड़े बड़े युद्ध करनेवाले जहाजों के बेड़े थे। परंतु रोम की सेना में इटालियन लोग थे जो युद्ध को अपना ही कार्य समझकर जी तोड़कर लड़ते थे। दूसरी ओर कार्थेजियन सेना में सेनापति तो कार्थेजियन था, परंतु बाकी सेना तनखाह लेनेवाले सिपाहियों की थी जिनको अपनी तनखाह की फिक्र थी, न कि देश के लाभ या हानि की; और यही कारण था कि ये सिपाही दिल से नहीं लड़ते थे।

युद्ध के आरंभ में ही रोमन लोगों ने कार्थेजवालों को सिसली से निकाल दिया तथा सिसली के राजा सिराक्यूज को

रोम की सामुद्रिक सेना की वृद्धि

इस बात के लिये बाध्य किया कि वह कार्थेज के स्थान पर भावी युद्ध में रोम का पक्ष ले। परंतु कार्थेजवालों ने रोम के तट को इतना नुकसान पहुँचाया कि उन्हें अंत में यह समझना पड़ा कि जब तक हम जहाज न बना लें, तब तक कार्थेज का कुछ भी नहीं कर सकते। दैवात् कार्थेज का एक जहाज रोम के तट पर टूट गया। बस, फिर क्या था! रोमनों ने उसे सामने रखकर उसके जैसे जहाज बनाने आरंभ कर दिए। इसी बीच में उन्होंने डाँड़ चलाना भी सीख लिया। प्राचीन काल में

जहाज मनुष्यों द्वारा डाँड़ों से चलाए जाते थे। उन दिनों में डाँड़ चलाना विशेष समय लगाकर सीखना पड़ता था। इस प्रकार २६० ई० पू० में एक रोमन जहाजी बेड़ा समुद्र में डाला गया। परन्तु रोमन लोग जानते थे कि हम बिना समीप के युद्ध के किसी से जीत नहीं सकते; अतः उन्होंने अपने जहाजों में इस प्रकार का एक पुल रखा जिसे वे कार्थेजियन लोगों के जहाज के समीप जाते ही फेंक देते थे। पुल में कीलें लगी होती थीं जो पुल के गिरते ही कार्थेजियन लोगों के जहाज में गड़ जाती थीं। इस प्रकार रोमन लोगों के जहाज शत्रु के जहाज से बिलकुल मिल जाते थे और रोमन लोग कार्थेजियन लोगों के जहाजों पर जा उतरते थे और बलवान् होने के कारण उन्हें पराजित कर देते थे। यद्यपि रोमन लोग सामुद्रिक युद्ध में चतुर न थे, तथापि उन्होंने अगले चार वर्षों में इस रीति से दो बड़े बड़े युद्धों में कार्थेजियन लोगों को हराया।

इससे प्रोत्साहित होकर रेग्युलस नामक एक रोमन प्रधान अफ्रिका में सेना सहित जा उतरा और देश को जी खोलकर लूटने लगा। कार्थेजियन लोग इस बात से बेहद डर गए और उन्होंने संधि की प्रार्थना की। परंतु रेग्युलस कब संधि करने लगा था! उसे तो उनकी अधीनता अभीष्ट थी।

अफ्रीका में रेग्युलस
२५६ ई० पू०

इसके अनंतर कार्थेजवालों ने एक बड़ी भारी सेना इकट्ठी की और रोमन लोगों पर जा पड़े। उस युद्ध में रेग्युलस कैद

हो गया। २५० ई० पू० में रोमन लोगों ने एक युद्ध जीता जिसमें उन्होंने बहुत से श्रेष्ठ लोगों को कैद कर लिया।

कार्थेजवालों ने यह देखकर रेग्युलस को इसलिये रोम भेजा कि वह कार्थेजियन श्रेष्ठियों को अपने बदले रोमन लोगों की कैद से छुड़ा दे; और यदि यह बात स्वीकार न की जाय तो पुनः वह कार्थेज के कैदखाने में लौट आवे। रेग्युलस ने इस बदले को स्वदेश के लिये हानिकारक समझा; अतः उसने जाते ही रोम की अंतरंग सभा को ऐसा करने से मना कर दिया तथा आप पुनः कार्थेज के कैदखाने में आ गया और वहीं मर गया।

२४१ ई० पू० तक दोनों ओर से युद्ध चलता रहा। अंत में रोमन लोगों ने समुद्र पर एक बड़ी भारी विजय पाई।

प्रथम प्यूनिक युद्ध का अंत

कार्थेजवाले एक तो युद्ध से थक चुके थे, अतः वे अब शांति चाह रहे थे। दूसरे उनमें एक महात्मा उत्पन्न हो गया था जिसका नाम हैमिल्कार था। उसकी सम्मति थी कि कार्थेजवालों को कुछ समय तक युद्ध बंद रखना चाहिए जिससे वह वहाँ के सिपाहियों को सुशिक्षित कर सके। इसलिये कार्थेजवालों ने युद्ध बंद कर दिया तथा रोम को बहुत सा रुपया दिया और सिसली भी उन्हीं को सौंप दिया।

यद्यपि दोनों ओर से शांति हो गई थी, परंतु इससे यह कोई नहीं समझता था कि यह शांति वास्तविक शांति है। दोनों ही भावी युद्धों के लिये अपने आप को तैयार करना चाहते थे।

यह पहला अवसर था जब कि रोम का आधिपत्य इटली के बाहर भी स्वीकृत हुआ। रोम ने सिसली को इटलीनिवासी तथा लैटिन जाति के से अधिकार न दिए, बल्कि उसे अपना एक प्रांत बनाया। प्रांत का अर्थ यह था कि वह रोम का मित्र राज्य नहीं है, किंतु उसका अधीन राज्य है। थोड़े समय के पश्चात् सार्डीनिया तथा कार्सिका को भी कार्थेजवालों से उसने ले लिया तथा उनको भी अपना प्रांत बना लिया। इन प्रांतों के प्रबंध के लिये रोम से एक शासक प्रति वर्ष भेजा जाता था जो उस प्रांत का प्रबंध करता तथा उस प्रांत से रोम के लिये कर ग्रहण करता था।

रोम का प्रथम प्रांत

अब पाठकों पर यह स्पष्ट हो गया होगा कि रोम अपने अधीनस्थ राज्यों को भिन्न भिन्न रीतियों से शासित करता था। अर्थात् लैटिनों के साथ उसका जो संबंध था, वह इटालियन जातियों के साथ न था; और इटैलियनों के साथ उसका जो संबंध था, वह प्रांतिक जातियों के साथ न था। प्रांतिक जातियों का न तो रोम के राज्यप्रबंध में और न अपने राज्यप्रबंध में ही कोई हाथ था। वे एक प्रकार की परतंत्र जातियाँ थीं।

हम पहले ही बतला चुके हैं कि प्रथम प्यूनिक युद्ध इसलिये बंद हुआ था कि दोनों ओर के लोग युद्ध से थक चुके थे तथा हैमिल्कार की सम्मति थी कि पहले अपनी सेना को शिक्षित करना चाहिए।

स्पेन में कार्थेज के लोग

हैमिल्कार ने अपनी सेना को शिक्षित करने के लिये स्पेन ले जाना आवश्यक समझा; क्योंकि वहाँ के लोग वीर तथा दरिद्र थे। ये लोग विजित होने के कारण पहले पहले जी तोड़कर लड़ते थे। कार्थेज को छोड़ने से पहले दिन हैमिल्कार ने देवता के सामने बलि चढ़ाई और उस समय अपने नौ वर्ष के बालक हनीबाल से युद्ध में जाने के विषय में पूछा। उसने कहा—हाँ चलूंगा। इसके पश्चात् पिता ने अपने पुत्र से कहा—तू प्रतिज्ञा कर कि तू रोमवालों का कभी मित्र न होगा। बच्चे ने इस बात की उसी स्थल पर प्रतिज्ञा की। आगे चलकर हम देखेंगे कि यह बालक मृत्यु पर्य्यंत अपनी इस प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहा। हैमिल्कार मृत्यु पर्य्यंत स्पेन में लड़ता रहा तथा टेगस नदी तक का स्पेन का प्रांत उसने कार्थेज के लिये जीत भी लिया।

इसकी मृत्यु के पश्चात् हसड्रूबाल सेनापति बना और २२१ ई० पू० पर्य्यंत विजय करता रहा; पर अंत में वह मारा गया। हसड्रूबाल की मृत्यु पर २६ वर्ष की अवस्था में हनीबाल सेनापति बना। इस बीच में रोमवाले आलसी नहीं हो गए थे, किंतु वे उत्तर में गालवालों से लड़ रहे थे और उनको उन्होंने पो नदी तक पीछे भगा दिया था। साथ ही उन्होंने कार्थेजवालों से एक संधि की थी जिसका भाव यह था कि कार्थेजवाले स्पेन की उत्तरीय नदी ईब्रो तक का समस्त देश जीत सकते हैं। इससे आगे बढ़ने पर दोनों में युद्ध हो जायगा।

२१९ ई० पू० में हनीबाल ने सोचा कि अब मैं रोमन लोगों से लड़ने के योग्य हो गया हूँ; अतः उसने सगंटम नामक शहर को घेर लिया जिसकी रोम के साथ संधि थी। सगंटम के लोग हनीबाल से जी खोलकर लड़े; परंतु अंत में सब यत्न निष्फल समझकर वहाँ के मुख्य व्यक्तियों ने सारा खजाना आग में डाल दिया तथा आप भी आग में जल मरे। यह युद्ध आठ महीने तक होता रहा था। इस घटना का समाचार सुनकर रोमवालों ने एक दूत कार्थेज भेजा जिसने वहाँ जाकर पूछा कि तुम लोग युद्ध तथा शांति में से क्या चाहते हो? कार्थेज के लोगों ने कहा कि जो तुम्हारी इच्छा हो। यह सुनकर उसने अपना कोट खोला और कहा कि मैं तो युद्ध करना चाहता हूँ। इस पर कार्थेजवालों ने कहा कि ऐसा ही होगा।

द्वितीय प्यूनिक युद्ध कैसे आरंभ हुआ

हनीबाल रोमन लोगों से समुद्र पर लड़ना ठीक न समझता था। उसका विचार था कि रोमन लोगों पर उनके देश में ही जाकर आक्रमण करना चाहिए। उसने सोचा कि गाल लोग, जिनको रोमवालों ने अभी जीता है, मेरे पक्ष में बड़ी जल्दी आ जायँगे और रोम से लड़ने के लिये तैयार हो जायँगे। साथ ही उसने यह भी सोचा कि यदि मैं रोमन लोगों को एक या दो युद्धों में हरा दूँगा तो इटली में रहनेवाली समस्त जातियाँ मेरी ओर आ जायँगी तथा रोम को अकेला छोड़ देंगी।

हनीबाल के विचार

इटली में हनीबाल का पहुँचना बहुत कठिन था। इसके कई कारण थे। एक तो उसे स्पेन से पार होने के लिये पिरीनीज नामक पर्वतमाला को पार करना आवश्यक होता। दूसरे उसे रोन नामक नदी पार करनी पड़ती जो बहुत तेज थी और जिसके दूसरे किनारे पर हनीबाल के शत्रु गालनिवासी रहते थे। तीसरे, आगे चलकर उसे आल्प्स पर्वत पार करना पड़ता जो युरोप में बहुत सबसे ऊँचा पहाड़ है। चौथे, इसके आगे उसे बरफ तथा अधिक शीत में से गुजरना पड़ता था। इसके पश्चात् वह सिसालियन गाल में, जिसे लाम्बार्डी भी कहते थे, जा सकता था, जहा रोमन लोगों तथा वहाँ के देशी लोगों से उसका युद्ध होना आवश्यक था।

हनीबाल की कठिनाइयाँ

संसार के इतिहास में हनीबाल की इटली की यह यात्रा प्रसिद्ध है; क्योंकि रोमन लाग उस पर बीच में ही आक्रमण कर सकते थे। परंतु उसने इतनी तेजी से यात्रा की कि जिसका रोमन लोगों को स्वप्न में भी ध्यान न था। हनीबाल ने रोन नदी को जिस दिन पार किया, उसके तीन दिन बाद रोम की सेना वहाँ पर जाकर पहुँची; और इस प्रकार रोमन लोगों को लाम्बार्डी पर हनीबाल की प्रतीक्षा करनी पड़ी।

हनीबाल ने बड़ी तेजी से दो ही दिन में रोन नदी को पार कर डाला। रोन नदी के दूसरे किनारे पर गाल निवा-

सियों की सेना डेरा डाले पड़ी थी जिसका सामना करना बहुत कठिन था। परंतु हनीबाल ने रात में ही बहुत से सिपाहियों को नदी के ऊपर से पार करने के लिये भेज दिया था जहाँ पर उन्हें गाल निवासी नहीं देख सकते थे।

हनीबाल की इटली की यात्रा

अगले दिन हनीबाल ने नदी पार करना आरंभ कर दिया। पहले तो गालवालों ने हनीबाल को रोकने का यत्न किया; परंतु जब उन्हें अपने पीछे शोर सुनाई दिया और यह मालूम पड़ा कि हमारे तंबुओं में आग लग गई और हमारे पीछे भी हनीबाल के सिपाही आ रहे हैं, तब तो उनका साहस छूट गया और वे भाग गए। हनीबाल के सिपाहियों ने बिना किसी प्रकार की कठिनाई के ही रोन नदी पार कर ली।

परंतु इससे आगे की यात्रा अत्यंत कठिन थी; क्योंकि एक तो पहाड़ी लोग हनीबाल की सेना पर पत्थर लुढ़का देते थे; दूसरे पीछे से भी आक्रमण करते थे; तीसरे हनीबाल की सेना बरफ में जो मार्ग बनाती थी, वह कभी कभी टूट जाता था जिससे उसकी सेना के बहुत से लोग फिसलकर मर जाते थे। मार्ग की इस कठिनाई का अनुमान इस बात से भी किया जा सकता है कि जब हनीबाल ने रोन नदी को पार किया था, उस समय उसके पास ५९,००० सेना थी। परंतु जिस समय वह आल्प्स पहाड़ से उतरकर नीचे आया, उस समय उसकी सेना में केवल २६,००० मनुष्य रह गए थे!

पाठकों को यहाँ पर यह समझ लेना चाहिए कि रोम को जितनी जल्दी हो सके, उतनी जल्दी हनीबाल को रोकना अभीष्ट था; क्योंकि पो नदी के किनारे पर रहनेवाली जातियाँ हनीबाल से मिल कर रोम के विरुद्ध लड़ने के लिये उद्यत हो जातीं, जैसा कि आगे हुआ भी। प्रथम युद्ध टिसिनस नदी पर, जो पेडास नदी में मिलती है, २१८ ई० पू० में हुआ जिसमें रोमन लोगों को पीछे हटना पड़ा और हनीबाल ने पेडास नदी पार कर ली। परंतु थोड़े समय के पश्चात् ही रोमन लोगों की एक दूसरी सेना आ पहुँची जिसमें रोम का प्रधान टिबैरियस सैंप्रानियस लांगस भी था। युद्ध ट्रिबिया नामक एक छोटी नदी पर हुआ; परंतु इसमें भी रोमन लोग बुरी तरह से हारे और उन्हें गाल देश के बाहर निकल जाना पड़ा।

हनीबाल द्वारा रोम की पराजय

इस प्रकार इटली का सारा उत्तरीय भाग हनीबाल के अधिकार में आ गया। उस स्थान के निवासी हनीबाल के मित्र हो गए; इसलिये अगले वर्ष हनीबाल एट्रूरिया में २१७ ई० पू० में पहुँचकर खास रोम राज्य की ओर रवाना हुआ। वह जहाँ जाता था, साथ ही साथ लूटता भी जाता था। रोम का प्रधान केयस फ्लैमीनियस नीयो हनीबाल से लड़ने के लिये रवाना हुआ। ट्रसीमिनस नामक झील पर उसका हनीबाल से एक युद्ध हुआ। दिन में धुंध था। हनीबाल ने

रोमन-सेना को बड़ी चतुरता से घेर लिया और बुरी तरह से हराया। इस युद्ध में रोमन प्रधान भी मारा गया।

इसके अनंतर रोमन लोग बड़ी विपत्ति में पड़ गए; अतः तंग आकर उन्होंने फ़िटफैनियस मैक्सीमस नामक एक व्यक्ति को डिक्टेटर बना दिया। उसने सोचा कि हनीबाल से युद्ध करना व्यर्थ है; इसलिये उसने हनीबाल की निगरानी करना आरंभ कर दिया और उससे लड़ना छोड़ दिया।

यद्यपि प्रतीक्षा करने की रीति अच्छी थी, तथापि रोमन लोग इस बात को पसंद नहीं करते थे; क्योंकि वे यह नहीं चाहते थे कि हनीबाल जितना चाहे, उतना हमारे शहरों को लूटे और हम चुपचाप देखते रहें। साथ ही उन्हें यह भी भय था कि कहीं इटली की अन्य जातियाँ हनीबाल के साथ मिल न जायँ; इसलिये दूसरे वर्ष २१६ ई० पू० में रोमन लोगों ने हनीबाल से छुटकारा पाने के लिये बड़ा भारी यत्न किया, परंतु वह निष्फल हुआ।

कन्नू का युद्ध

उन्होंने अपने दोनों प्रधानों को हनीबाल की सेना से दूनी सेना देकर उससे युद्ध करने के लिये भेजा; परंतु उन्हें कन्नू नामक स्थान पर बड़ी भारी शिकस्त मिली। रोमन लोगों के ७०००० मनुष्य मारे गए, जिनमें उनके अच्छे से अच्छे सिपाही थे। परंतु दूसरी ओर के केवल ६००० ही मनुष्य मरे। इससे रोमन लोगों को अपनी रक्षा की अब कोई आशा न रही।

परंतु युद्ध में हार जाने पर भी जातियाँ हारा नहीं करतीं। हनीबाल ने कन्नू के युद्ध में जीतते ही सोचा था कि इटली की समस्त जातियाँ मेरे पक्ष में आ जायँगी, जैसा कि कुछ जातियों ने किया भी। परंतु फिर भी बहुत सी जातियाँ, लैटिन जाति तथा रोम के उपनिवेश रोम के ही पक्ष में रहे। उन्होंने अंत तक उनका पक्ष न छोड़ा। हनीबाल युद्ध में तो बड़ी जल्दी जीत सकता था, परंतु प्रत्येक नगर को एक एक करके लेना उसके लिये बड़ा कठिन था; क्योंकि इस कार्य्य के लिये समय तथा सेना दोनों ही अधिक चाहिए थीं। हनीबाल का भाई स्पेन में लड़ रहा था; अतः वह अपनी सेना अपने भाई की सहायता के लिये नहीं भेज सकता था, तथा कार्थेज के लोग हनीबाल से बहुत डरे हुए थे; और उन्हें हनीबाल के विषय में कुछ भी पता न था कि वह इटली में क्या कर रहा है। अतः हनीबाल ने अधिक सेना भेजने की कार्थेजवालों से जो प्रार्थना की, उसके उत्तर में उन्होंने लिखा कि यदि तुमने इतने बड़े बड़े युद्ध सचमुच जीते हैं, तो तुम्हें सेना की आवश्यकता ही नहीं हो सकती कन्नू पर उसने अपनी अधिक शक्ति प्रकट की। इससे आगे वह कुछ भी न कर सकता था; क्योंकि रोमन लोग प्रतीक्षा करने लगे और उससे उन्होंने कोई मुख्य युद्ध नहीं किया।

युद्ध में रोम की शक्ति

कापू नाम के बड़े शहर को, जिसने हनीबाल का पक्ष लिया था, २११ ई० पू० में रोमन लोगों ने जीत लिया; और हनीबाल

उनको न रोक सका। कापू में रहनेवाले बड़े बड़े लोगों ने इस डर से जहर खा लिया कि रोमन लोग हमारे साथ क्रूरता का व्यवहार करेंगे। इस समय के बाद हनीबाल दिन पर दिन शक्ति-हीन होने लगा और रोमन लोग शक्तिशाली होते गए।

२०७ ई० पू० में हसड्रूबाल ने स्पेन छोड़ने का विचार किया और अपने भाई को सहायता देने के लिये आल्प्स को पार करके आगे जाने का इरादा किया।

हसड्रूबाल की पराजय

उसने जो दूत अपने भाई के पास भेजा था, दैवात् वह रोमन लोगों के हाथ में पड़ गया। और यह भेद रोमन लोगों पर खुल गया कि हसड्रूबाल अपने भाई हनीबाल को सहायता देने के लिये आ रहा है।

रोमन प्रधान केयस क्लाडियस नीरो, जो दक्षिण में हनीबाल का ध्यान रखने के लिये रखा गया था, चुपके से उत्तर में चला गया तथा दूसरे प्रधान से मिल गया। इसका परिणाम यह हुआ कि मैटारस नदी के किनारे हसड्रूबाल मारा गया। साथ ही उसकी सारी सेना भी नष्ट हो गई। नीरो ने हसड्रूबाल का सिर काट लिया और दक्षिण में पुनः जाकर हनीबाल की छावनी में वह फेंक दिया। हनीबाल ने जब वह सिर देखा, तब उसे पता लगा कि मेरा भाई इटली में ही था। इस घटना से उसका दिल टूट गया और उसने रोम-विजय की आशा छोड़ दी।

अभी तक न तो हनीबाल ने इटली को छोड़ा था और न रोमन लोग उसे बाहर निकालने के लिये यत्न करते थे। इस

बीच में रोमन लोग दूसरे स्थानों पर युद्ध करते रहे। उसी समय उन में एक महान् पुरुष का उत्थान हुआ जिसका नाम पब्लियस कार्नीलियस स्किपियो था। इसके दादा परदादा सब के सब रोमन सेनापति थे। यह पहले पहल स्पेन में भेजा गया था। वहाँ इसने अपने सद्व्यवहार से स्पेनवालों पर विजय प्राप्त की और २०६ ई० पू० में कार्थेजवालों को स्पेन से सर्वथा निकाल दिया। यही आदमी था जिसने आगे चलकर हनीबाल को पराजित किया।

स्किपियो का समुत्थान

जब स्किपियो रोम को लौटा, तब उसने अफ्रिका पर स्वयं जाकर आक्रमण करने का विचार किया; अतः वह प्रधान बना तथा २०४ ई० पू० में अफ्रिका पर जा उतरा। उसने रात को तंबुओं में आग लगाकर, भागते हुए सैनिकों का पीछा करके तथा घात करके कार्थेजियन लोगों की करीब करीब सारी सेना का नाश कर दिया। इस घटना के पश्चात् रोमवालों ने कार्थेजियन लोगों से कहा कि वे हनीबाल को इटली से बाहर कर दें। २०२ ई० पू० में एक युद्ध जामा नामक स्थान पर हनीबाल और स्किपियो के मध्य हुआ जिसमें हनीबाल हार गया। कहते हैं कि इस युद्ध में दोनों ओर से बहुत अधिक खून बहा; परंतु स्किपियो के घुड़सवार अच्छे थे; अतः वे विजयी हुए और हनीबाल की सारी सेना का नाश हो गया।

जामा का युद्ध

इस युद्ध के पश्चात् कार्थेज को रोम से संधि करनी पड़ी। उसने प्रतिज्ञा की कि मैं रोम से बिना पूछे किसी से युद्ध न करूँगा। साथ ही उसने बहुत सा धन भी रोम को दिया। हनीबाल उस समय भी अपने देशवालों को सहायता देने के लिये उद्यत था; परंतु रोमन लोग उससे इतने डरे हुए थे कि उन्हें उसे कार्थेज से बाहर निकालना पड़ा। वह मृत्यु पर्यंत बाहर ही भटकता रहा, और किसी राजा ने उसे रोम के डर से अपने यहाँ स्थान न दिया। अंत में उसने रोम के हाथ पड़ने की अपेक्षा मरना ही अच्छा समझा और जहर खाकर मर गया।

हनीबाल का अंत

रोमनों और हनीबाल का युद्ध संसार के प्रसिद्ध युद्धों में से एक है। यह एक महान् आत्मा तथा एक महान् जाति का युद्ध था। रोमन लोग इसलिये विजयी हुए कि वे उसकी चोटें सहन कर गए। हनीबाल ने सोचा था कि जब मैं इटली में पहुँचूँगा, तब इटली की जातियाँ मेरे पक्ष में आ जायँगी। परंतु ऐसा न हुआ; क्योंकि अच्छी से अच्छी तथा शक्तिशाली जातियाँ अंत तक रोम से अलग नहीं हुईं। परिणाम यह हुआ कि हनीबाल की शक्ति कम होने लगी। यद्यपि रोमन लोगों के यहाँ उनका शत्रु सोलह वर्ष तक उनके संहार के लिये विद्यमान रहा, तो भी वे अपनी सेनाएँ भिन्न भिन्न स्थानों पर भेज सकते थे। परंतु इसके विपरीत ज्योंही रोमन लोग कार्थेज में पहुँचे, त्योंही वहाँ के

युद्ध का प्रभाव

लोगों का साहस जाता रहा और उन्होंने हार मान ली। इस युद्ध से निम्नलिखित दो बड़े भारी प्रभाव रोम पर पड़े—

(१) इस युद्ध के कारण रोम मध्य सागर के चारों ओर बसे हुए नगरों का स्वामी हो गया। यद्यपि रोम ने अपनी रक्षा के लिये कार्थेज से युद्ध किया था, परंतु परिणाम में उसने कार्थेज तथा स्पेन को जीत लिया। इस युद्ध में विजयी होने के साथ साथ रोमन लोग मध्य सागर के स्वामी हो गए जो उनकी भावी विजयों का एक बड़ा मार्ग बन गया।

(२) हनीबाल ने ज्योंही इटली को छोड़ा त्योंही रोमन लोगों ने इटली की उन जातियों के साथ अत्यधिक अत्याचार करना आरंभ कर दिया जिन्होंने हनीबाल का पक्ष ग्रहण किया था। उन्होंने अब उन जातियों के साथ अधीनस्थ जातियों का सा व्यवहार करना आरंभ कर दिया। इस युद्ध के कारण अब इटली में खेत बहुत कम दिखाई देने लगे, क्योंकि साधारण लोग खेत छोड़ छोड़कर शहरों में बसने लग गए थे।

यदि हम रोम के अगले इतिहास का निरीक्षण करें तो हमें पता लग जायगा कि इन बातों के कारण रोम को कैसी कैसी विपत्तियाँ अपने सिर लेनी पड़ीं और जिन्हें अंत तक भी वह पूर्ण रूप से दूर न कर सका।

५—पूर्वीय देशों पर रोम की विजय

हनीबाल को जीतते ही रोम पूर्वीय देशों में एक बड़ा भारी राज्य हो गया। इस समय के ५० वर्ष पश्चात् वह पूर्वीय देशों में भी शक्तिशाली हो गया। यूनान के उत्तरवर्त्ती देश मैसीडोनिया के सम्राट् सिकंदर ने ३३४-३२३ ई० पू० में पूर्वीय देशों पर आक्रमण कर एशिया माइनर, फारस, सीरिया तथा फारस के पश्चिमी भाग को हस्तगत किया और अपने शासन में ले लिया। उसके मरते ही सारा साम्राज्य उसके छोटे छोटे सेनापतियों ने आपस में बाँट लिया। रोम ने जब इन पूर्वीय देशों में हस्तक्षेप किया, तब निम्नलिखित तीन बड़े बड़े राज्य उसे दृष्टिगत हुए—

पूर्वीय देशों के राज्य

(१) मैसीडोनिया—इसका राज्य यूनान के बहुत से भागों पर था।

(२) सीरिया—इसका विस्तार एशिया माइनर पर था।

(३) मिस्र—यह बड़ा ही धनाढ्य देश था और इसका व्यापार सिकंदरिया नामक बंदरगाह से होता था जो उस देश की उस समय की राजधानी था।

रोम का सबसे पहले मैसीडोनिया से युद्ध छिड़ा; क्योंकि मैसीडोनिया का राजा फिलिप हनीबाल और रोम के युद्ध काल

में दिन पर दिन जोर पकड़ रहा था। अतः ज्योंही फिलिप के विरुद्ध एथेंस ने रोम से सहायता माँगी, त्योंही रोम ने सहायता देना स्वीकार कर लिया और उसने फिलिप के साथ २०० ई० पू० में युद्ध आरंभ कर दिया। १९६ ई० पू० में रोमन सेनापति टीटस किंकटस क्लैमिनीनस ने सिनासिफैली नामक स्थान पर फिलिप को जीतकर कहने के लिये तो यूनान देश को स्वतंत्र रखा, परंतु वास्तव में वह यूनान के संपूर्ण नगर स्वयं अपनी छत्र-छाया के नीचे ले आया। कुछ काल के अनंतर ही द्वितीय शक्तिशाली देश सीरिया को भी रोमन लोगों ने जीत लिया और सीरिया के राजा एंटिओकस को इस बात के लिये बाध्य किया कि वह एशिया माइनर छोड़ दे। इस प्रकार अब छोटे बड़े सभी पूर्वीय देश रोम को ही अपना अधिपति समझने लग गए।

मैसिडोनिया और सीरिया पर विजय

इन उपरिलिखित दो युद्धों से रोम का आधिपत्य एशिया माइनर तथा सीरिया पर हो गया। परंतु इन दोनों ही देशों को वह पहले पहल प्रत्यक्ष रूप से अपनी छत्र-छाया के नीचे नहीं लाया। रोम किसी विजित देश को अपने हाथ में करने के लिये कभी शीघ्रता न करता था।

पूर्वीय देशों में रोम की शासन-प्रणाली

(१) वह विजित देश का राज्य उसी देश के किसी शक्तिहीन मनुष्य के सपुर्द कर देता था।

(२) इन शक्तिहीन राजाओं से रोम जो कुछ चाहता था, करवाता था।

(३) वह विजित देश को कई एक छोटे छोटे भागों में विभक्त कर देता था और उन भागों पर छोटे छोटे राजाओं को राज्य करने के लिये बैठा देता था।

(४) प्रायः ये छोटे छोटे राजा आपस में लड़ते रहते थे और अंत में रोम उन सब पर अधिकार कर लेता था।

इस प्रकार हमने देख लिया कि रोम किस ढंग से बिना कष्ट उठाए आसानी से ही इन देशों पर राज्य किया करता था; और जो कुछ चाहता था, वही इन देशों के शक्तिहीन शासकों से करवाया करता था।

अगले इतिहास से पता लगता है कि रोम ने १६०-१३३ ई० पू० तक इस नीति का परित्याग न किया; और जिन जिन विजित देशों को वह अपने हाथ में लेता गया, उन्हें वह पूर्ण रूप से समाप्त करता गया।

मैसीडोनिया को १४८ ई० पू० में रोमन लोगों ने अपना प्रांत बना लिया। इसी प्रकार रोम ने परगामस का राज्य भी अपने अधीन किया; और १३३ ई० पू० में जब राजा अटालस तृतीय मरा, तब वह रोम को परगामस की रियासत अपनी इच्छा से ही दे गया।

इस रीति से रोम ने संपूर्ण एशिया माइनर को अपना प्रांत बना लिया और अपने आप उस पर राज्य करना आरंभ कर दिया।

कई देशों को विजय करने में रोम ने बड़ी भारी विपत्तियाँ उठाईं। उन सब देशों में स्पेन भी एक था। ल्युस्टिनी जाति में

स्पेन की विजय

जो उस देश में रहती थी, जिसको आजकल पुर्तगाल कहते हैं, याथिस नामक एक वीर महापुरुष उत्पन्न हो गया जिसने अपने नेतृत्व में अपनी जाति को रोम के विरुद्ध खड़ा किया। वह जाति का गड़ेरिया था, परंतु अपनी योग्यता से एक के बाद दूसरे युद्धों को जीतता हुआ इस अवस्था तक पहुँच गया कि उस जाति ने उसे अंत में अपना राजा मान लिया। कई वर्ष तक वह रोम से लड़ा और उसको संधि करने के लिये उसने बाध्य किया। परंतु यह अवस्था देर तक न रह सकी; क्योंकि एक वीर बुद्धिमान योद्धा ने उसके तीन मित्रों को इसलिये रिश्वत दी कि वे सोते समय उसे कतल कर दें। इसी प्रकार स्पेन के उत्तर में बसे हुए न्यूमान्सिया नामक नगर ने रोमन लोगों के लिये अपने दरवाजे बंद कर दिए और वह १४१-१३३ ई० पू० तक रोम से लड़ता रहा। अंत में रोमन लोगों ने अपने वीर योद्धा स्किपियो अमीलियानिस को भेजा। उसने आते ही शहर के चारों ओर खाई खोद डाली जिससे कोई शहर में आ जा न सके और शहर भूखों मर जाय।

उसी समय शहर के मुखिया ने आत्मघात कर लिया और कुछ समय पश्चात् जब दरवाजा खुला, तब बहुत थोड़े मनुष्य बचे हुए निकले। न्यूमांसिया १३३ ई० पू० में

ले लिया गया और इसके बाद स्पेन रोम के प्रांतों में मिला लिया गया।

यदि रोम ने सब से अधिक कठोरता का व्यवहार किसी से किया तो वह कार्थेज से किया। रोम इस समय भी कार्थेज से डरता था, क्योंकि उसे भय था कि कहीं वह फिर भी शक्तिशाली न हो जाय। अत: वह इस ताक में था कि ज्योंही मौका मिले, त्योंही कार्थेज पर आक्रमण कर दिया जाय। द्वितीय प्यूनिक युद्ध के पश्चात् ही न्यूमीडिया का राजा, जिसका नाम मैसीनिसा था, रोम की रक्षा में आ गया था। मैसीनिसा का कार्थेजवालों से झगड़ा हुआ और उस झगड़े में रोम ने १४९ ई० पू० में मैसीनिसा का पक्ष लिया। कार्थेजवाले जानते थे कि हम रोम के साथ युद्ध नहीं कर सकते; अत: रोम ने जो कुछ कहा, वह उन्होंने मान लिया।

कार्थेज का विनाश

(१) पहली बात जो कि रोमवालों ने कार्थेजवालों से कही, वह यह थी कि वहाँ के बड़े बड़े घरानों के ३०० बालक रोम में रहें जिससे वहाँ के बड़े बड़े सरदार रोम के विरुद्ध न उठ सकें।

(२) दूसरी चीज जो रोम ने कार्थेज से माँगी वह उनके शस्त्र थे। ये दोनों बातें कार्थेजवालों ने मान लीं। तीसरी बात जो रोम ने माँगी, वह यह थी—

(३) कार्थेजवाले अपने नगर को समुद्र के किनारे से १० मील दूर पर जा बसावें जिससे उनका सारा व्यापार

मारा जाय जो उनके जीवन तथा समृद्धि का एक मात्र आधार था।

इस पर वे भड़क उठे और उन्होंने बड़ी तेजी के साथ अपने शहर की दीवारें खड़ी कीं और साथ ही उन्होंने उसी समय नए नए शस्त्र बनाए।

नगर पर्य्याप्त दृढ़ हो गया। स्त्रियों ने धनुष की ज्या के लिये अपने बाल काट डाले। अब रोमन लोगों ने शहर पर घेरा डाला जो तीन साल (१४९-१४७ ई० पू०) तक रहा।

दोनों ओर से जी जान छोड़कर युद्ध हुआ। स्किपियो अमीलियानस नामक वीर योद्धा ने अंत में शहर को जीत लिया। पहली बात जो उसने की, वह यह थी कि उसने एक पत्थर की दीवार बंदरगाह के बीच में से गुजरती हुई बनाई जिससे शहर और उसके सारे व्यापारी जहाज दीवार से घिर जायँ और कार्थेज का व्यापार बंद हो जाय। परंतु कार्थेज-वालों ने शहर की दूसरी ओर नहर खोद ली और उसी रास्ते व्यापार करने लगे। इतना होने पर भी स्किपियो चुप न रहा। उसने एक और उतनी ऊँची दीवार खड़ी की जितनी कि कार्थेज की शहर की थी, जिससे कार्थेज के शहर को बंदरगाह से पृथक् करके उसने बंद सा कर दिया। इस पर कार्थेज के लोगों का पक्ष गिर गया और रोमन लोगों ने शहर में घुसने का यत्न करना आरम्भ किया। रोमन लोगों को प्रत्येक घर में दीवारें तोड़ तोड़कर घुसना पड़ा और साथ

ही घुसने पर प्रत्येक घर में भयानक रूप से युद्ध करना पड़ा। अंत में शहर की जन-संख्या के केवल दशमांश मनुष्य बच रहे, शेष सब मारे गए। कार्थेज शहर में आग लगा दी गई जिससे थोड़ी ही देर में वह मिट्टी में मिल गया। अंत में कार्थेज की भूमि, अफ्रिका के नाम पर, रोमन प्रांत में शामिल कर ली गई।

इस प्रकार पाठक देख चुके कि १३३ ई० पू० में रोम इटली के अतिरिक्त मैसीडोनिया, ग्रीस, एशिया, स्पेन, अफ्रिका आदि देशों का भी शासक था। वास्तव में हम यों कह सकते हैं कि भूमध्य सागर के चारों ओर के देश रोम के अधीन थे और भूमध्य सागर एक प्रकार से रोम राज्य का मध्य-गत सरोवर हो गया था। इन देशों पर रोम भिन्न भिन्न विधियों से राज्य करता था। कुछ देशों को तो उसने अपना प्रांत बना लिया था जिसमें वह अपने देश के लोगों को ही शासक के रूप में भेजता था; तथा कुछ देशों को उसने अपने अधीन रखा जिसमें जो कुछ चाहता था, कराता था; परंतु शासक उस देश के ही किसी मनुष्य को रखता था। इन अधीनस्थ राज्यों की अपेक्षा प्रांतिक राज्यों की दशा हजार गुनी अच्छी थी।

रोम की १३३ ई० पू० में स्थिति

१३३ ई० पू० के पश्चात् रोम के युद्ध प्रायः असभ्य जातियों से हुए; अर्थात् ऐसे लोगों से हुए जो (१) शहरों

में न रहते थे; (२) जो एक दूसरे को उस समय सहा-यता न देते थे जब उन्हें सार्वजनिक भय की आ ंका होती थी; और (३) जिनके अपने कोई नियमादि न थे।

१३३ ई० पू० के पश्चात् रोम के युद्ध

रोम इन असभ्यों से लड़ा; और जब उसने उन्हें जीत लिया, तब उन्हें नियम पालन करना तथा एकत्र होकर रहना सिखाया। इस प्रकार यूरोप के उत्तरीय देशों का इतिहास रोम के उन उन देशों को विजय के साथ साथ आर ंभ होता है।

६—नवीन परिवर्तन और व्यवस्था

रोमन लोगों के स्वभाव अन्य देशों की विजय के साथ बहुत अधिक परिवर्तित हो गए। अब उनके देश के बड़े बड़े पुरुष साधारण किसान न होते थे, जो काम पड़ने पर तो खेत छोड़कर आ जाते और कार्य्य की समाप्ति पर पुनः अपने खेत जोतने के लिये चले जाते। रोमन सेनापति इन दिनों में बहुत अधिक धनाढ्य हो गए थे और अपना सारा समय राज-काज में बिताने लगे थे। वे अब सादे तथा निरभिलाषी न थे, बल्कि उनके प्रत्येक कार्य्य से अभिमान, स्वार्थ, उच्चाकांक्षा तथा लोलुपता टपकती थी। वे कोई कार्य्य इन बातों के बिना न करते थे। अब परदेश से आए हुए उपहार लौटाए नहीं जाते थे; बल्कि इसके विपरीत रोमन सेनापति जिस प्रांत में जाते थे, वहीं पहले रुपया माँगते थे, पीछे और कोई काम करते थे।

रोमन लोगों के स्वभाव में परिवर्तन

रोमन लोगों ने जिस समय ग्रीक तथा पूर्वीय देशों को जीता, उस समय उन्हें बहुत सी नई चीजें वहाँ पर मिलीं जिनको उन्होंने पहले कभी नहीं देखा था। अब वे खाने पीने तथा कपड़ों आदि पर बहुत अधिक ध्यान देने लग गए थे। ग्रीक लोग रोमन

ग्रीक लोगों का प्रभाव

लोगों की अपेक्षा बहुत अधिक चतुर थे, क्योंकि अच्छी से अच्छी पुस्तकें और सुंदर से सुंदर चित्रकारी तथा शिल्प उनके यहाँ मौजूद थे। इसका परिणाम यह हुआ कि रोमन लोगों ने वहाँ से बहुत सी बातें सीखीं। परंतु दुःख यह है कि इस शिक्षा के साथ साथ उन्होंने अपने देवी देवताओं के स्थान पर अधिकतर ग्रीक देवी देवताओं को पूजना आरंभ कर दिया था। सारांश यह कि अब वे उतने सादे तथा अच्छे न रहे जितने कि पहले समय में थे।

पब्लियस स्किपियो आफ्रिकिनस ग्रीक लोगों के रीति रिवाज तथा रहन सहन को बहुत अधिक पसंद करता था।

पब्लियस स्किपियो आफ्रिकिनस

इसने अफ्रिका में हनीबाल को हराया था; और इसी लिये लोग इसके नाम के साथ आफ्रिकिनस शब्द जोड़ देते थे। परंतु रोम के लोग इसे बहुत अधिक पसंद नहीं करते थे; क्योंकि वे कहते थे कि सब कार्य्यों में वह अपना ही लाभ सोचता है। इसका सब से बड़ा स्पर्धी मार्किस केटो था। वह वृद्ध तथा रहन सहन में बहुत अधिक सादा था और साथ ही वह ग्रीक रीति रिवाज को बिलकुल पसंद न करता था।

एक बार पब्लियस के भाई ल्यूसियस स्किपियो एशियाटिकस पर इस बात का मुकदमा चलाया गया कि उसने रोम का रुपया गबन कर लिया है। इसको एशियाटिकस इसलिये कहते थे कि इसने एशिया में एंटियाकस को हराया था।

परंतु दोषारोप का फैसला होने के पहले ही पब्लियस उठा श्रौर कहने लगा—"१४ वर्ष पूर्व आज के ही दिन मैंने हनीबाल को जामा पर हराया था। चलो चलें, रोम को बचाने के उपलक्ष में ईश्वर को धन्यवाद दे आवें"। इतना सुनते ही सब लोग राजधानी में चले गए; केवल उसके भाई पर दोषारोपण करनेवाले लोग ही वहाँ रह गए। पर इसके बाद उसने रोम को छोड़ दिया श्रौर परदेश में ही वह मर गया। उसकी कब्र पर "अकृतज्ञ देश" पद लिख दिया गया।

पब्लियस के शत्रु मार्कस केटो ने बहुत अधिक यत्न किया कि रोम के पुराने रीति रिवाज न बदलने पावें। वह आप भी सादे

मार्कस केटो

ढंग से ही रहता था श्रौर रुपए फजूल न खर्च करता था। उसने अपने लड़कों को शिक्षा देने में तथा शरीर को पुष्ट बनाने में बड़ा कष्ट उठाया था। वह सदा रोमन लोगों की उन बुरी आदतों की समालोचना किया करता था जो वे दिन पर दिन ग्रीकवालों से सीख रहे थे। जब वह सेंसर बना, तब उसने रोम के कई बड़े बड़े मनुष्यों को भी इसी कारण दण्ड दिया। परंतु रोमन लोग अपनी आदतें न छोड़ सके। वे केटो की तीक्ष्ण समालोचना बड़े ध्यान से सुनते थे; श्रौर जब वह उनकी हँसी उड़ाता था, तब वे हँस भी पड़ते थे। साथ ही वे यह भी जानते थे कि जो कुछ केटो कहता है, वह ठीक कहता है। तो भी उन्होंने उसके कथन को कार्य्य रूप में परिणत न किया श्रौर जैसे के तैसे बने रहे।

३०० ई० पू० में ही पैट्रीशियनों और प्लीबियनों का झगड़ा समाप्त हो चुका था। परंतु थोड़े ही समय बाद रोमन लोगों में एक और विभाग हो गया जिसका आधार धन था। प्रत्येक धनिक प्लीबियन और मुख्य मुख्य पैट्रीशियन ही काउन्सल चुन सकते थे। इस प्रकार वे परिवार, जिनमें से कोई मनुष्य एक बार भी मजिस्ट्रेट चुना जा चुका था, अपने आप को साधारण लोगों से पृथक् करने लग गए और नोब्ल या आप्टिमेटज़ के नाम से पुकारे जाने लगे।

रोमन नोब्ल

ये परिवार अपने आपको औरों की अपेक्षा बहुत अधिक अच्छा समझते थे, क्योंकि इनके पास धन बहुत अधिक था तथा राज्य के कार्य्य भी इन्हीं के हाथ में थे। इन नोब्लों ने आपस में एका कर लिया और रोम को अपनी इच्छा के अनुसार शासित करने लग गए।

पहले सीनेट की सहायता से काउन्सल राज्य किया करता था; परंतु इस समय केवल सीनेट ही सब कुछ करती धरती थी। काउन्सल को वही काम करना पड़ता था जो पहले सीनेट करती थी। पहले तो सीनेट ने बड़ी अच्छी तरह से काम किया, जैसा कि हनीबाल के युद्ध से हमें पता लगता है; परंतु जब से एशिया में युद्ध जीते गए, तब से सीनेट के सब सभासद धनी होने को ही अपने समस्त कार्य्यों का उद्देश्य समझने लगे।

रोम में नया राज्य-प्रबंध

यही कारण है कि पचीसों प्रकार की बुराइयाँ रोम में उत्पन्न हो गईं; परंतु किसी ने भी इन बुराइयों को दूर करने का यत्न नहीं किया।

यद्यपि रोम बड़ा शक्तिशाली था, तो भी रोम के सब महान् पुरुष डर रहे थे। केटो ने बड़े दुःख से कहा था—"रोम की उस समय क्या दशा होगी जब उसको किसी का भी भय न रहेगा!" इसी प्रकार स्किपियो अमिलियानस ने, जिसने कार्थेज को जीता था, मजिस्ट्रेट बनने के बाद राज्य की वृद्धि के स्थान पर राज्य की रक्षा की ही ईश्वर से प्रार्थना की थी। यहाँ पर यह बात अवश्य समझ लेनी चाहिए कि ऐसे कौन से खतरे थे जिनसे ये लोग डर रहे थे। शायद इसका उत्तर उस समय अत्यंत सरल हो जायगा जब पाठक यह समझ लेंगे कि इस नवीन प्रकार की सीनेट ने रोम, इटली तथा प्रांतिक राज्यों में क्या क्या काम किए।

नवीन परिवर्त्तन का रोम पर प्रभाव

पाठकों को यह बात याद रखनी चाहिए कि रोम एक शहर था जिसका राज्य उस समय सारे संसार पर था। रोम में रहनेवाले लोग उस समय चार भागों में विभक्त हो गए थे—(१) धनिक या नोब्ल, (२) सीनेटर, (३) नाइट और (४) साधारण मनुष्य।

नोब्ल और सीनेटर नियम बनाया करते थे, जैसा कि हम पहले बतला चुके हैं। परंतु नियम तब तक काम में न लाया

जा सकता था जब तक वह लोगों की सभा में स्वीकृत न हो जाता था। इससे यह बात सिद्ध हो गई कि यदि ये लोग अपने मन के नियम बनाना चाहें तो यह आवश्यक है कि पहले लोगों को प्रसन्न कर लें। नाइट लोग बड़े बड़े व्यापारी थे। प्राचीन काल में रोम के धनिक पुरुषों को घोड़े पर चढ़-कर लड़ना पड़ता था; और जो इस प्रकार लड़ा करते थे, उनका उन्होंने एक विशेष नाम "नाइट" रख दिया था। इसी लिये इनको भी वे नाइट कहते थे। परंतु इस समय ये लोग बहुत कम युद्धों में जाते थे और रोम में रह कर ही अपना कार्य्य करते रहते थे। सीनेट ने इन्हें प्रांतों से रुपए इकट्ठे करने का अधिकार दिया था। अत: इससे ये लोग दिन पर दिन और धनी होते जाते थे। नोब्ल लोग साधारण लोगों को दिन रात खिलाते पिलाते रहते थे जिससे वे चुप तथा संतुष्ट रहें, और ये लोग जो चाहें वह आनंद से कर सकें—किसी प्रकार की बाधा इनके कार्य्यों में न पड़ सके। प्रांतों के मजिस्ट्रेट लोग उपहार के तौर पर रोम में धान्य भेज दिया करते थे जो साधारण लोगों में मुफ्त ही बाँट दिया जाता था। यह प्राय: नियम सा बन गया था कि प्रत्येक मनुष्य, जो मजिस्ट्रेट बनना चाहे, लोगों को खूब खिलावे पिलावे तथा उन्हें सर्कस में मुफ्त ही खेल दिखावे। रोम के लोग स्वभाव से ही क्रूर थे। उन्हें क्रूरता संबंधी क्रीड़ाएँ बहुत अधिक पसंद आती थीं। यद्यपि अन्य बहुत से खेल थे, जैसे घुड़दौड़, नंगे पैरों की दौड़

आदि, तथापि उन्हें सिंहयुद्ध तथा मनुष्ययुद्ध बहुत ही अधिक पसंद थे। मनुष्ययुद्ध में एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से लड़ता था जिसमें एक न एक की मृत्यु आवश्यक थी। यह युद्ध करनेवाले प्राय: कैदी होते थे जिनको रोमवाले युद्धों में से पकड़कर लाते थे।

सहज में ही इतने सुभीते पा लेने से लोग दिन पर दिन आलसी होने लगे और उनमें से युद्ध करने के भाव भी साथ ही लुप्त होने लगे। इतना होने पर भी सारे संसार के राज्य की बागडोर इन्हीं के हाथ में थी।

इस प्रकार पाठकों ने देख लिया होगा कि रोम में इस समय सीनेट सारी शक्ति अपने हाथ में करना चाहती थी। नाइट लोग धनी होना पसंद करते थे और साधारण लोग मुफ्त ही में खाते पीते थे, खेल तमाशे देखते थे तथा सारा समय आलस्य में ही बिताते थे।

हनीबाल के युद्ध के समय इटली का बहुत कुछ नाश हुआ था; और इसके पश्चात् रोमन लोगों ने उसका बहुत कुछ नाश किया जब कि उन्होंने उन लोगों को दण्ड देना आरंभ किया जिन्होंने हनीबाल का पक्ष लिया था। छोटे छोटे खेत नष्ट हो चुके थे और मनुष्य गाँवों में रहने के स्थान पर शहरों में रहना पसंद करने लग गए थे। प्रत्येक रोमन जब धनवान् हो जाता था, तब जमीनें खरीदना आरंभ कर देता था। इसका परिणाम यह

इटली में परिवर्त्तन

हुआ कि जमीन का मूल्य इतना बढ़ गया कि गरीब लोगों के लिये जमीन खरीदना असंभव हो गया। इस प्रकार अब इटली में छोटे छोटे खेतों के स्थान पर बड़े बड़े खेत दिखाई देने लग गए जिनको दास लोग जोतते थे। इन खेतों की उपज पर किसी प्रकार का भी लगान न लिया जाता था, क्योंकि ये भूमियाँ नोब्ल लोगों की थीं, जिनके हाथ में ही सारे राज्य का प्रबंध था। युद्ध में पकड़े हुए कैदी ही दास हुआ करते थे और ये स्वतंत्र श्रमी की अपेक्षा सस्ते पड़ते थे।

दूसरे यह कि हनीबाल के युद्ध के पश्चात् रोमनों ने इटालियनों के साथ अच्छा व्यवहार न किया; तथा वे लैटिन जाति को भी (जो हर समय उसके साथ रही थी और जिसने उसके साथ कभी विश्वासघात नहीं किया था) तुच्छ दृष्टि से देखने लग गए। इसका परिणाम यह हुआ कि अब रोम के नियमों के प्रति इटली में रहनेवाली जातियों तक का प्रेम न रहा, दूसरों का तो कहना ही क्या!

प्रांतों का शासन करने के लिये रोम एक मनुष्य को भेजा करता था जिसे मजिस्ट्रेट कहते थे। इसका चुनाव रोम के लोगों के हाथ में था। जो लोग प्रांतीय शासक बनने के इच्छुक हुआ करते थे, वे रोम के लोगों को खूब खिलाते पिलाते थे और इसी लिये वे प्रायः ऋणी की अवस्था में प्रांतीय शासक बनते थे। अब सीधी

प्रांतों की दशा

बात है कि वे प्रांतों पर धन-प्राप्ति के लिये अत्याचार करें; क्योंकि उन्हें तीन बातों के लिये धन प्राप्त करना पड़ता था—

(१) पिछले ऋण को चुकाने के लिये,

(२) अपने जीवन-निर्वाह के लिये और

(३) यदि उन पर मुकदमा चले, तो वे जज को घूस दे सकें।

प्राय: यह देखा जाता था कि जब शासक प्रांतीय लोगों पर बहुत अधिक अत्याचार करते थे, तब वे इसकी सूचना सीनेट को दे देते थे। इस पर सीनेट की ओर से इन शासकों पर मुकदमा चलता था, परंतु ये लोग घूस देकर छूट जाते थे। और प्राय: इनके छूट जाने का यह भी एक कारण होता था कि प्रत्येक सीनेटर प्रांतीय शासक बनने की आशा करता था। यदि वह आज किसी को दंड देने के लिये तैयार होता, तो कोई दिन ऐसा भी आता जिस दिन उसे भी दण्ड सहना पड़ता, इसलिये वे प्राय: किसी को दण्ड न देते थे।

इस प्रकार पाठकों ने देख लिया होगा कि प्रांतीय लोग किस प्रकार दिन पर दिन दबाए जा रहे थे।

७—ग्राची का रोम में सुधार का यत्न

यह पहले ही दिखाया जा चुका है कि रोमन राष्ट्र की कैसी भयानक दशा थी। साथ ही यह भी दिखाया जा चुका है कि केटो तथा स्किपियो रोम का भविष्यत् सोचकर क्यों डरते थे।

रोमन राष्ट्र के खतरे

यह बतलाने से पहले कि रोमन राष्ट्र की बुराइयाँ कैसे दूर हो सकती थीं, यह बतला देना अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है कि वह बुराइयाँ क्या थीं।

(१) रोमन नागरिक आलसी तथा आरामतलब हो गए थे। जो कोई इनके विलास तथा आनंद का जीवन व्यतीत करने के लिये साधन उपस्थित कर देता था, उसके हाथ में रहकर ये कठपुतली का काम करते थे, उन्हें वह जैसे चाहे, नचा सकता था। कुछ धनिक लोग इनको खिला पिलाकर तथा नाटक आदि मुफ्त दिखाकर अपना स्वार्थ सिद्ध किया करते थे। यह रोमन राष्ट्र के लिये बड़ी भयंकर बात थी।

(२) इटली में स्वतंत्र श्रमियों के स्थान पर दास ही कार्य किया करते थे। इस प्रकार स्वतंत्र श्रमी संख्या में बहुत ही कम हो रहे थे।

(३) इटैलियनों के साथ रोमन बुरा तथा कठोर व्यवहार करते थे और लैटिनों के साथ बड़े घमंड से पेश आते थे। इसका कारण यह था कि स्वार्थी तथा लोभी रोमन नागरिक यह कब पसंद करते कि हमारे अधिकार अन्य किसी के हाथ में चले जायँ।

(४) प्रांतों के निवासियों पर भयानक अत्याचार किए जाते थे।

सन् १३३ ई० पू० में रोम की बुराइयों को दूर करने के लिये यत्न किया जाने लगा। टिवैरियस ग्राकस रोम की धनिक श्रेणी का एक व्यक्ति था। उसने इटली की बुरी दशा अपनी आँखों देखी थी। स्पेन की लड़ाइयों में भी वह जा चुका था। उसे यह पता था कि स्पेनवालों के साथ रोमन कितना बुरा व्यवहार करते थे जब कि उनकी सेना स्वयं कितनी कमजोर थी। १३४ ई० पू० में उसने अपने आपको साधारण जनों द्वारा ट्रिब्यून चुना लिया तथा 'अग्रेरियन नियम' का प्रस्ताव पेश किया। रोम राष्ट्र की निजी भूमि बहुत अधिक थी। धनिक लोग बिना किसी प्रकार का लगान दिए मुफ्त में ही उसका प्रयोग करते थे। टिवैरियस ग्राकस इस भूमि को धनिकों से लेकर गरीबों में बाँटना चाहता था। धनिक यह कब पसंद करने लगे थे! रोम में १० ट्रिब्यून प्रबंध करने के लिये चुने जाते थे। धनिकों ने १० ट्रिब्यूनों में से एक को अपने पक्ष में कर लिया तथा टिवैरियस ग्राकस के विरुद्ध उसे

टिवैरियस का सुधार के लिये यत्न

खड़ा कर दिया। उन दिनों वहाँ यह प्रथा थी कि रोम में तब तक कोई नियम स्वीकृत या कार्य नहीं किया जा सकता था जब तक कि दसों ट्रिब्यून एक मत होकर सम्मति न दें। एक के भी विरोधी होने पर कोई नियम स्वीकृत या कार्य न किया जा सकता था। टिवैरियस ग्राकस ने जनसाधारण को उत्तेजित किया तथा विरोधी सम्मतिवाले ट्रिब्यून को पदच्युत करवाकर नियम पास करा लिया। यह घटना रोम के भविष्यत् के लिये अत्यंत हानिकर सिद्ध हुई; क्योंकि यदि नियम या सुधार प्राचीन नियमों को तोड़े बिना असंभव था, तो ऐसा सुधार कभी राष्ट्र का हित नहीं कर सकता था।

कुछ ही समय के उपरांत टिवैरियस ग्राकस को समझ आ गई। उसका नियम काम में लाना अत्यंत कठिन था; इसलिये उससे प्रजा का अधिक हित न किया जा सका। धनिक लोग उससे घृणा करते थे। टिवैरियस यह अच्छी तरह से जानता था कि यदि मैं अगले वर्ष भी ट्रिब्यून न चुना गया तो धनिक लोग अवसर पाकर मुझ पर कोई न कोई झूठा मुकदमा अवश्य चला देंगे। अतः टिवैरियस ने अपने ट्रिब्यून चुने जाने का बड़ा यत्न किया। धनिकों ने उसके चुनाव को रोकने की तरकीबें सोचीं। इसका परिणाम यह हुआ कि रोम में एक विद्रोह हुआ जिसमें टिवैरियस अपने ३०० साथियों सहित मारा गया। यह घटना १३३ ई० पू० की है। इसी समय रोम ने एक क्रांति के युग में प्रवेश किया जिसमें

प्राचीन नियमों का पालन करने का कोई प्रयत्न नहीं होता था। नगर में अनेक दल बने रहे। यदि कोई दल शांति से अपनी इच्छा पूरी करने में असमर्थ होता तो वह खून की नदियाँ बहा देता। रोम गृह-कलह का नगर बन गया।

टिबैरियस ग्राकस की मृत्यु के दस वर्ष बाद केअस सैंप्रोनिअस ग्राकस ने वही सुधार करने का यत्न किया। उसकी माता ने उसे इस कार्य से रोका, परंतु उसने न माना। माता को अपने बालकों का बड़ा अभिमान था। यह प्रसिद्ध था कि एक बार एक अमीर घराने की स्त्री ने केअस ग्राकस की माता कार्नेलिया को जब अपने रत्न के आभूषण दिखाने प्रारंभ किए, तब कार्नेलिया ने अपने बालकों को बुलाकर गोद में बैठाकर कहा—"देखो, यह मेरे रत्न हैं।" केअस ग्राकस का एक भाई टिबैरियस ग्राकस कैसे मारा गया, यह हम पहले ही बतला चुके हैं। माता को जो डर था, वह यह कि कहीं मेरा यह रत्न भी सदा के लिये मेरे हाथ से न जाता रहे।

केअस ग्राकस का सुधार

केअस ग्राकस अपने भाई से भी एक कदम आगे बढ़ गया। उसने राज्य को ही पलटने का यत्न किया। वह ट्रिब्यून चुना गया। उसने न अंतरंग सभा को पूछा न प्रबंधकारिणी सभा को; वह सीधे लोगों के पास जाकर नियम पास करवाने लगा। उसका उद्देश्य यह था कि धनिकों का राज्य बदलकर प्रजा का राज्य स्थापित किया जाय जिसका मुखिया

मैं बनूँ। पहले तो वह प्रजा का प्रेम-पात्र बना; क्योंकि उसने यह नियम पास करवाया कि साधारण जनों को गेहूँ कम दाम पर मिला करे। फिर उसने यह नियम बनाकर रोम के योद्धाओं को भी अपने वश में कर लिया कि प्रांतों का प्रबंध तथा रुपया एकत्र करने का अधिकार इन नाइट्स (योद्धाओं) को होना चाहिए। नाइटों (योद्धाओं) को यह अधिकार देकर केअस ग्राकस ने धनिकों में तथा उनमें लड़ाई करवा दी। वह स्वयं भी कहा करता था कि प्रजा के शत्रुओं के बीच में मैंने एक खंजर फेंक दिया है जिसमें वे आपस में ही लड़ मरें।

केअस ग्राकस की विफलता

जब केअस ग्राकस ने नाइट तथा जनसाधारण को अपने पक्ष में कर लिया, तब उसने अग्रेरिअन (कृषकों के संबंध का) नियम पास कराया तथा इटली और उसके बाहर के देशों में गरीबों को जमीन देकर नए नए उपनिवेश बसाए। जब तक उसने इस प्रकार रोमन लोगों का भला किया, तब तक रोमन उससे बहुत प्रसन्न रहे। परंतु जब वह दूसरी बार ट्रिब्यून बना, तब उसने लैटिन जाति के लोगों को रोम के नागरिक होने का अधिकार तथा इटैलियनों को लैटिन जाति के अधिकार देने का प्रस्ताव उपस्थित किया। रोमनों में स्वार्थ-भाव प्रबल हो चुका था; अतः उन्होंने यह नियम पसंद न किया, यद्यपि इटैलियनों तथा लैटिनों ने रोमनों का बहुत उपकार किया था। यदि यह न भी माना जाय तो भी रोम जैसे

एक नगर के लिये यह असंभव था कि वह सारे संसार का शासन कर सके। लैटिन तथा रोमन लोग एक ही जाति के थे। लैटिन लोग बीसों युद्धों में रोमनों के साथ साथ दुश्मनों से लड़े थे। यदि रोम को अपने नागरिक बढ़ाने की आवश्यकता पड़ती तो लैटिनों से बढ़कर कौन उनका अपना था जिसे वे नागरिक बनाते? और यदि रोम नागरिक न बढ़ाता तो यह असंभव था कि वह अपने प्रांतों को अपनी प्रबल शक्ति से शासित कर सकता। आगे चलकर हम देखेंगे कि अंत को रोम पर यहाँ विपत्तियाँ आकर पड़ीं और रोम को अपनी नागरिकता का अधिकार अन्यों को भी देना पड़ा। जो हो, रोम को अपने स्वार्थ के अंधेपन में केअस ग्राकस का प्रस्ताव पसंद न आया। अगले वर्ष वह ट्रिब्यून न चुना गया। उसने अपना जीवन रोम में शांति से व्यतीत करना चाहा, परंतु यह उसके भाग्य में बदा न था। १२१ ई० पू० में विद्रोह हुआ जिसमें वह तथा उसके अनुयायी मारे गए। पाठक स्वयं ही समझ सकते हैं कि प्राचीन रोम तथा मध्य कालीन रोम में कितना अंतर हो गया था। पहले धनिकों तथा साधारण लोगों के झगड़े किस प्रकार शांति से होते थे तथा किस प्रकार प्रत्येक रोमन राजनियम के अनुसार चलने का यत्न किया करता था। परंतु अब यह दशा हो गई थी कि प्रत्येक व्यक्ति नियम को तुच्छ समझता था तथा अपने स्वार्थ को मुख्य।

८—रोम में कुप्रबंध

केअस ग्राकस की मृत्यु के पश्चात् नोब्ल लोग जो चाहते थे, वह करते थे। उन्होंने कृषि संबंधी नियम पर कुछ भी ध्यान न दिया। इटली की दशा दिन पर दिन खराब होने लगी। दास लोग संख्या में इतने अधिक हो चुके थे कि उनको वश में रखना कठिन होने लगा। सिसली में, भागे हुए दास अपने आपको सेना में परिणत कर रोमन लोगों से पाँच वर्ष तक (१०४—९९ ई० पू०) लड़े, तब कहीं जाकर वे वश में आए।

सिसली में दास-युद्ध

नोब्ल लोगों ने इस समय रोम के मान का ध्यान रखना छोड़ दिया था। उन्हें दिन रात अपने जेब की फिक्र रहती थी। उन्होंने रोम पर बुरी तरह से राज्य करना आरंभ कर दिया। घूस लेने की उनको बुरी आदत पड़ गई थी। प्रांतीय राजा लोग उन्हें घूस देकर मनमाने काम करने लग गए। इस बात की सत्यता अफ्रिका के एक युद्ध से खूब प्रकट हो जाती है। कार्थेज के विनाश के अनंतर अफ्रिका में सब से बड़ा राज्य न्यूमीडिया का ही था। न्यूमीडिया का राजा रोमन लोगों का बड़ा पक्का मित्र था और कार्थेज के युद्धों में रोमन लोगों की ओर से कई बार लड़ चुका था। इसलिये रोमन लोग प्रायः

जगर्था के साथ युद्ध

न्यूमीडिया के राजा को सहायता दिया करते थे। इसी प्रकार न्यूमीडिया के राजा भी रोमन लोगों को समय समय पर सहायता देते रहते थे। ११८ ई० पू० में न्यूमीडिया का राजा तीन पुत्रों को राज्य का अधिकारी छोड़कर मरा। उनमें से एक पुत्र दत्तक था, जिसका नाम जगर्था था। जगर्था ने सारे राज्य को अपने ही हाथ में करने की ठानी और अपने एक भाई को उसने मार डाला तथा दूसरे के साथ युद्ध करना आरंभ किया। जब दूसरे भाई ने रोम से सहायता माँगी, तब सीनेट ने सहायता न दी; क्योंकि सीनेट के सभासदों को जगर्था ने घूस दे रखी थी। सिर्टा में जगर्था ने उसे घेर लिया तथा सेना समेत उसे नष्ट कर दिया (११२ ई० पू०)।

इस पर रोम के लोगों ने इस बात में हस्तक्षेप करना आवश्यक समझा तथा जगर्था को रोम में उपस्थित होने के लिये बुलाया। जगर्था रोम में अपने आप को निरपराध सिद्ध करने के लिये आया। उसने रोम में ही न्यूमीडिया के एक राजकुमार का वध किया जिससे वह डरता था। इतने पर भी सीनेट ने उसे कुछ भी न कहा; क्योंकि उसने सारी सीनेट को घूस दे रखी थी। अंत में जगर्था जिस समय रोम शहर से बाहर निकला, उस समय उसने रोम की ओर मुख करके कहा—"रोम, जहाँ प्रत्येक वस्तु बिकती है, वहाँ तुझे अपने आपको बेचना क्या कठिन हो सकता है, यदि तुझे खरीदनेवाला कोई मिल जाय"। रोमन लोगों ने

जगर्था के प्रति युद्ध उद्घोषित कर दिया; परंतु वह प्रत्येक सेनापति को, जो उसके साथ वहाँ पर युद्ध करने जाता था, घूस दे देता था। इस प्रकार तीन वर्ष तक उसके विरुद्ध कुछ भी न किया जा सका।

अन्त में (१०८ ई० पू०) क्विन्टस मैटेलस नामक एक धर्मात्मा सेनापति ने उसके विरुद्ध युद्ध करना आरंभ किया। मैटेलस युद्ध की समाप्ति कर देता, परन्तु १०६ ई० पू० में काउन्सल गेयस मैरियस उसके स्थान पर सेनापति होकर आया और मैटेलस को लौटना पड़ा।

गेयस मैरियस नीच कुल में उत्पन्न हुआ था, परंतु बड़ा वीर पुरुष था। अपनी वीरता से वह उन्नति करके मजिस्ट्रेट बना था। वह मैटेलस की सेना में सेनापति था; और साधारण सिपाही लोग उससे बड़ा प्रेम करते थे, क्योंकि वह उन्हीं लोगों की तरह सादे ढंग से रहता था। वह सब प्रकार के कष्ट सहन कर सकता था तथा साधारण सैनिकों से बातचीत करता रहता था। कहा जाता है कि मैटेलस उस पर इसलिये हँसा करता था कि वह नीच जाति का था; और यही कारण था कि मैरियस भी उससे घृणा रखता था। उसने अफ्रिका में किसी से सुना कि तुम इतने बड़े मनुष्य बन जाओगे जिसका तुम्हें कभी स्वप्न में भी ध्यान न आया होगा। इसलिये मैरियस

गेयस मैरियस का समुत्थान

ने अफ्रिका को छोड़ दिया और १०६ ई० पू० में काउन्सल बनने का यत्न किया। उसने मैटिलस की गलती बताई और कहा कि मुझे अफ्रिका में जगर्था के साथ युद्ध करने के लिये भेजो; मैं उसे जीत लूँगा। इस पर लोगों ने उसे काउन्सल बना दिया और साथ ही मैटिलस के स्थान पर उसे सेनापति बनाकर अफ्रिका भेजा।

मैरियस ने अफ्रिका में युद्ध का अंत कर दिया और जगर्था को कैद कर विजय-ध्वनि के साथ १०४ ई० पू० में इटली में प्रवेश किया। परंतु पाठकों को स्मरण रखना चाहिए कि यदि सेनापति लोग धर्म से काम करते, तो इस युद्ध का अंत कभी का हो जाता। अस्तु। इस समय मैरियस जहाँ सेनापति था, वहाँ लोगों का अग्रणी भी था और इस प्रकार रोम में उसकी बड़ी प्रतिष्ठा हो गई थी।

रोम में सैनिक दल

हनीबाल के समय के अनन्तर रोम की सेना में बड़ा भारी परिवर्तन हो गया। रोमन सिपाही अब उस प्रकार के नागरिक न रहे थे कि जब काम पड़ता, तब तो लड़ने चले जाते और युद्ध की समाप्ति पर पुन: अपने अपने कार्य्यों में आकर लग जाते। युद्ध लगातार दूर दूर के देशों में होते रहते थे, अत: सेना में लोगों को जीवन पर्य्यंत रहना पड़ता था। इस प्रकार युद्ध करना बहुत से लोगों का पेशा सा हो गया था। मैरियस इस प्रकार के सिपाहियों से बड़ी सहानुभूति रखता था; क्योंकि

वह स्वयं सिपाही था और सिपाहीपन के काम से ही वह इस उन्नत अवस्था तक पहुँचा था।

अब पाठकों को यहीं पर यह बात देख लेनी चाहिए कि जब मैरियस काउन्सल बनाया गया, तब यह आवश्यक था कि राज्य में सेना का भी हाथ उसी प्रकार हो, जिस प्रकार कि नोब्लों तथा जाति के और लोगों का होता था।

मैरियस को अब एक और युद्ध के लिये तैयार होना पड़ा। असभ्य लोगों के दो बड़े बड़े जत्थे उत्तर की ओर से गाल में घुसे और रोम को उनके आक्रमण का भय होने लगा। वे असभ्य लोग अपने बाल-बच्चों के साथ इस देश में घुसे थे और बड़ी भीषणता से लड़ते थे। रोम के सेनापति को गाल के दक्षिण में किंब्रो ने बड़ी भारी शिकस्त दी। इस युद्ध के अनन्तर रोम को डर होने लगा कि कहीं पहले की तरह हमारे शहर में फिर न आग लगा दी जाय। अत: मैरियस को वे लगातार पाँच साल तक काउन्सल बनाते रहे। यह बात नियम के विरुद्ध थी और इससे पहले कभी रोम में न हुई थी। इससे पता लगता है कि रोम को उन आक्रमणकारियों का कितना डर हो गया था और मैरियस कितना शक्तिशाली पुरुष था। १०२ ई० पू० में ट्यूटन और किंब्रो इटली पर आक्रमण करने के लिये बढ़े, परंतु मैरियस ने उन्हें दो बड़े युद्धों में हराया। इस विजय के पश्चात् जब वह लौटकर रोम में आया, तब वह इतना शक्ति-

ट्यूटन और किंब्री से युद्ध

शाली हो चुका था कि जो कुछ वह चाहता, कर सकता था। साधारण लोग उसके बहुत अधिक कृतज्ञ थे; सेना के लोग उससे बहुत प्रेम करते थे और नोब्ल लोग उससे बहुत डरते थे।

मैरियस पक्का स्वार्थी था। सब बातों में वह अपने लाभ को ही मुख्यता देता था। यही कारण था कि प्रथम बार उसने जाति का पक्ष लिया; और जब ल्यूसियस अपालियस सटर्नियस नामक एक ट्रिब्यून ने, केअस ग्राकस की तरह, कृषि संबंधी नियम उपस्थित किया तो उसने उसका भी साथ दिया। परंतु अंत में इससे झगड़ा बढ़ा और सिनेट ने मैरियस से प्रार्थना की कि तुम इस झगड़े को दबा दो। इस पर कुछ देर तक मैरियस असमंजस में रहा, परंतु अंत में उसने कहना मान लिया जिससे सटर्नियस ९९ ई० पू० में मारा गया। इस पर किसी पक्ष ने भी उसको अच्छा न समझा; क्योंकि उन्होंने सोचा कि वास्तव में वह किसी का मित्र नहीं है, सदा अपनी ही शक्ति की वृद्धि पर ध्यान रखता है। इसके उपरांत रोम में मैरियस राज-कार्य्यों में प्रधान न रहा।

रोम में मैरियस

यह गड़बड़ी दिन पर दिन बढ़ने लगी। इटैलियन रोम-वालों से बेहद नाराज हो गए थे; क्योंकि रोम इटैलियनों से बड़ी निर्दयता से व्यवहार करता था। इतना ही नहीं किंतु लैटिनों को भी आज्ञा दी गई कि वे रोम नगर छोड़कर चले जायँ। इन बुराइयों को

मार्कस लिवियस ड्रूसस

देखकर मार्कस लिवियस ड्रूसस नामक एक ट्रिब्यून ने ६१ ई० पू० में यह प्रस्ताव उपस्थित किया कि इटैलियनों को रोम के नागरिक होने का अधिकार मिलना चाहिए। परंतु नोबल्स तथा साधारण लोग दोनों ही इस नियम के उपस्थित होने के कारण क्रुद्ध हो गए। जिस दिन वोट लिया जाने को था, उसी दिन ड्रूसस मार डाला गया। मरते समय उसने कहा था—"रोम को मेरे जैसा नागरिक कब मिलेगा?"

इस वध के समाचार से इटैलियन लोग एक दम भड़क गए। उन्होंने सोचा कि बिना जबर्दस्ती किए हमें अधिकार न मिलेगा; इसलिये उन्होंने युद्ध करने की ठान ली। इनके सरदार सैमनाइट थे। ६० ई० पू० के आरंभ में सारा इटली दो हिस्सों में बँट गया जिनमें एक हिस्सा दूसरे से लड़ता था। एक वर्ष के युद्ध के अनंतर रोम ने सोचा कि हो न हो, मुझे हार माननी पड़ेगी और इटैलियनों को अधिकार देने ही पड़ेंगे; अतः उन्होंने यह कार्य्य धीरे धीरे करना आरंभ किया। पहले पहल तो उन्होंने रोम के नागरिक होने का अधिकार उन सब इटैलियनों को दिया जिन्होंने अभी तक विद्रोह नहीं किया था। थोड़े समय के उपरांत उसने यह अधिकार उन्हें देने के लिये भी कहा जो दो महीनों के अंदर अपने शस्त्र रख दें।

इटैलियनों के साथ युद्ध

इस प्रकार रोम ने उन सब लोगों को अपने वश में कर लिया जो बहुत बड़े शत्रु नहीं थे; और इसके पश्चात् वह

सैमनाइट जाति के लोगों से युद्ध करने के लिये तैयार हुआ जिन्होंने अपना पुराना बल फिर इस समय दिखाया था। इस युद्ध में रोमन लोगों में एक और शक्तिशाली पुरुष उत्पन्न हो गया जिसका नाम ल्यूसियस कार्नीलियस सुल्ला था। इसने मेरियस की अधीनता में रहकर लड़ना सीखा था। परंतु इसने अपने आपको राज्य के कार्य्य में डालना आवश्यक न समझा और न इसने उस समय अपने आप को प्रबल करने का ही यत्न किया। रोम की ओर से ८६ ई० पू० में वह सैमनाइट लोगों के साथ युद्ध करने के लिये भेजा गया और इसने उन्हें हरा दिया।

८६ ई० पू० के अंत में सैमनाइट तथा ल्यूकैनियन को छोड़कर इटली के और सभी लोग फिर से रोम के अधिकार में आ गए और उन्होंने रोम के नागरिक होने का अधिकार प्राप्त किया।

गृह-युद्ध के परिणाम

यह गृहयुद्ध समाप्त हो गया था, परंतु इसका परिणाम अवश्यमेव ध्यान देने योग्य है। रोम को अपना दुर्व्यवहार छोड़कर पुराने मार्ग का पुनः अवलंबन करना पड़ा और दूसरों को भी समान अधिकार देने पड़े। इस युद्ध में बहुत से घर नष्ट हो गए और खेती का नाश भी वैसा ही हुआ जैसा कि हनीबाल के युद्ध के समय में हुआ था। इस युद्ध के उपरांत पहले की अपेक्षा रोम में कम खेत दिखाई देने लगे और लोग खेत जोतने के स्थान पर सिपाही बनने लगे।

पाठकों ने यह देख ही लिया होगा कि रोम में सेना दिन पर दिन बढ़ रही थी। सेना में भर्ती होनेवाले लोग साधारण लोगों की अपेक्षा अच्छी दशा में थे। साधारण लोग अपना समय आलस्य या खेल तमाशे में ही व्यतीत किया करते थे; क्योंकि भोजनादिक तो उन्हें सिनेट की ओर से मिल ही जाया करता था। साथ ही पाठकों ने यह भी देख लिया होगा कि रोम में साधारण लोगों की अपेक्षा सेना अधिक आवश्यक हो रही थी और सेनापति मॅजिस्ट्रेट की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली थे। जब ऐसी अवस्था थी, तब यह बात आवश्यक ही थी कि प्रत्येक कार्य्य में झगड़े हों; क्योंकि सिनेट तब तक कुछ न कर सकती थी, जब तक सेनापति लोग सहमत न हों। और यही कारण है कि रोम के अगले पचास वर्ष केवल गृह-युद्ध में ही बीते।

गृह-युद्ध के कारण

९—रोम से गृह-युद्ध

यदि केवल गृहयुद्ध का ही अंत करना सिनेट के लिये एक कार्य्य होता तब भी कोई बात था। परंतु इस गृह-युद्ध के समय में ही पूर्वीय देश में एक शक्तिशाली पुरुष उत्पन्न हो गया था जिसका दबाना रोम के लिये इस समय आवश्यक हो गया था। इस शक्तिशाली पुरुष का नाम मिथ्राडेटीज था। यह पोराटस का राजा था। इसने पहले अपने आस-पास के देशों को जीतना आरंभ किया। जब रोम ने इसे रोका, तब यह कुछ समय के लिये तो रुक गया, परंतु फिर कुछ समय के उपरांत अपना वह विजय कार्य्य आरंभ कर दिया। इस पर रोम तथा मिथ्राडेटीज में ८८ ई० पू० में युद्ध छिड़ गया। इस समय ल्यूसस कार्नीयस सुल्ला रोम में काउन्सल था; अतः सिनेट ने इसे ही युद्ध जीतने के लिये भेजना निश्चित किया।

मिथ्राडेटीज के साथ युद्ध

यद्यपि इस समय मैरियस वृद्ध था, तथापि मिथ्राडेटीज के साथ युद्ध करने के लिये वह जाना चाहता था। अतः वह पी० सल्पिसियस रुफस नामक एक ट्रिब्यून से मिल गया। सल्पिसियस ने थोड़े समय के उपरांत ही लोगों के सामने कुछ ऐसे प्रस्ताव

मैरियस और सुल्ला

तथा नियम उपस्थित किए जो सिनेट के विरुद्ध पड़ते थे। उन नियमों में से एक नियम मैरियस को युद्ध के लिये भेजने के विषय में भी था। जब यह समाचार सुल्ला की सेना में पहुँचा, तब उसने रोम पर चढ़ाई कर दी। मैरियस तो रोम से बाहर निकाल दिया गया और सल्पिसियस जान से मार डाला गया।

यह पहला ही अवसर था जब कि रोम को रोम की ही सेना ने हस्तगत किया था। परंतु यह बात आगे चलकर बहुत से लोगों ने की थी; अत: इसे अंतिम ही न समझना चाहिए। सुल्ला रोम में देर तक न ठहर सका; परंतु चलते समय वह कुछ ऐसे नियम स्वीकृत करा गया जिससे सिनेट तो दृढ़ हो गई, परंतु ट्रिब्यूनों की शक्ति बहुत कम हो गई। इसके पश्चात् यह सोचकर कि अब रोम में मेरे विरुद्ध कोई कार्रवाई न होगी, सुल्ला मिथ्राडेटीज के साथ युद्ध करने के लिये चला गया।

पूर्वीय देशों में सुल्ला

सुल्ला एशिया में ठीक समय पर पहुँचा; क्योंकि मिथ्राडेटीज ने एशिया माइनर में अभी प्रवेश ही किया था। कहा जाता है कि वहाँ उसकी आज्ञा से १५००० इटैलियन मार डाले गए थे। इस समय सुल्ला के सिर पर कई बातें आ पड़ीं; क्योंकि ग्रीसवालों ने भी विद्रोह कर दिया था और वे मिथ्राडेटीज से मिल गए थे। सुल्ला ने अपनी एक सेना ग्रीस में भेज दी जिससे उसने कुछ समय के पश्चात् पुन: ग्रीस को जीत लिया। इसी बीच में मिथ्राडेटीज भी लोगों में अप्रिय हो गया था,

अतः ८४ ई० पू० में जब एक दूसरी सेना रोम से एशिया में पहुँची, तब मिथ्राडेटीज को रोम के साथ संधि करनी पड़ी। संधि करते ही सुल्ला रोम की ओर लौटा, क्योंकि रोम में पुनः विक्षोभ हो गया था।

मैरियस को भागने पर बड़े बड़े कष्टों का सामना करना पड़ा। अफ्रिका जाने के लिये वह एक जहाज पर रवाना हुआ; परंतु जहाजवालों ने उसे कहीं का कहीं उतार दिया। मिंटर्नी नामक स्थान पर उसका पीछा किया गया।

मैरियस का देश-निकाला।

उसने एक स्थान पर अनुचरों की दृष्टि से अपने आपको बचाने के लिये दलदल में छिपा दिया; परंतु अंत में वह कैद कर लिया गया। मिंटर्नी के मैजिस्ट्रेट ने उसको मार डालने के लिये एक दास को भेजा; परंतु जब वह मैरियस के पास पहुँचा, तब मैरियस ने आँखें फाड़कर बड़े जोर से कहा—"हैं! तू मैरियस को मारने का साहस करता है!" इस पर उस दास के हाथ से तलवार गिर पड़ी और वह मारे डर के वहाँ से भाग निकला। इस पर मैजिस्ट्रेट को लज्जा आई और उसने मैरियस को छोड़ दिया। वहाँ से निकलकर वह अफ्रिका में पहुँचा। वहाँ एक दिन वह कार्थेज के खँडहरों में बैठा हुआ था कि गुप्तचर उसके पास आ पहुँचे। इस पर तंग आकर उसने गुप्तचरों से कहा कि जाओ, रोम से कह दो कि "मैरियस को हमने कार्थेज के खँडहरों में बैठा

हुआ पाया"। परंतु सब दिन एक से नहीं जाते। समय आया जब कि मैरियस के दु:खों का अंत हुआ। रोम में दो काउन्सलों में झगड़ा हो गया था। एक काउन्सल तो सुल्ला के पक्ष में था जो मिथ्राडेटीज से युद्ध करने के लिये गया हुआ था; और दूसरा मेरियस के पक्ष में था जो कार्थेज के खँडहरों में दिन बिता रहता था। परंतु अंत में कार्मीलियस सिन्ना ने, जो मैरियस के पक्ष में था, एक सेना इकट्ठी कर ली और मैरियस को रोम में पुन: बुला लिया। इस पर मैरियस के भाग्य पलटे और वह रोम में आ गया।

मैरियस के दु:खों का अंत हुआ और वह रोम में पुन: लौट आया। उसने और सिन्ना ने प्रत्येक विरोधी नोब्ल को मारना आरंभ कर दिया। कहा जाता है कि रोम के दरवाजे पाँच दिन तक बन्द रहे। सिन्ना और मैरियस नित्य गलियों में एक सेना को साथ लिए घूमते थे और जिसको चाहते थे, उसको मरवा देते थे। ८६ ई० पू० में मैरियस सातवीं बार काउन्सल बनाया गया। परंतु वह अपनी इस शक्ति का अधिक समय तक उपभोग न कर सका। ७० वर्ष की अवस्था में वह मर गया। उस समय रोम का प्रत्येक निवासी उसकी क्रूरता के कारण उसे घृणा की दृष्टि से देखता था।

सिन्ना और सुल्ला

सिन्ना ८४ ई० पू० तक रोम में प्रधान रहा, परंतु जब उसने सुना कि सुल्ला रोम की ओर आने की तैयारी कर रहा है;

तब उसने सुल्ला से पूर्वीय देशों में ही मिलना सोचा, परंतु वह अन्कीना नामक स्थान पर मारा गया। जब सुल्ला इटली में पहुँचा तब उसके साथ केवल ४०००० सिपाही थे, पर काउन्सल के पास १००००० सिपाही थे। इसलिये उसने रोम में जाना उचित न समझा। वह इटली के दक्षिण में ही रह गया और वहाँ लोगों को अपने सद्व्यवहार से वश में करने लगा।

८२ ई० पू० में विक्षोभ बहुत बढ़ गया। सैम्नाइट जाति, जिसे गृह-युद्ध की समाप्ति पर भी रोम शान्त न कर सका था, मैरियस के दल के साथ मिलकर रोम पर आ चढ़ी। यदि सुल्ला पीछे से न आ जाता तो वह रोम को मटियामेट ही कर देती। रोम की शहरपनाह के बाहर ही सुल्ला की सेना के साथ इसका युद्ध हो गया जिसमें बड़ी कठिनता से सुल्ला इसे हरा सका। रोम की रक्षा हुई और सुल्ला पूर्ण रूप से रोम का स्वामी बन गया। वह जो कुछ चाहता, कर सकता था। यहाँ पर पाठकों ने देख लिया होगा कि पिछले पाँच वर्षों से किस प्रकार रोम की सारी शक्ति एक ही मनुष्य के हाथ में रही, और सिनेट तथा प्राचीन नियमों की किस प्रकार उपेक्षा की जाती थी। इस समय भी सुल्ला ही इस बात का निर्णय कर सकता था कि कौन सा राज्यप्रबंध मुझे रोम में रखना चाहिए।

सुल्ला की विजय

रोम में आकर सुल्ला ने भी मैरियस से कम क्रूरता नहीं की। उसने आते ही अपने विरोधियों को मरवाना आरंभ

किया। कहते हैं कि वह नित्य कुछ लोगों की सूची तैयार कर लेता था और दूसरे दिन उनको मार डालने की आज्ञा दे देता था। इस प्रकार उसने रोम के ४७०० मुख्य मुख्य आदमी मरवा डाले और उनकी जायदाद बेचकर राज्य के कार्य्य में लगा ली। इसका परिणाम यह हुआ कि राज्य के बहुत से लोग सहसा धनी हो गए तथा बहुत से लोग दूसरों को घात करके स्वयं धनी होने की आशा करने लग गए। यदि विचारपूर्वक देखा जाय तो जान पड़ेगा कि राज्य को स्थिर करने का यह एक बड़ा भयानक उपाय है और इसमें सफलता तथा उन्नति की आशा बहुत ही कम है।

सुल्ला का राज्य-प्रबंध

इस प्रकार जब सुल्ला ने अपने शत्रुओं से छुटकारा पाया, तब उसने राज्य की व्यवस्था करना आरंभ कर दिया। वह डिक्टेटर बना तथा उसने सिनेट को मजबूत करवाने के लिये बहुत से नियम स्वीकृत करवाए। जब वह यह काम कर चुका, तब उसने ८० ई० पू० में अपने आपको काउन्सल बनाया तथा उसने बताया कि एक काउन्सल को किस प्रकार प्रबंध करना चाहिए। इसके पश्चात् उसने राज्य के सब काम धंधे छोड़ दिए और एक शान्त गृह में चला गया। ७८ ई० पू० में जब वह मरा, तब उसे बड़े ठाठ बाट और बाजे गाजे के साथ दफन किया गया। कहते हैं कि रोम में इतना मान इसके पहले किसी को न मिला था।

सुल्ला की मृत्यु के पश्चात् पहले पहल तो यही मालूम पड़ता था कि रोम में शांति रहेगी, परंतु पुरानी बुराइयाँ फिर फूट निकलीं। जातीय युद्ध तथा गृह-युद्ध के कारण इटली का बहुत अधिक सत्यानाश हुआ था और इसकी जन-संख्या पहले की अपेक्षा बहुत कम हो गई थी। यह बात सत्य है कि सुल्ला ने पुनः सैनिक उपनिवेश स्थापित किए, परंतु सैनिक लोगों को कहाँ चैन पड़ता था। वे अपनी अपनी जमीनें बेचकर फिर नगरों में रहने के लिये आ जाते थे तथा दासों द्वारा खेती पुनः आरंभ हो जाती थी। सुल्ला ने सिनेट तथा नोब्ल लोगों के राज्य को पुनः शक्तिशाली किया, परंतु वे उस शक्ति को अपनी इच्छाओं की पूर्त्ति में ही लगाने लग गए। धन के प्रति उनका लोभ ज्यों का त्यों रहा और उन्होंने पहले की अपेक्षा ज्यादा रुपया इकट्ठा करना आरंभ कर दिया। इस प्रकार उनके स्वार्थ का कोई अंत न था। उनकी शक्ति परदेश में दिन पर दिन कम होने लग गई, और चारों ओर के लोग असंतुष्ट होकर पुनः विद्रोह करने के लिये तैयार हो गए।

सुल्ला की मृत्यु पर विक्षोभ

क्विंटस सर्टोरियस के द्वारा प्रेरित होकर स्पेन ने रोम के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। सर्टोरियस पहले मैरियस की सेना में एक सेनापति था। सुल्ला के रोम विजय काल में यह वहाँ से भागकर स्पेन में आ गया था और वहाँ उसने सेना

स्पेन में सर्टोरियस के साथ युद्ध

एकत्र करना प्रारंभ कर दिया था जिसमें उसने गालवालों को, स्पेनवालों को तथा अपनी ही तरह कुछ भागे हुए रोमन लोगों को शामिल कर लिया था।

रोमन लोग कई वर्षों तक उसका कुछ भी न कर सके। उन्होंने पाम्पियस को उसके विरुद्ध भेजा, परंतु वह भी उसका कुछ न कर सका। अंत में स्पेनवालों ने सर्टोरियस का साथ छोड़ना शुरू किया। इस पर उसे भी अपने साथियों पर संदेह होने लग गया। कुछ काल के अनंतर कुछ सेनापतियों ने उसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा तथा ७२ ई० पू० में उसका घात कर दिया। उसकी मृत्यु होने पर रोमन लोगों ने विद्रोहियों को दबा दिया तथा स्पेन को पुनः अपने हाथ में कर लिया।

पूर्वीय देशों में विक्षोभ

रोमन लोगों के लिये एक और बड़ा कठिनाई थी जिसे दूर करना भी उनके लिये आवश्यक था। भूमध्य सागर में समुद्री डाकुओं के झुंड के झुंड फिर रहे थे जो रोमन व्यापार को बड़ा भारी नुकसान पहुँचाते थे। मिथ्राडेटीज भी पोंटस की सेना को इकट्ठा करने का विचार कर रहा था। ७४ ई० पू० में वह भी रोमन लोगों से लड़ पड़ा। पहले पहल तो रोमन लोगों ने मिथ्राडेटाज को उसके देश पोन्टस से निकाल दिया, परंतु आर्मीनिया के राजा से सहायता लेकर उसने रोमन लोगों को बड़ी भारी शिकस्त दी (६७ ई० पू०) और तब वह अपने देश

को पुनः लौट आया। उसी समय रोमन लोगों का समुद्री बेड़ा भी समुद्री डाकुओं के विरुद्ध अकृतकार्य हुआ।

ये सब बातें बता रही हैं कि रोम की सिनेट विदेश में शासन-प्रबंध करने के लिये किस प्रकार अयोग्य थी। इसी समय रोम-

ग्लैडिएटरों का विद्रोह

वालों को एक और भयानक युद्ध करना पड़ गया जिससे पता चलता है कि रोम की अपने घर में ही कैसी बुरी हालत थी। यह युद्ध ग्लैडिएटर लोगों के साथ हुआ था। ग्लैडिएटर वे लोग थे जो आपस में ही युद्ध करने के लिये तैयार किए जाते थे। ये प्रायः वे कैदी होते थे जिन्हें रोमवाले युद्ध में पकड़कर लाया करते थे।

स्पार्टकस नामक एक पुरुष के साथ बहुत से ऐसे कैदी कपुआ के जेल से भाग निकले। उसके साथ अन्य जेलों से भाग भागकर ऐसे कैदी तथा दूसरे दास और उपद्रवी लोग आकर मिलने लग गए और थोड़े ही समय में स्पार्टकस के पास ४०००० आदमी हो गए।

स्पार्टकस एक साहसी पुरुष था। वह इन लोगों को एल्प्स पार कराकर जर्मनी या गाल में, जो कि उनकी जन्म-भूमि थी, ले जाना चाहता था। परंतु उन लोगों ने वहाँ जाने की, अपेक्षा इटली को लूटना ही अधिक पसंद किया। इसी बीच में रोम के दो बड़े सेनापतियों को भी इन्होंने हरा दिया तथा रोम को अपने ऊपर इनके आक्रमण का भय होने लग गया। परंतु थोड़े ही समय के उपरांत उन ग्लैडिएटर

लोगों का आपस में झगड़ा हो गया। इसका परिणाम यह हुआ कि ७१ ई० पू० में रोमन सेनापति मार्सस क्रासस ने उनको हरा दिया। उसी समय पाम्पियस भी पीछे से इन पर आ पड़ा और उसने इनका सर्वथा नाश कर दिया।

बहुत से लोगों ने समझा था कि पांपियस भी रोम में अपनी सेना के साथ आवेगा और जो कुछ उसके मन में आवेगा, वह करेगा। परंतु ऐसा न हुआ। उसने आते ही अपनी सेना अलग कर दी और साधारण नोब्ल की तरह रहने लगा। ७० ई० पू० में क्रासस तथा पांपियस को लोगों ने रोम का काउन्सल बनाया। पांपियस ने रोम में प्रजा तथा नोब्ल दोनों को ही प्रसन्न रखा। इस पर लोगों ने समझा कि रोम में एक ही ऐसा आदमी है जो समुद्री डाकुओं को दबा सकता है। अतः उन्होंने उसे ६७ ई० पू० में समुद्री डाकुओं के विरुद्ध लड़ने के लिये सेनापति बना दिया। तीन महीनों में इसने उन डाकुओं से भूमध्य सागर खाली कर दिया, सिलीसिया तक उनका पीछा किया तथा उनका सबसे बड़ा अड्डा मटियामेट कर दिया।

पांपियस की शक्ति

मिथ्राडेटीज दिन पर दिन एशिया में जोर पकड़ रहा था। सिनेट ने जितने सेनापति भेजे, वे सब अकृतकार्य हुए, इसलिये अंत में एक ट्रिब्यून ने पांपियस को पूर्वीय देशों में भेजने का प्रस्ताव किया, परंतु सिनेट ने इसका विरोध किया। इस पर प्रजा ने

पूर्वीय देशों में पांपियस

पांपियस को ही भेजा। इससे सिनेट को इस बात का अनुभव हो गया कि प्रजा जिसे चाहे, वही सब कुछ कर सकता है, सिनेट उसे नहीं रोक सकती।

पांपियस ६६ ई० पू० में मिथ्राडेटीज के विरुद्ध गया; परंतु जब वह पांपियस का मुकाबला न कर सका, तब आर्मीनिया की ओर भाग गया। इतने में उसका पुत्र ही उसके विरुद्ध हो गया। जब मिथ्राडेटीज को यह पता लगा, तब उसने ६३ ई० पू० में इसलिये आत्मघात कर लिया कि कहीं मैं रोम के हाथ में न पड़ जाऊँ।

पांपियस वहाँ से सीरिया, जुडिया आदि देशों को जीतता हुआ जेरूसलम में पहुँचा। वहाँ उसने यहूदियों का एक मंदिर देखा। उसमें जब वह घुसा, तब उसने देखा कि लोग बिना किसी प्रकार की मूर्ति के ही ईश्वर की प्रार्थना करते हैं। इस पर वह बहुत आश्चर्यान्वित हुआ; क्योंकि रोम में बिना देवी देवताओं के पूजा करना कोई जानता ही न था। इसके पश्चात् वह पांटस, सिलीसिया और क्रीट को रोम का प्रांत बनाता हुआ ६१ ई० पू० में एक महान् विजयी के रूप में फिर रोम आ पहुँचा।

परंतु जिस समय पांपियस प्रांतों में शांति स्थापन कर रहा था, उस समय सिनेट का प्रबंध पुनः शिथिल होने लग गया था।

रोम में विक्षोभ

क्योंकि थोड़े समय से ऐसे लोगों का एक जत्था रोम में उत्पन्न हो गया था जिसका मुख्य कार्य्य सिनेट तथा नोब्लों का विरोध करना ही था।

हम देख ही चुके हैं कि सुल्ला ने किस प्रकार कुछ समय के लिये इस जत्थे को दबाया था तथा सिनेट को शक्तिशाली बनाया था। परंतु इस समय पुन: यह जत्था प्रबल हो गया था तथा सिनेट की शक्ति कम हो गई थी। पांपियस सुल्ला का मित्र था, अत: नोब्ल लोगों के पक्ष में था। परंतु नोब्ल लोग उसकी शक्ति से डरते थे और उसे नोब्ल लोगों पर विश्वास न था।

रोम के मुख्य पुरुषों में एक तो मार्सस पार्सस कैटो था। यह पुराने रीति रिवाज तथा पुराने नियमों को बहुत पसंद करता था। साथ ही पुराना राज्य प्रबंध भी फिर से स्थापित करना पसंद करता था। दूसरा मार्सस लिसिनियस क्रासस था। इसने बहुत सा धन इकट्ठा कर लिया था जिसे वह दिन पर दिन बढ़ाता जा रहा था। वह दोनों पक्षों को प्रसन्न रखता था; और इसी प्रकार वह जो कुछ चाहता था, कर लेता था।

रोम के मुख्य पुरुष

तीसरा व्यक्ति मार्सस ट्यूलियस सिसरो था। यह उच्च कुल का न था, किंतु अपनी योग्यता से इसने राज्य में अच्छी उन्नति कर ली थी। यह बड़ा भारी व्याख्याता था। इसके बहुत से व्याख्यान आजकल भी हमें मिलते हैं, जिनसे रोम की उस समय की अवस्था का बहुत कुछ पता चलता है। वह नरम दल का था और रोम में शांति स्थापित करना चाहता था। इसमें शक नहीं कि वह रोम में आई हुई बुराइयों को

बहुत बुरा समझता था तथा उन्हें दूर करना चाहता था। वह सिनेट के द्वारा राज्य-प्रबंध पुनः सुधारना चाहता था, परंतु वह उसे बिलकुल ही बदलना नहीं चाहता था।

चौथा व्यक्ति केयस ज्यूलियस सीजर था जो उच्च वंश का था। सिन्ना की लड़की से इसका विवाह हुआ था तथा मार्सेस का विवाह इसकी चाची से हुआ था। यही कारण था कि प्रत्येक पक्ष के लोग इसे अच्छा समझते थे। इसने सिनेट को ही बिलकुल तोड़ देने का विचार किया था तथा लोगों के नाम पर यह स्वयं राज्य करना चाहता था। परंतु अभी तक इसके पास सेना न थी, अतः यह रोम में बैठा हुआ उपयुक्त समय की प्रतीक्षा कर रहा था।

कैटिलीना के कार्य्यों से पता चलता है कि उस समय रोम की कितनी बुरी दशा थी। कैटिलीना सुल्ला का मित्र था।

कैटिलीना का षड्यंत्र

परंतु वह ऋणी हो गया था, इसलिये कुछ गिरे हुए मनुष्यों के साथ मिल गया। उसने सोचा कि यदि मैं रोम के राज्य-प्रबंध में कुछ उलट पलट कर सकूँ तो मुझे बहुत सा रुपया मिल सकता है। इसलिये वह प्रजा के साथ मिल गया और उसने कहा कि मुझे काउन्सल बना दिया जाय। परंतु सन् ६३ ई० पू० में वह नहीं चुना जा सका। सिसरो कहता था कि तत्पश्चात् उसने मुझे मारने, शहर में आग लगाने तथा लोगों को दिल खोल-कर लूटने का विचार किया था। यद्यपि सिनेट ने उसकी इस

बात पर विश्वास किया, परंतु वह स्वयं कुछ न कर सकती थी, क्योंकि कैटिलीना को कैद करने में वह डरती थी। जब कैटिलीना ने रोम को छोड़ दिया और एक सेना बनाना आरंभ किया, तब सिसरो ने उसके पक्षवालों के लिये प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी। अगले वर्ष कैटिलीना सिनेट के विरुद्ध लड़ता हुआ मारा गया और उसकी सारी सेना तितर बितर हो गई। पाठकों ने देख लिया होगा कि रोम की कैसी बुरी दशा थी। राज-नियम तथा राजाज्ञा की कोई परवाह ही न करता था। प्रत्येक व्यक्ति काउन्सल बनने का इसलिये यत्न करता था कि मैं यह पद प्राप्त करके ज्यादा रुपया इकट्ठा कर सकता हूँ। लोगों को अंत तक पता न चला कि कैटिलीना बुरा था या अच्छा था। इसलिये उन्होंने सिसरो को देशनिकाला दे दिया; क्योंकि उसने बिना किसी प्रकार मुकदमा चलाए ही कैटिलीना के साथियों को प्राणदण्ड की आज्ञा दे दी थी।

इस घटना से पता लगता है कि एक मैजिस्ट्रेट के लिये यह निर्णय करना कि "कौन अपराधी है और कौन अपराधी नहीं है" कितना कठिन था; तथा रोम में दलबंदी और पक्षपात के विचार से किस प्रकार प्रत्येक बात का निर्णय होना आरंभ हो गया था।

यह उस समय की दशा थी जब ६१ ई० पू० में पांपियस रोम में लौटा था। लोग सोच रहे थे कि वह भी अपनी सेना रोम में ले आवेगा तथा सिनेट को अपने इच्छानुसार चला-

वेगा। परंतु उसने ऐसा न किया; और वह एक साधारण नोब्ल की भाँति वहाँ जीवन व्यतीत करने लगा। परंतु वह सिनेट से छोटी छोटी बातों पर हुज्जत करने लग जाता था। यह देखकर सीजर ने इस बात से लाभ उठाना चाहा। वह क्रासस तथा पांपियस से मिला और उनसे बोला कि चलो, हम तीनों मिलकर राज्य का काम करें। इस पर वे दोनों राजी हो गए। ५९ ई० पू० में सीजर काउन्सल बना। बनते ही उसने कृषि-संबंधी नियम स्वीकृत कराए जिनसे पांपियस के सैनिकों को जमीनें दे दी गईं। इसके पश्चात् उसने लोगों से एक और नियम स्वीकृत कराया जिसका अभिप्राय यह था कि सीजर गाल का शासक हो जाय और उसे एक बड़ी सेना मिल जाय। सीजर ने इस प्रकार जो कुछ सोचा था, वह प्राप्त कर लिया। उसके दिल में यह बात बहुत समय से जमी हुई थी कि मैं अपने आपको वीर पुरुष प्रमाणित करके रोमन लोगों का प्रिय बन जाऊँ। इतना ही नहीं, किंतु वह सोचता था कि अब मैं पांपियस के तुल्य भी हो सकता हूँ, क्योंकि मेरे पास अब सेना आ गई है। उसने सेना को अच्छी तरह शिक्षित किया तथा ऐसा बना दिया कि जो कुछ वह सेना से कहता था, सेना तत्क्षण उसे मानकर उसके अनुसार काम करने के लिये उद्यत हो जाती थी।

पांपियस, सीजर और क्रासस

इस प्रकार सीजर ५८ ई० पू० में गाल की ओर रवाना हुआ। वहाँ उसे काफी काम मिल गया। अगले तीन वर्षों

में उसने पिरीनीज के उत्तर की तथा राइन नदी के पश्चिमी तट की सारी भूमि को जीत लिया। इतना ही नहीं, किंतु ५४ ई० पू० में वह ब्रिटेन में भी पहुँचा, जहाँ अँगरेजों के पूर्वज रहा करते थे। गाल में पहुँचकर उसने दिखा दिया कि वह कितना महान् पुरुष था। सीजर जहाँ गाल में विजय कर रहा था, वहाँ उसे रोम की भी सब बातों का पूरा पता था। वह बड़ा भारी लेखक भी था। वह अपने गाल-विजय के संबंध के बहुत से लेख भी लिख गया है जिनसे उस समय की अवस्था का ठीक ठीक परिज्ञान होता है। उसके लेखों से पता लगता है कि किस प्रकार गालवासी तथा उसके अपने सैनिक उससे प्रेम करते थे। उसने गालवासियों को जीता, परंतु उनके साथ कठोरता का व्यवहार न किया। वह प्रत्येक व्यक्ति से दया-पूर्ण व्यवहार करता था। उसने गाल में सड़कें बनाईं तथा उन्हें रोमन रीति रिवाजों, देवी देवताओं तथा अन्य अनेक प्रकार की बातों को मानना सिखाया। साथ ही उसने अपने सेनापतियों को भी उनसे दयापूर्ण व्यवहार करने के लिये कहा।

गाल में सीजर

यद्यपि वह गाल में केवल तीन वर्ष तक रहा तथा रोम जाते समय अपनी सारी सेना अपने साथ ले गया, तो भी पीछे गालवालों ने विद्रोह न किया। रोम के इतिहास में सीजर द्वारा गाल-विजय बड़ी प्रसिद्ध घटना है; क्योंकि इससे पता लगता है कि किस प्रकार रोम ने एक शत्रु देश को जीता तथा

बहुत समय के लिये अपने साथ संबद्ध कर लिया। इतना ही नहीं, किंतु रोम के भविष्य के लिये भी यह घटना महत्त्वपूर्ण थी; क्योंकि आगे चलकर हम देखेंगे कि किस प्रकार इटैलियन दिन पर दिन गिरते गए और रोम के बहुत से बड़े आदमी गाल देश से ही निकले। सीजर द्वारा गाल-विजय से ही रोम की शक्ति का युरोप में तथा युरोप के कई दूरवर्त्ती भागों में भी प्रसार हुआ। अतः इतिहास में यह घटना विशेष स्मरणीय है।

गाल-विजय के समय सीजर कभी रोम की दशा से अपरिचित न रहा। वह सदा रोम पर गहरी नजर रखता था।

रोम में सीजर का प्रभाव

यद्यपि वह गाल में पाँच साल के लिये भेजा गया था, परंतु वह इसलिये वहाँ पर कुछ समय और ठहरना चाहता था कि वह वहाँ रुपया खूब इकट्ठा कर सकता था और लोगों की दृष्टि में बहुत बड़ा जच सकता था। परंतु गाल में उसका ठहरना तभी हो सकता था जब कि क्रासस तथा पांपियस उसके सहायक होते।

रोम में स्वयं ही बड़ा विक्षोभ रहता था; क्योंकि हर साल चुनाव में घर घर भिन्न भिन्न पक्षवालों का युद्ध हो जाया करता था। साथ ही पांपियस देख रहा था कि दिन पर दिन मेरी शक्ति कम हो रही है। सिनेट और प्रजा दोनों पर ही अब उसका कोई प्रभाव नहीं रह गया था।

५६ ई० पू० में पांपियस और क्रासस सीजर से मिलने के लिये ल्यूसा पहुँचे। वहाँ वे तीनों पुनः मिल गए और आपस

में सलाह करके एक दूसरे का अभिप्रेत पुन: पूर्ण करने के लिये प्रस्तुत हो गए। अत: ५५ ई० पू० में पांपियस और क्रासस पुन: काउंसल चुने गए। उनके चुनाव में वोट देने के लिये सीजर ने अपने सिपाही रोम में भेज दिए थे।

पांपियस, सीजर और क्रासस की विधि

ज्योंही वे काउंसल बने, उन्होंने सीजर के लिये और पाँच साल तक गाल का शासन देने का प्रस्ताव स्वीकृत किया। तत्पश्चात् एक ट्रिब्यून ने सीरिया का प्रांत पाँच साल के लिये क्रासस को देने का प्रस्ताव लोगों के सामने उपस्थित किया जो स्वीकृत हो गया। इसी प्रकार स्पेन का प्रांत पाँच साल के लिये पांपियस को दे दिया गया।

इस प्रकार सीजर, क्रासस और पांपियस ने रोम की सारी शक्ति आपस में बाँट ली। सिनेट उनके विरुद्ध कुछ भी न कर सकती थी। प्राचीन प्रजा सत्तात्मक राज्य शनै: शनै: दुर्बल पड़ रहा था और राज्य में वैयक्तिक प्रधानता दिन पर दिन बढ़ती जा रही थी।

क्रासस पार्थियन लोगों के साथ युद्ध करने के लिये पूर्वीय देशों में गया, परंतु ५३ ई० पू० में मारा गया। ये पार्थियन लोग रोम के बड़े भारी शत्रु थे और रेगिस्तान में रहते थे। रोमन लोग जब इनसे लड़ने जाते थे, तब ये रेगिस्तान में भाग जाते थे, जहाँ पर इनका पीछा करना रोमन लोगों के लिये असंभव था। क्रासस

क्रासस की मृत्यु

की मृत्यु से रोम की पूर्वीय देशोंवाली शक्ति को बड़ा भारी धक्का पहुँचा। इतना ही नहीं, किंतु क्रासस की मृत्यु से पांपियस और सीजर में शत्रुता उत्पन्न हो गई; क्योंकि इस समय रोम में दो ही ऐसे मनुष्य रह गए थे जिनमें से किसी एक के हाथ में रोम की शक्ति जा सकती थी।

पांपियस और सीजर का विरोध

पांपियस स्पेन नहीं गया और रोम में ही रह गया, जो कि एक प्रांतिक मैजिस्ट्रेट के लिये ठीक न था। यही नहीं बल्कि उसने सिनेट से कहा कि स्पेन का प्रांत मेरे शासन में पाँच साल के लिये और दे दो। इस साधन से वह सीजर से शक्ति में बढ़ गया; क्योंकि ४८ ई० पू० में सीजर को सेना सहित गाल का शासक-पद छोड़ देना था तथा एक साधारण नोब्ल के रूप में रहना था। परंतु उस समय में पांपियस के पास जहाँ स्पेन का शासन रहने को था, वहाँ उसके पास सेना भी थी। यही नहीं, बल्कि पांपियस के रोम में रहने के कारण दिन पर दिन उसकी शक्ति बढ़ती जाती थी। उसका कारण यह था कि रोम में प्रायः झगड़े तथा दंगे फसाद होते रहते थे। जब सिनेट उसको न दबा सकती थी, तब पांपियस दबा देता था; इससे लोगों की दृष्टि में उसकी प्रतिष्ठा बढ़ रही थी।

सीजर के मित्र उसकी इन चालों को बिलकुल पसंद न करते थे और सीजर स्वयं डर रहा था कि जब मैं एक साधारण

नोब्ल की अवस्था में पहुँचूँगा, तब मुझ पर कोई न कोई दोष मढ़कर मुकदमा खड़ा किया जायगा जिसमें पांपियस के सिपाही मेरे विरुद्ध सम्मति देंगे और मुझे या तो प्राण-दंड और या देशनिकाला मिलेगा। यह तो ईश्वर ही जाने कि क्या होता; हाँ, इतना अवश्य था कि सीज़र अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने पर तुला हुआ था। उधर सिनेट पांपियस की अपेक्षा सीजर से बहुत अधिक डरी हुई थी; क्योंकि सीजर प्रजाप्रिय तथा नवीन सुधारकों का अग्रणी था। जो हो, यह सबको निश्चय था कि हो न हो, रोम की शांति शीघ्र ही भंग होगी तथा एक नया गृह-युद्ध पुनः रोम में होगा।

सीजर चाहता था कि या तो पांपियस और मैं एक ही समय में अपने अपने अधिकार छोड़ दें या मुझे भी रोम का काउन्सल बना दिया जाय और पांपियस की तथा मेरी शक्ति तुल्य हो जाय। सीजर के पास सेना थी और साथ ही रोम में भी उसके बहुत से मित्र थे; परंतु सिनेट उसकी शक्ति को नहीं समझती थी; अतः उसने उसका प्रस्ताव स्वीकृत न किया और जब दो ट्रिब्यूनों ने उसका पक्ष लिया, तब उनको उसने पदच्युत कर दिया। ये ट्रिब्यून सीजर के पास पहुँचे और जो कुछ उनके साथ हुआ था, कह सुनाया। इस पर सीजर ने सेना को कूच करने की आज्ञा दे दी और यह कहता

सीजर और पांपियस का झगड़ा

हुआ रवाना हुआ कि मैं प्रजा के प्रतिनिधि-भूत ट्रिब्यूनों की रक्षा के लिये सिनेट के विरुद्ध जा रहा हूँ।

पांपियस पर सीजर एक दम आ पड़ा। उस समय पांपियस ने सेना को एकत्र करने के लिये यत्न किया, परंतु उसे भागना ही पड़ा; क्योंकि जनता उसके पक्ष में न थी। दो ही मास में सीजर ने इटली को भी ले लिया; परंतु उसे वहाँ पर देर तक ठहरने का समय न मिल सका; क्योंकि उसे स्पेन में पांपियस के आदमियों को हराने के लिये जाना पड़ा। वहाँ जाकर उसने पांपियस के सेनापति को हराया और उनकी सारी सेना को नष्ट भ्रष्ट कर दिया। इसके पश्चात् वह रोम में पुनः लौट आया तथा अपने दयायुक्त व्यवहार से उसने प्रजा के हृदय को जीत लिया।

पांपियस और सीजर का युद्ध

अगले वर्ष (४८ ई० पू०) सीजर ग्रीस में पहुँचा; क्योंकि पांपियस ने एक बड़ी भारी सेना इकट्ठी कर ली थी। सीजर ने वहाँ पर पहुँचते ही देखा कि पांपियस की सेना मेरी सेना की अपेक्षा दुगुनी है। परंतु सीजर गाल में अपनी सेना के साथ लड़ चुका था और उसे अपनी सेना पर पूर्ण विश्वास था। युद्ध आरंभ होने के पहले सीजर ने अपनी सेना के प्रतिपक्षी सैनिकों के मुख पर बाण मारने की आज्ञा दे दी। युद्ध देर तक होता रहा। अंत में सीजर जीता। पांपियस मिस्र की

पांपियस की पराजय

ओर भागा, परंतु नौका में ही उसे किसी ने मार डाला। जब उसका सिर सीजर के सामने लाया गया, तब वह रो पड़ा, क्योंकि वह खून बहाने की खातिर युद्ध न करता था, और उसका यह विश्वास था कि राज्य बिना न्याय तथा दया के स्थापित नहीं हो सकता।

सीजर जिस समय पांपियस का पीछा कर रहा था, उस समय उसने मिस्र की राजगद्दी के लिये १४ वर्ष के एक बालक टॉलमियस तथा उसकी बहिन (क्लियोपैट्रा) के बीच झगड़ा होता देखा। उसने क्लियोपैट्रा का पक्ष लिया तथा उसे राजगद्दी पर बैठा दिया। बालक एक युद्ध में मारा गया। इसके पश्चात् सीजर एशिया में पहुँचा और उसने जाला पर एक प्रतिपक्षी शत्रु को हराया तथा रोम को एक अत्यंत प्रसिद्ध पत्र लिखा—"विनी, विडी, विसी" (मैं आया, मैंने देखा, मैंने हराया)।

पूर्वीय देशों में सीजर

रोम में वह लौट आया, पर उसे वहाँ देर तक ठहरना न मिला। उसे अफ्रिका में एक युद्ध के लिये जाना पड़ा; क्योंकि पांपियस के पक्ष के लोग वहाँ पर पुनः एकत्र हो रहे थे। वहाँ पर जाते ही उसने उनको थैप्सस् नामक स्थान पर ४६ ई० पू० में हराया।

अभी सीजर को कुछ भी विश्राम न मिला था कि उसने सुना कि पांपियस के पुत्र ने स्पेन में एक बड़ी भारी सेना इकट्ठी कर ली है। सीजर को वहाँ जाना पड़ा तथा ४५ ई०

पू० में मंडा नामक स्थान पर उसने उसको हरा दिया। इस विजय के अनंतर सीजर रोमन राज्य के स्वामी के स्वरूप में रोम में आया। सिनेट ने उसे जीवन भर के लिये डिक्टेटर बना दिया तथा उसे प्रत्येक प्रकार का मान दिया, जितना कि एक मनुष्य को दिया जा सकता था।

रोम में सीजर

सीजर अपनी शक्ति को सर्वथा स्थिर करना चाहता था; तथा उसकी इच्छा थी कि मैं अपनी मृत्यु पर अपनी शक्ति जिसे चाहूँ, उसे सुपुर्द कर जाऊँ। अतः वह अपने आप को शीघ्र ही राजा बनाना चाहता था। वह प्रजासत्तात्मक राज्य को इस प्रकार के एक सत्तात्मक राज्य में परिवर्त्तित करना चाहता था जिसका आधार लोगों की सम्मति ही हो। वह प्रत्येक प्रांत के तथा रोम के अच्छे अच्छे बुद्धिमान् योग्य मनुष्यों को सिनेट में रखना चाहता था जिनका काम राजा को अच्छी अच्छी सलाहें देना हो, तथा सिनेट में स्वतंत्र कुछ भी शक्ति न हो।

रोम के बहुत से नोब्ल इन परिवर्त्तनों को पसंद नहीं करते थे और न वे सीजर को अच्छा समझते थे। अतः उन्होंने षड्यंत्र रचा तथा उसे सभागृह में कत्ल कर दिया (१५ मार्च, ४४ ई० पू०) उसके मारनेवालों में ज्यूनियस ब्रूटस तथा कासस लांगिनस मुख्य थे। इन आदमियों के साथ सीजर ने बड़ा अच्छा

सीजर का घात

बर्त्ताव किया था तथा इनका उपकार भी किया था। परंतु मनुष्य उपकारों को बहुत कम याद रखता है; प्रायः भुला देना उसके लिये साधारण सी बात है। इन लोगों ने स्वतंत्रता के नाम पर यह भयानक काम किया था। ये कहते थे कि सीजर राज्य को उलटना चाहता था, अतः उसको मारना हमारा कर्त्तव्य था।

सीजर ५६ वर्ष की अवस्था में मरा। संसार के अनेक महान् पुरुषों में वह भी एक महान् पुरुष है। वह जैसा वीर था, वैसा ही राजनीतिज्ञ तथा प्रबंधकर्त्ता भी था। लेखक भी वह अच्छा था। उसके लेख आज कल भी बड़े चाव से पढ़े जाते हैं। यद्यपि उसमें कई दोष थे जिनका होना उस क्रूरता के जमाने में संभव भी है, तौ भी संपूर्ण देश के गरीब लोग तथा उसके सैनिक उसे प्रेम की दृष्टि से देखते थे।

सीजर के घात से भी पुराने राज्य-प्रबंध का पुनरुद्धार न हो सका। किंतु इससे रोम में पुनः विक्षोभ हो गया जिससे

एंटिआनस और आक्टेवीनियस

अगले ३० वर्ष तक रोम में गृह-युद्ध होता रहा। सीजर अपनी मृत्यु पर अपनी बहिन का ८ वर्ष का एक लड़का उत्तराधिकारी के तौर पर छोड़ गया था। वह उस समय यद्यपि ग्रीस में पढ़ रहा था, तथापि रोम के राज्यप्रबंध के विषय में सदा ध्यान रखता था। इसका नाम आक्टेवीनियस था। सीजर के एक सेनापति एंटिआनस ने सीजर के संहारक ब्रूटस तथा

क्रासस के विरुद्ध रोम की प्रजा को भड़काया तथा उन्हें रोम से बाहर निकाल दिया।

एंटिश्रानस ने सोचा था कि ऐसा करने से मैं सीजर की तरह वहाँ शक्तिशाली हो जाऊँगा। परंतु अभी ज्यों ही सीजर के सैनिक उसके चारों ओर इकट्ठे होने लगे, त्योंही आक्टेवीनियस रोम में आ गया तथा अपने आप को प्रजा-प्रिय बनाने लगा।

थोड़े समय के बाद एंटिश्रानस का सिनेट के साथ झगड़ा हो गया। आक्टेवीनियस ने सिनेट का पक्ष लिया और म्यूटिना नामक स्थान पर ४३ ई० पू० में एंटिश्रानस को पूर्ण रूप से हराया जिसमें दोनों के दोनों काउन्सल भी मारे गए। इसके पश्चात् रोम को आक्टेवीनियस ने अपने आप को काउन्सल बनाने के लिये बाध्य किया। और जब वह काउन्सल बनाया गया, तब उसने मार्सस लविडस के साथ मित्रता कर ली जिसके पास सेना थी; क्योंकि वह गाल तथा स्पेन का शासक था। इतना ही नहीं किन्तु एंटिश्रानस को भी उसने शांत कर दिया।

इस प्रकार ४३ ई० पू० में पुनः तीन मनुष्यों का समूह रोम में काम करनेवाला उत्पन्न हो गया जिसको इतिहास में द्वितीय त्रिजन-समूह कहते हैं। इस समय के ठीक १२ वर्ष के पहले रोम में तीन आदमियों के द्वारा कार्य्य संपादित किया गया था जिनका नाम पांपियस, सीजर तथा क्रासस था।

द्वितीय त्रिजन-समूह

पहली बात जो उन्हें करनी थी, वह यह थी कि एक दूसरे को पारस्परिक संहार से बचाना, जैसा कि सुल्ला के समय में हुआ था। एक मनुष्य, जिसका नाम मार्सस ट्यूलियस केसिसरो था और जो उस समय का प्रसिद्ध व्याख्याता था, इस समय में मारा गया; क्योंकि उसने एंटिआनस के विरुद्ध बेधड़क होकर व्याख्यान दिया था। मृत्यु के समय उसकी अवस्था ६४ वर्ष की थी। इस प्रकार जब उन्होंने आपस में फैसला किया, तब पहला काम जो उन्हें करना था, वह ब्रूटस तथा क्रासस को हराना था; क्योंकि इन्होंने मैसीडोनिया में एक बड़ी भारी सेना इकट्ठी कर ली थी। परंतु ये दोनों अच्छे सेनापति न थे; अतः बहुत जल्द घबरा गए। फिलीपी नामक स्थान पर दो युद्ध (४२ ई० पू०) हुए, जिनमें से पहले युद्ध में तो क्रासस ने और दूसरे युद्ध में ब्रूटस ने आत्मघात कर लिया।

इस युद्ध के पश्चात् एंटिआनस तो पूर्वीय देशों में पुनः चला गया जहाँ उसका क्लियोपेट्रा से बहुत प्रेम हो गया और इसी कारण वह वहीं पर रह गया।

इटली में आक्टेविनियस

आक्टेविनियस इटली को लौट गया तथा उसने वहाँ पर नियमों को स्थिर करने के लिये पुनः यत्न किया।

इस समय आक्टेविनियस के सिर पर एक और बड़ा भारी काम आ पड़ा जिसके लिये उसने बहुत यत्न किया। वह यह था कि सक्सटस पांपियस के पास सामुद्रिक सेना थी;

और वह जब चाहता, तब सारी रसद रोम में जाने से रोक देता। अतः आक्टेवीनियस के लिये सामुद्रिक सेना रखना आवश्यक था। पहले तो वह समुद्री युद्ध में हारता रहा; परंतु ३६ ई० पू० में उसने पांपियस को बुरी तरह से हराया और पांपियस शरणार्थ पूर्वीय देशों में भागा जहाँ एंटिश्रानस ने उसे मार डाला।

आक्टेवीनियस तथा एंटिश्रानस का युद्ध

इस समय एंटिश्रानस का आक्टेवीनियस की शक्ति से डरना आवश्यक था। आक्टेवीनियस के पक्ष में इटली तथा रोम था; क्योंकि उन्हें उसने विपत्ति से निकाला था और साथ ही उसके पक्ष में मैरियस के पुराने सिपाही थे। परंतु एंटिश्रानस से रोम तथा इटली के सभी लोग घृणा करते थे; क्योंकि क्लियोपेट्रा ने उसके ऊपर अपना सिक्का जमा लिया था। जैसा वह कहती थी, वैसा ही वह करता था। इतना ही नहीं किंतु साथ ही वह ग्रीस के रीति रिवाज तथा देवी देवताओं को भी बहुत अधिक मानता था। अतः एक्टियम नामक स्थान पर ३१ ई० पू० में दोनों के बीच एक युद्ध हुआ जिसमें एंटिश्रानस हारा। हार का कारण यह था कि क्लियोपेट्रा का जहाज युद्ध में भाग निकला। इस पर एंटिश्रानस बेहद तंग हुआ और वह भी उसके जहाज के पीछे हो लिया। इस पर सारी सेना में खलबली मच गई। एंटिश्रानस का मिस्र देश तक पीछा किया गया, परंतु जब उसने सुना कि क्लियो-

पेट्रा मर गई, तब उसने आत्मघात करना चाहा। अभी वह आत्मघात कर ही रहा था कि एक बार क्लियोपेट्रा के उसे दर्शन मात्र हुए। क्लियोपेट्रा कैद कर ली गई थी और लोग उसे रोम की ओर ले जा रहे थे। पर बीच में ही उसने भी आत्मघात कर लिया। यह मिस्र की अंतिम रानी थी। इसके पश्चात् मिस्र रोम का प्रांत बना लिया गया।

१०—साम्राज्य की स्थापना

इस प्रकार फिर एक बार रोमन संसार एक-सत्तात्मक राज्य के अधीन होता है। ज्यूलियस सीजर की मृत्यु के पश्चात् तेरह वर्ष गड़बड़ में बीते; परंतु इस समय के पश्चात् ज्यूलियस सीजर के दत्तक पुत्र ने फिर अपनी वही पुरानी स्थिति प्राप्त कर ली। प्रत्येक मनुष्य गृह-कलह से तंग आ चुका था। इन्हीं गृहयुद्धों में रोम के प्रायः पचास वर्ष से अधिक बीत चुके थे। ऐसे मनुष्य बहुत कम रह गए थे, जिन्होंने इन गृहयुद्धों को देखा हो और नए मनुष्य एक-सत्तात्मक राज्य के फलों और प्रभावों से अनभिज्ञ थे। इसलिये प्रजा के मन में यह उमंग बड़े जोरों से लहरें मारने लगी कि शांति हो, शांति हो। वे किसी ऐसे राज्य के अधीन रहने को तैयार थे जिसमें उन्हें शांति प्राप्त हो। दूसरी बात यह थी कि रोम के मुख्य मुख्य कुलीन योद्धा इन लड़ाइयों में मारे जा चुके थे। कोई ऐसा कुलीन न बचा था जो नवीन राजा के मार्ग में कंटक स्वरूप होता। आक्टेवीनियस बड़ा ही शक्तिशाली मनुष्य था। एक्टि-यम (Actium) की लड़ाई के उपरांत जब आक्टेवीनियस रोम में पहुँचा, तब रोम की सारी शक्ति उसके हाथ में आ गई। वास्तव में इसी समय से रोम का राज्य एक राजा के

अधिकार में आ गया, यद्यपि नाम को वह "रिपब्लिकन" (प्रजासत्तात्मक राज्य) ही रहा।

आक्टेवीनियस ने ज्यूलियस सीजर की मृत्यु से समझ लिया था कि खुले आम अपने आप को राजा कहना कितना भयंकर काम है। परंतु उसे विश्वास था कि मैं धीरे धीरे और शांति से यह पद अवश्य प्राप्त कर लूँगा। इसी लिये उसने निश्चय किया कि मैं "राजा" शब्द अपने लिये नहीं प्रयुक्त करूँगा, और न मैं कोई नया बड़ा अधिकार मांगूगा। परंतु धीरे धीरे उसने प्राचीन मैजिस्ट्रेट की शक्ति प्राप्त कर ली। पाठकों को स्मरण होगा कि जब रोम ने राजाओं को गद्दी से उतारा था, तब उसने अन्य कोई परिवर्त्तन न करके केवल एक (या दो) वर्ष के लिये मैजिस्ट्रेट नियुक्त करना आरंभ कर दिया था, जिन्हें वही शक्ति प्राप्त थी जो राजाओं को प्राप्त होती थी। परंतु इसके उपरांत वह शक्ति भिन्न भिन्न मैजिस्ट्रेटों में बँट गई थी। आक्टेवीनियस ने इस बिखरी हुई शक्ति को फिर से प्राप्त कर लिया। इस प्रकार वह वास्तव में राजा हो गया, परंतु उसने राजा की पदवी अपने नाम के साथ नहीं जोड़ी। इसके पश्चात् उसने प्रजा से अपने नाम के साथ Imperator (अर्थात् संपूर्ण सेना का नायक) की पदवी जोड़ने की आज्ञा प्राप्त की। इसी शक्ति से वह संपूर्ण देश की सेना का मालिक हो गया। हम आगे चलकर देखेंगे कि वास्तव में

एकसत्तात्मक राज्य की स्थापना

यही शक्ति थी जिसने नई राजसंस्था स्थापित की थी। इसके पश्चात् तीसरी शक्ति जो उसने प्राप्त की, वह Authority of Censor थी। अर्थात् उसे यह अधिकार प्राप्त हो गया कि वह सिनेट के अधिकारियों को चुन सके; और इसी के साथ वह सिनेट (Princeps) का मुख्य अधिकारी भी बना दिया गया। उसे सब प्रश्नों पर सबसे प्रथम बोलने का अधिकार था; वर्त्तमान काल का अँगरेजी का Prince शब्द इसी Princeps से निकला है। इन अधिकारों को प्राप्त करके भी उसे शांति न हुई। उसने अपना सेनानायक-वाला पद अपने जन्म भर के लिये करा लिया। इस प्रकार सारी प्रजा में उसके लिये एक विशेष महत्त्व की दृष्टि उत्पन्न हो गई। उसने काउंसलर की शक्ति भी जन्म भर के लिये प्राप्त कर ली और इस प्रकार रोम वह का सब से बड़ा मैजिस्ट्रेट बन गया। इसके उपरांत उसने मुख्य पादरी (Chief Priest) के पद पर भी कब्जा जमाया। तात्पर्य यह कि उसने धीरे धीरे राजा के सब अधिकार एक एक करके जन्म भर के लिये हस्तगत कर लिए। उसने अपने नाम के साथ Augustus की पदवी भी जोड़ ली। इसी से आजकल का Majesty शब्द निकला है।

आगस्टस का शासन

आगस्टस रोम में बड़ी ही सादगी तथा बिना किसी प्रकार की शान-शौकत के रहता था। वह देश की एक एक घटना को आदि से अंत तक बड़े ध्यान से देखता था और प्रत्येक कार्य अपने इच्छानुकूल

चलाना चाहता था। वह इस प्रकार से रहता था कि सिनेट तथा जनता उसकी आज्ञा का 'जी हुजूर' कहकर पालन करे। कभी कभी वह काम छोड़ने का भी ढोंग करता था, जिसका अर्थ यह होता था कि लोग देख लें कि वे आगस्टस के बिना काम नहीं चला सकते। एक बार वह रोम से चला भी गया; परंतु उसके जाते ही चुनाव में एक झगड़ा खड़ा हो गया जो केवल उसी के आने से शांत हो सकता था। यही कारण थे जिनसे उस पर कोई आक्षेप न कर सकता था। और वह भी यह दिखाता हुआ कि मैं प्राचीन राजनियमों पर चल रहा हूँ, वास्तव में एक स्वेच्छाचारी राजा बना रहता था।

आगस्टस ने रोमन-साम्राज्य का शासन ३१ ई० पू० से सन् १४ ई० तक किया। उसके राज्य में रोमन लोग बहुत सुखी रहे। उसके राज्यकाल में उत्तम से उत्तम लेखक उत्पन्न हुए। उनके लेखों में आगस्टस का वर्णन प्रायः आता है। उसे इस बात का सौभाग्य प्राप्त हुआ कि उसके समय में पब्लियस वर्जिलियस मेरो ने अपनी Aeneid नामक पुस्तक बनाई। क्विंटस होरेशियस फ्लेकस (Quintus Horatius Flaccus) तथा पब्लियस ओविडस वेरो (Publius Ovidius Varo) ने भी इसी समय में अपनी कविताएँ लिखीं। इसी समय में टीटस लिवियस (Titus Livius) ने 'रोम का इतिहास' नामक पुस्तक लिखी। आगस्टस अच्छा साहित्य-प्रेमी था। वह

आगस्टस के समय के लेखक

अपने चारों ओर के लोगों को साहित्य-सेवा के लिये उत्साहित करता रहता था। इसी लिये हम आगस्टस के समय को "साहित्य का युग" कह सकते हैं।

आगस्टस का मुख्य कार्य शासन-प्रबंध करना था। हम देखते हैं कि रोम साम्राज्य के बनने के समय तक रोम शहर की जनता ही रोमन साम्राज्य की शासक रही। सामाजिक युद्ध (Social War) के बाद समस्त इटालियन लोगों को रोमन नागरिक बनने का अधिकार दिया गया; परंतु वे रोम शहर के अंदर आकर ही वोट (सम्मति) दे सकते थे। पर यह स्पष्ट है कि प्रत्येक मनुष्य प्रति दिन रोम नहीं जा सकता था; और वे ही आदमी सम्मति दे सकते थे जो रोम में रहते थे।

प्रांतों पर साम्राज्य का प्रभाव

सिनेट सदा इस बात का यत्न करती थी कि रोमन लोग हमारे आज्ञाकारी तथा शांत हों, परंतु वह इस कार्य में विफल रही। परंतु जब साम्राज्य की स्थापना हो गई, तब ये सब कठिनाइयाँ दूर हो गईं; क्योंकि इस वक्त सबको सम्राट् की आज्ञा का पालन करना होता था। रोमन प्रांतों का शासन करने की शक्ति अब से रोमन सम्राट् के हाथ में चली गई थी। इस प्रकार नए साम्राज्य के अधीन होकर रोमन लोगों ने अपनी स्वतंत्रता खो दी; और अन्य प्रांतों की शक्ति रोम के बराबर होने लगी।

आगस्टस के समय में रोमन साम्राज्य बहुत अधिक विस्तृत था। उत्तर जर्मनी की बड़ी पराजय के पीछे, आगस्टस ने सोचा

कि रोम ने बहुत विजय पाई है, अब उसे केवल अपनी सीमा मजबूत करनी चाहिए। उसकी लड़ाइयाँ प्रायः जर्मनी के साथ हुईं और अंत में उसने राइन तथा डेन्यूब नदियों को अपने साम्राज्य की सीमा बनाया। इस प्रकार हम देखते हैं कि रोम की पश्चिमी सीमा पर एटलांटिक महासागर, दक्षिणी सीमा पर इंगलिश चैनल, राइन, डेन्यूब, कृष्णसागर और काकेशस की पहाड़ियाँ, पूर्व में आरमीनियन पहाड़ियाँ, टिग्रो और अरब का रेगिस्तान और पश्चिम में अफ्रिका का रेगिस्तान था। इस संपूर्ण सीमा में दो कमजोर स्थान थे—(१) जर्मन सीमा की ओर और (२) पार्थिनियन की ओर, पूर्व दिशा में। इन दोनों स्थानों के आदमी रोम के शत्रु थे। जब आगस्टस मरा, तब वह अपने उत्तराधिकारियों को यह सम्मति दे गया कि वे इन पार्श्वों में राज्य न बढ़ावें। अब से रोम साम्राज्य के अंत तक केवल दो ही देशों को साम्राज्य में मिलाया गया। एक तो ब्रिटेन जिस पर ज्यूलियस सीजर ने भी आक्रमण किया था, परंतु इस पर सम्राट् क्लोडियस ने सन् ५१ ई० में विजय पाई थी। दूसरा था डाकिया, जिसको सम्राट् ट्राजन (Trojan) ने अपने साम्राज्य में मिलाया था (सन् १०६ ई०)।

रोमन साम्राज्य का विस्तार

पाठकों को स्मरण होगा कि प्रांतों का शासन रोम के मैजिस्ट्रेट करते थे। ये गवर्नर सर्वदा सिनेट के स्वार्थों का साधन किया करते थे। इसलिये इन प्रांतों पर अत्याचार

तथा इनके साथ असद् व्यवहार होते थे और उनसे उनका धन छीना जाता था। आगस्टस ने उन प्रांतों में से बहुतों को अपने अधिकार में ले लिया और उनमें अपने ही गवर्नर नियुक्त किए। जिन प्रांतों को वह अपने अधिकार में न ले सका, उन पर भी उसने अपने प्रतिनिधि नियुक्त किए जो वहाँ अत्याचार न होने दें। वह सब प्रांतों की शिकायतें सुनता था तथा उनका न्यायपूर्वक निर्णय करता था। इस प्रकार इन प्रांतों ने भी धनी लोगों के पंजे से छुटकारा पाया। आगस्टस से पूर्व इन प्रांतों को पराधीन समझा जाता था। रोमन लोग उन पर सब प्रकार के अत्याचार कर सकते थे। परंतु इस समय से उनको भी इटली के बराबर समझा जाने लगा। और इस प्रकार दोनों (इटली और प्रांत) समान दृष्टि से राजा के अधीन समझे जाने लगे। इस प्रकार जो रोम पहले साम्राज्य का मालिक था, वह अब राजधानी मात्र रह गया।

प्रांतों की नई गवर्नमेंट

यही एक प्रत्यक्ष परिणाम था जो रोम को प्रजासत्तात्मक प्रणाली छोड़ने से प्राप्त हुआ। पाठकों को पता लग गया होगा कि ये सम्राट् उसी पद्धति की ओर झुक रहे थे जो रोम ने पहले पहल ग्रहण की थी। वे विजित प्रांतों को रोम से अलग न समझते थे, और उनको रोम के कार्य्यों में सम्मिलित भी करते थे। उन्होंने प्रांतों को भी रोमन नागरिक

रोम और उसके प्रांतों में समानता

बनने का अधिकार दे दिया। इससे स्पष्ट है कि रोमन तथा प्रांतीय लोगों में अब कोई विशेष भेद न रह गया था। पर एक भेद अब भी बाकी था; और वह यह कि "प्रत्येक नागरिक रोम में आकर ही संमति (वोट) दे सकता था।" और यह स्पष्ट है कि रोम से दूर रहनेवाला प्रत्येक मनुष्य नित्य संमति देने के लिये रोम में नहीं आ सकता था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि रोम नगर ने पहले सभ्य संसार को जीता, तदनंतर धीरे धीरे उन्हें रोम का नागरिक बनाया और अंत में वे सब रोमन लोगों के तुल्य हो गए। परंतु इन सबको सम्राट् के आज्ञानुकूल चलना होता था। यह सम्राट् वास्तव में सम्राट् था, परंतु नाम को रोम का साधारण नागरिक था।

यही रोमन साम्राज्य का विचित्र परिणाम था जो धीरे धीरे उपस्थित हुआ था। इसके साथ जो नया और सहसा परिवर्त्तन हुआ था, वह प्रांतों का न्यायपूर्वक शासन था और इसका हमें सदा ध्यान रखना चाहिए। सब प्रकार की प्रजा के मन में आगस्टस के लिये यथेष्ट कृतज्ञता थी। इसके लिये हमारे पास प्रमाण भी हैं। एक बार आगस्टस बेई (Baiae) की खाड़ी में नौका पर जा रहा था। अचानक एक ग्रीक पोत ने उसे देखा। कप्तान ने तुरंत अपना पोत ठहराया और उसके समस्त व्यापारी, जो सुंदर सफेद वस्त्रों से सुसज्जित थे, उसकी नौका में आदर भाव से प्रविष्ट हुए और उसके सामने सब प्रकार की भेंटें रखते हुए बोले—"आप ही की कृपा से हमें

सुख मिलता है। आप ही की कृपा से हमारे तन और धन की रक्षा हुई है"।

यद्यपि आगस्टस अपने जीवन के अधिकांश में प्रबंध विषयक कार्य्य ही करता रहा, तथापि उसने कुछ युद्ध भी किए थे।

आगस्टस की लड़ाइयां

उसका मुख्य युद्ध जर्मनों के साथ हुआ था जिनको जीतना वह आवश्यक समझता था। एक बार जब रोम ने राइन और एलब (Elbe) के बीच का सारा देश जीत लिया था (जहाँ अँग्रेजों के पूर्वज इंगलिश और सैक्सन रहते थे) तब एक जर्मन अफसर ने (जिसको रोमन आरमीनस कहते थे) वारुस नामक रोमन जनरल पर आक्रमण किया और उसकी सारी सेना का सत्यानाश कर दिया (९ ई० पू०)। आगस्टस को इस हार से अत्यंत दुःख हुआ। कहा जाता है कि वह नींद में भी यही कहा करता था—'वारुस, मेरी सेना लौटा दो'। जर्मन लोग सदा राइन और दक्षिण पार्श्वों पर से रोम से सुरक्षित रहे। यद्यपि पीछे भी युद्ध हुए, परंतु वे अपनी रक्षा के लिये थे, विजय के लिये नहीं।

आगस्टस की मृत्यु सन् १४ ई० में हुई। उस समय उसकी अवस्था ७६ साल की थी। वह संसार के ऐसे बड़े

आगस्टस की मृत्यु

चतुर आदमियों में से एक था जो प्रत्येक घटना से लाभ उठा सकते हैं। वह "प्रतीक्षा करो और देखो" का सिद्धांत भली भाँति समझता था। परंतु वह ऐसे किसी कार्य से नहीं हिचकता था जिसमें

उसे अपने लाभ की आशा होती थी। इन सब बातों के होते हुए भी वह अपने वैयक्तिक जीवन में सुखी नहीं था। उसकी लड़की ने उसे बहुत तंग किया और अंत को उसने अपने गोलक पुत्र टिवेरियस क्लोडियस नीरो को अपना उत्तराधिकारी चुना। यह नीरो जन्म से जुलियन वंश का नहीं था। यह आगस्टस की दूसरी स्त्री का, उसके पहले पति से उत्पन्न, पुत्र था। इस स्त्री का नाम लोविया था। इसी के लड़के को आगस्टस ने अपना दत्तक पुत्र बनाया था।

टिवेरियस की राज्य-प्राप्ति

टिवेरियस (१४—२७ ई०) को आगस्टस ने प्रायः राज्य संबंधी कार्य्यों पर नियुक्त किया था। और खास कर अंतिम दो वर्षों में उसने आगस्टस के काम में हाथ बँटाया था। इसलिये आगस्टस की मृत्यु पर लोगों ने टिवेरियस का भी उसी प्रकार आदर किया और उसे सम्राट् बना दिया। परंतु टिवेरियस उस तरह का खुश-मिजाज और दयालु नहीं था। वह कठोर-हृदय और क्रूर था। जब वह राज्य पर बैठा, तब उसकी उमर ५५ वर्ष की थी और उसकी आदतें इतनी पक्की हो चुकी थीं कि वे परिवर्त्तित नहीं हो सकती थीं। उसने आगस्टस के स्वभाव के विरुद्ध प्राचीन प्रजासत्तात्मक राज्य के नियमों में हेर फेर करना शुरू कर दिया। वह नियम बनाने में प्रजा की बात बिलकुल न सुनता था। हमें मानना पड़ता है कि प्रजा ने जिन अधिकारों को इतनी जल्दी खो दिया था, वे अधिकार वह शीघ्र फिर न

पा सकी। सिनेट ने देखा कि हम बिलकुल विवश हैं; और कुछ कुलीन लोगों के मन में फिर से प्राचीन भाव जागने लगे। पहले नौ वर्षों में टिबेरियस ने खूब काम किया। उसने भली भाँति देखा कि प्रांतों में नियमों का पालन होता है या नहीं। परंतु इस बीच में उसे अनुभव हुआ कि मैं प्रजाप्रिय नहीं हूँ, और मेरा भतीजा सर्वप्रिय होता जाता है, इसलिये वह उससे ईर्ष्या करने लग गया। वह उसके एक एक काम को संदेह-पूर्ण दृष्टि से देखने लगा। यही सब घटनाएँ थीं जिन्होंने उसे इतना क्रूर बना दिया।

हमने साम्राज्य के नवीन शासक-मंडल के गुणों को पर्याप्त रूप से देख लिया है; अब हम उनके दोषों का भी वर्णन करेंगे। ये दोष टिबेरियस और उसके उत्तराधिकारियों के शासन काल में पाए जाते हैं। इस समय रोम में वे आदमी नहीं रहते थे जो सारे साम्राज्य का शासन करते थे। उस समय और इस समय में जमीन और आसमान का फर्क था। प्राचीन कुलीन रोमन मर चुके थे और उनके स्थान पर ऐसे धनी पुरुष पैदा हो गए थे जिन्होंने सारी संपत्ति राज्य की कृपा से पाई थी। ये लोग रोम में उत्पन्न नहीं हुए थे और रोम के प्राचीन रीति-रिवाजों को उपेक्षा की दृष्टि से देखते थे। इस प्रकार रोम में उच्च श्रेणी के लोग धनी, विलासी और सुस्त थे। निम्न श्रेणी के लोग भी प्राचीन किसानों की भाँति न थे। ये

सम्राटों के शासन के दोष

निकम्मे लोग भी रोम में इसलिये एकत्र हो गए थे कि वहाँ ऐश आराम का सामान था; सब चीजें सस्ती थीं। इनमें एक बड़ा भाग ऐसा भी था जिसे रोमन लोग पहले दास बना कर लाए थे; परंतु पीछे से वे स्वतंत्र कर दिए गए थे। इस समय ये लोग इसी ताक मे रहते थे कि हमें हराम का माल मिल जाय और हम ऐश आराम में अपना जीवन बितावें। यह बात सत्य है कि राजा की शक्ति का आधार सेना है, और जब तक उसके पास सेना है, तब तक वह अपनी आज्ञा का स्वच्छंद प्रचार कर सकता है। रोम के सम्राट् के पास इस प्रकार की ६००० फौज थी जिसे प्रिटो-रियन गार्ड (Praetorian Guard) कहते थे।

जब कि उपर्युक्त प्रकार की अवस्था थी और सिनेट अपनी स्वतंत्रता खो चुकी थी, उस समय भी उसके सदस्य यही चाहते थे कि हम राज्य के विषय में कुछ बोल सकें। इसी लिये उन्होंने एक दूसरे पर राजद्रोह के दोष लगाने आरंभ किए; और दोषों के अन्वेषण में उन्होंने बाल की खाल निकालने की कहावत चरितार्थ कर दिखाई। इसी प्रकार का एक मुकदमा राजा के सम्मुख लाया गया कि अमुक मनुष्य ने एक टेबुल बनाने के लिये राजा की चाँदी की प्रतिमा गलाई है। पहले राजा ने ऐसे मुकदमों के सुनने में अनिच्छा प्रकट की, परंतु पीछे से उसने इन्हें अपने स्वार्थ के लिये

चुगलखोरों का आविर्भाव

सुनना स्वीकार कर लिया, और जब किसी पर उसे संदेह होता था, तब वह इसी प्रकार उसका निवारण करता था। इस प्रकार चुगलखोरों की एक खास श्रेणी उत्पन्न हो गई। वे इस प्रकार के आदमियों की चुगली खाने में ही लगे रहते थे, जिन्हें राजा मरवाना चाहता था और जिनके मरने से उन्हें धन संपत्ति का एक बड़ा हिस्सा मिलता था। इस प्रकार बचे खुचे कुलीन पुरुष भी यमपुरी को सिधारे। धनी और प्रसिद्ध पुरुष सदा मृत्यु से भयभीत रहते थे। यहाँ तक कि सम्राट् टिबेरियस स्वयं डरता था और इसी लिये उसने कैप्री (Capreae) नामक द्वीप को अपना निवासस्थान बनाया। यहाँ पर वह ज्योतिषियों से घिरा रहता था और घृणित जीवन बिताता था।

टिबेरियस के राज्य का अन्त

यद्यपि टिबेरियस रोम में नहीं रहता था, तथापि सब लोग उसे अपना सम्राट् समझते थे। इसी से हमें पता लगता है कि रोमन लोगों के विचारों में कितना परिवर्तन हो गया था। इस वक्त रोम की गवर्नमेंट का सम्बन्ध केवल एक व्यक्ति से ही रह गया था, प्रजा से बिलकुल न था। टिबेरियस ने शासन का भार अन्य लोगों पर डाल दिया। रोम का शासक एलियस सीजेनस (Aelius Sejanus), जो प्रिटोरियन गार्ड का कप्तान था, बड़ा ही क्रूर मनुष्य था। उसे आशा थी कि टिबेरियस के बाद मुझे ही राज-सिंहासन प्राप्त होगा। उसने सम्राट् के प्रायः सभी संबं-

धियों का वध करवा दिया। अंत में राजा को स्वयं भी इस क्रूर मनुष्य से डर होने लगा। उसने रोम में लिख भेजा कि सीजेनस को कैद कर लिया जाय। यह पत्र सिनेट में उच्च स्वर से पढ़कर सुनाया गया। सीजेनस किसी नए अधिकार की प्राप्ति की आशा से सिनेट में बड़ी खुशी से गया था। परंतु जब उसने पत्र का अंतिम भाग सुना, तब उसके होश हवास उड़ गए। लोगों ने उसे तत्काल पकड़ लिया। उसके मित्रों ने उसका साथ छोड़ दिया। उसकी प्रतिमा की लोगों ने बड़ी दुर्दशा की और अन्त में वह निर्दयता से मार डाला गया। यही बात प्रकट करती है कि रोमन लोगों का उदार-हृदय अब संकुचित होता जाता था। उनका स्वातंत्र्य-प्रेम लुप्त हो गया था। टिबेरियस ७८ वर्ष की अवस्था में घृणित जीवन व्यतीत करता हुआ मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसकी मृत्यु पर लोगों को बड़ी खुशी हुई।

केयस कैलिगुला (Caius Caligula)

इस नए राजा केयस (३७-४१ ई०) ने भी अपने राज्य को बुरा बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यह टिबेरियस का बड़ा गोलक पुत्र था और जरमैनीकस (Germanicus) का (जो अत्यंत प्रजा-प्रिय था) पुत्र था। उसे लोग कैलिगुला Caligula (जिसका अर्थ है छोटा बूट) के नाम से पुकारा करते थे। यह सम्राट् बनते ही पागल हो गया। यह कमजोर दिमाग का था और इसी लिये इसे नींद भी नहीं आती थी।

इसी बेचैनी और कमजोरी ने उसे वहमी बना दिया। उसने सारे रोम के जहाजों को बेई (Baiæ) की खाड़ी में खड़ा करवाया और उन पर तख्ते बिछवाए। उन तख्तों पर मिट्टी डलवाई और उस पर वृक्ष लगवाए। तब उन वृक्षों में से उसने शान से अपना जुलूस निकलवाया और कहा कि देखो, मैं समुद्र पर भी घोड़ा दौड़ा सकता हूँ। इस प्रकार के कामों में उसका धन स्वाहा हो गया और उसने धन की प्राप्ति के लिये बहुत से धनिकों की जानें तक ले डालीं। अन्त में उसकी क्रूरता इतनी बढ़ी कि उसके नौकरों ने उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचकर उसे मार डाला।

कुछ समय तक सिनेट ने यत्न किया कि वह रोम का शासन करे। परंतु प्रिटोरियन गार्ड ने उस पर कुछ ध्यान न दिया और क्लौडियस को राजा बना दिया।

क्लौडियस (Claudius)

यह जरमनिकस (Germanicus) का भाई तथा केयस (Caius) का चचा था। सब लोग इसको पागल समझकर इसकी अवहेलना करते थे। वास्तव में यदि वह इतना तुच्छ न समझा जाता तो कभी का मारा जा चुका होता। प्रिटोरियनों ने उसे केयस के महल में छिपते हुए देखा। एक ने उसका पाँव पकड़कर, जो पर्दे से कुछ बाहर निकला हुआ था, उसे खींच लिया और उसे देखकर कहा कि अब से यह सम्राट् हो गया। शेष सब ने भी उसे राजा स्वीकार कर लिया। क्लौडियस ने जब जब अपने आप शासन किया, तब तब अच्छा ही शासन किया। परंतु वह

प्रबंध करने में प्रवीण न था, इसलिये उसका प्रबन्ध उसकी स्त्री या नौकर करते थे जो बड़े ही बदमाश थे। ४३ ई० में क्लौडियस ने ब्रिटेन को पार किया और इस प्रकार रोमन लोगों ने विजय प्रारंभ कर दी। क्लौडियस ने गाल लोगों के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार किया और उन्हें रोम का नागरिक भी बनाया। इसी से उसे दी फादर आफ दी प्राविन्सेज (The Father of the Provinces) या प्रान्तों का पिता कहते हैं। उसकी दो दुष्टा रानियाँ थीं। दूसरी रानी, जिसका नाम एग्रिपिना (Agrippina) था, उसकी भतीजी थी। पहले उसका विवाह एक दूसरे व्यक्ति के साथ हुआ था। उसने राजा को उसकाया था कि तुम मेरे पुत्र को दत्तक बना लो, जिसका नाम लूसियस डूमिलियस नीरो (Lucius Domilius Nero) था। जब राजा ने नीरो को दत्तक बना लिया, तब उस दुष्टा ने अपने पति को विष दे दिया जिसमें उसका पुत्र शीघ्र राजा बन सके।

नीरो (५४—६८ई०) अत्यन्त क्रूर था। इसने जिसको चाहा, उसी को यमलोक पहुँचाया। उसने सब से पहले अपनी माता को समाप्त किया जिसने उसे राजगद्दी दिलवाई थी। पहले उसने अपनी माता को जहाज पर बैठाकर डुबाना चाहा, परंतु जब वह वहाँ से बच गई, तब एक सिपाही से उसका वध करवा दिया। नीरो को किसी का क्या डर था! ६४ ई० में जब रोम में भयानक आग लगी, तब वह पहाड़ी पर चढ़ गया जिसमें

नीरो (Nero)

वह आग लगने का दृश्य अच्छी तरह देख सके। वह पहाड़ पर चढ़कर लोगों के घरों को जलते हुए देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ और सारंगी बजाने लगा। कुछ लोगों की धारणा है कि उसने आग भी जान बूझकर लगवाई थी, और उद्देश्य केवल यह था कि एक मजेदार तमाशा दिखाई दे! परंतु पीछे से ईसाई लोगों पर दोष लगाया कि उन्होंने आग लगाई है; और इसी लिये उनमें से बहुतों को फांसी की भी सजा दी गई।

ज्यूलियन वंश

केयस जूलियस सीजर पीटर
|
केयस जूलियस सीजर डिक्टेटर
|
जूलिया
|
एटिया
|
केयस ओक्टेवियस, जूलियस का दत्तक पुत्र। सम्राट् आगस्टस के नाम से प्रसिद्ध, लीविया से विवाहित।
|
टिबेरियस (आगस्टस का दत्तक पुत्र) — ड्रूसस
|
ड्रूसस → जरमेनिकस — क्लौडियस, एग्रीपिना से विवाहित
|
क्लौडियस → नीरो, क्लौडियस का दत्तक पुत्र
|
जरमेनिकस → केयस केलिगुला — एग्रीपिना क्लौडियस की स्त्री
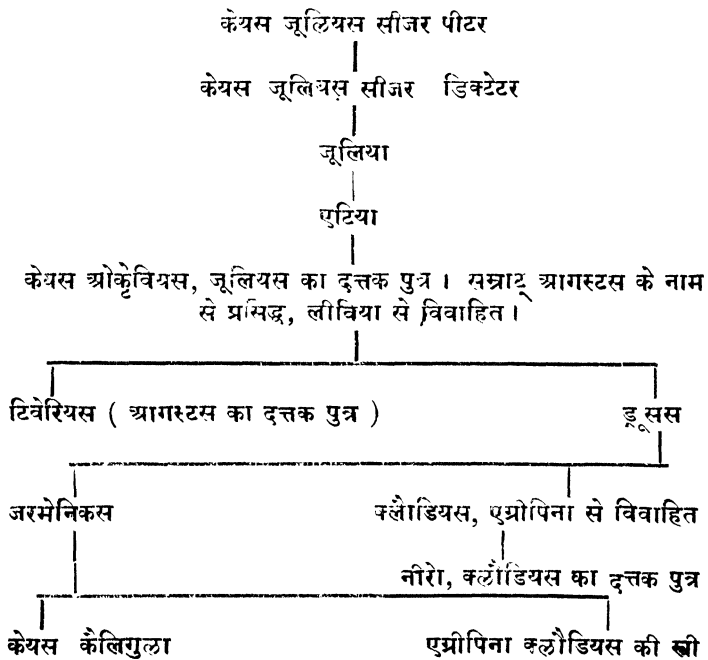
आगस्टस और टिवेरियस के समय में महात्मा क्राइस्ट जीवित थे। पहले ईसाई मत रोमन साम्राज्य में गरीब लोगों में फैला। आरम्भ में सब लोग ईसाइयों से घृणा करते थे; क्योंकि वे सब प्रकार के तात्कालिक लोकप्रिय कार्यों से अलग रहते थे। सब प्रकार के खेलों और मनोविनोदों का संबंध मूर्त्तिपूजकों की प्रार्थना के साथ था, इसलिये ईसाई उन सब से अलग रहते थे। साथ ही इसी समय साम्राज्य में राजा को देव के सदृश पूजने की प्रथा भी प्रचलित हो गई थी। जब हम इन सम्राटों के चरित्रों की ओर दृष्टि डालते हैं, तब यह बात हमें विचित्र मालूम होती है, तथापि यह सत्य है कि रोम में ऐसा होता था। पुराने धर्म रोमनों के विजयी होने से पूर्व ही नष्ट हो चुके थे। इसका कारण यह था कि पुराने धर्मों का जातीयता के भावों के साथ विशेष संबंध था। वे रोम में नहीं रह सकते थे, क्योंकि वहाँ जातीयता का प्रायः अभाव हो गया था। इस समय कुछ लोगों में जो भाव विद्यमान था, वह राजाओं के आज्ञा-पालन का ही था और वह सम्राट् को ही संसार में सब से अधिक शक्तिशाली समझने लग गए थे। यही कारण था कि उन्होंने सम्राटों की पूजा आरंभ कर दी। परंतु ईसाई लोगों को इस प्रकार की पूजा अभिप्रेत न थी; अतएव वे ऐसे खेलों में सम्मिलित न होते थे जिनमें राजा की पूजा होती थी। यही कारण था कि उन ईसाइयों को

ईसाई धर्म की उत्पत्ति

लोग असामाजिक, मनुष्य जाति से घृणा करनेवाले और राजद्रोही कहा करते थे।

अन्त में नीरो की क्रूरता लोगों को असह्य हो गई। सेनाएँ उसके विरुद्ध हो गईं और प्रांत नाराज हो गए।

नीरो की मृत्यु

रोमन लोग भी उसे किसी प्रकार की सहायता देने को तैयार न थे। इस प्रकार जब सब ने उसे छोड़ दिया, तब वह निराश हो गया और उसने तीस वर्ष की अवस्था में आत्मघात कर लिया।

नीरो संतान-रहित ही मरा। ज्यूलियन कुल का कोई मनुष्य शेष न था, इसलिये प्रजा के सामने यह कठिन प्रश्न

साम्राज्य में अशांति

उपस्थित हुआ कि कौन राजा बने। लोग समझते थे कि राज्य पर बैठने का अधिकार आगस्टस कुल का है, क्योंकि उसी में का जूलियस का दत्तक पुत्र था। रोम में जूलियन कुल सदा शक्तिशाली रहा और लोग समझते थे कि उसकी उत्पत्ति रोम के किसी प्राचीन देवता से है। परंतु इस समय इस कुल का अंत हो चुका था और यह विकट प्रश्न सामने उपस्थित था कि कौन राजा हो। यद्यपि सिनेट ने चुनाव कर दिया था, परंतु राजा की स्थिरता तब तक न हो सकती थी जब तक सेना साथ न दे।

सिनेट ने गेल्बा (Galba) को राजा चुन लिया। यह कुलीन रोमन था और स्पेन की सेना का नायक था। गेल्बा अच्छी तरह शासन करना चाहता था, परंतु उसका

प्रिटोरियन गार्ड्स के साथ अच्छा व्यवहार न था। और साथ ही वह ओथो (Marcus Salvius Otho) नामक प्रजाप्रिय व्यक्ति से द्वेष करता था। ओथो को विश्वास था कि गेल्बा मुझे अपना दत्तक पुत्र बनावेगा; परंतु जब उसने देखा कि गेल्बा ने किसी और को दत्तक पुत्र बना लिया, तब वह क्रुद्ध हो गया। उसने प्रिटोरियनों को भड़काया कि गेल्बा को मारकर मुझे राज्य दिला दो।

गेल्बा (Galba)

परंतु जर्मन सीमा के सिपाही यह नहीं चाहते थे कि प्रिटोरियन जिसे चाहें, राजा बना दें। उन्होंने अपने जनरल विटिलस (Aulus Vitillius) को राजा उद्घोषित किया और इटली की ओर चल पड़े। ओथो और प्रिटोरियन हार गए। ओथो ने तीन मास के शासन के पश्चात् सन् ६९ ई० में आत्मघात कर लिया।

ओथो

पर शीघ्र ही पता लग गया कि विटिलस सम्राट् बनने के योग्य नहीं है। वह केवल खाने पीने और मौज उड़ाने में सारा समय और धन खर्च करने लगा। सीरिया के सिपाहियों ने उसे राजा मानने से इन्कार कर दिया और अपने जनरल वेस्पैसियन (Titus Flavis Vespasianus) को राजा बना दिया। विटिलस पर चारों ओर से आक्रमण होने लगे और वह मारा गया। इन युद्धों में रोम की बड़ी दुर्दशा हुई।

विटिलस

११—सम्राटों का शासन

वेस्पैसियन से सम्राटों की एक नवीन श्रेणी प्रारंभ होती है। यह लगभग १०० वर्ष तक रोम में शासन करती रही।

(१) फ्लेवियन सम्राट्—(६९—१९२ ई०)

वेस्पैसियन के फ्लैवियन गोत्र के होने के कारण इन समस्त सम्राटों को फ्लैवियन सम्राट् के नाम से पुकारा जाता है। इन सम्राटों के समय में जनता का अच्छी तरह से शासन किया गया। देश की समृद्धि बढ़ती गई। इन शासकों में केवल एक ही शासक ऐसा निकला जो बुरा था और जिसका वर्णन हम आगे चलकर करेंगे।

सेना का नियंत्रण करने तथा राष्ट्र में शांति स्थापित करने का एक मात्र कारण वेस्पैसियन की बुद्धिमत्ता ही कही जा सकती है।

वेस्पैसियन के सुधार

शुरू शुरू में इस व्यक्ति को बहुत अधिक कठिनाइयाँ उठानी पड़ीं। यह किसी उच्च कुल का नहीं था. और इसने पहले रोमनों के लिये कोई हितकर कार्य्य भी नहीं किया था। पहले यह केवल एक अच्छा सेनापति तथा प्रांतों का अच्छा शासक ही था। उसकी सम्राट् बनने की इच्छा न थी। जो कुछ वह चाहता था, वह केवल यही था कि रोम में प्राचीन शासन पद्धति पुनः प्रचलित हो जाय। अपने शासन काल में

उसने रोमन अंतरंग सभा को अत्यंत मान की दृष्टि से देखा। स्वयं भी सादे तौर पर रोम में ही रहता था। जहाँ तक हो सका, उसने रोमन नियमों का नीरो या केयस के सदृश अतिक्रमण नहीं किया। वेस्पैसियन ने जिस शासन का आरंभ किया, उसके अनुगामियों ने भी उसी का अनुकरण किया। परंतु फ्लैवियन सम्राटों ने जनता का जहाँ अच्छा शासन किया, वहाँ उन्होंने जनता को अत्यंत बुद्धिमान्, दूरदर्शी तथा निःस्वार्थ आदि बनाने का कुछ भी यत्न न किया। इसका यह परिणाम हुआ कि १०० वर्षों के अच्छे शासन के बाद सम्राटों के अभाव में बिना किसी प्रकार के दोष के ही रोम की वही दुर्दशा पुनः प्रारंभ हो गई।

इन सब बातों के होते हुए भी वेस्पैसियन ने जनता में क्रूरता तथा विलासिता कम करना प्रारंभ किया। स्वयं सादे ढंग से रहते हुए तथा नियमों का अतिक्रमण न करते हुए उसने अंतरंग सभा के सभासदों तथा जनता को भी यही सिखलाया। इस सम्राट् के राज्य के बाद रोम में वह क्रूरता नहीं रह गई जो उसमें पहले वर्त्तमान थी।

वेस्पैसियन के शासन के अनंतर उसके पुत्र टिटस का शासन प्रारंभ होता है। इसने यहूदियों के समुत्थान को रोका तथा जैरूसलम का नगर विजय किया और उसे जला दिया। यहूदियों के तितर बितर हो जाने से साम्राज्य में कुछ काल के लिये शांति का पुनः

(२) टिटस

संचार हुआ। टिटस को जनता प्रेम से 'मनुष्य-रत्न' कहा करती थी। उसके राज्य के आरंभ में ही विसूवियस ज्वालामुखी पर्वत फटा था और उसने पांपियाई तथा हर्कुलैनियम नामक प्रसिद्ध नगरों को सदा के लिये भूमिगर्भ में डाल दिया था। अब ये नगर खोदकर भूमिगर्भ से निकाले गए हैं। यात्री लोग देख सकते हैं कि उस प्राचीन काल में रोमन साम्राज्य में किस प्रकार के नगर हुआ करते थे। वेस्पैसियन तथा उसके पुत्र टिटस ने रोम में बड़े बड़े मकानों का निर्माण कराया था। जनता के लिये ऐसे ऐसे गोष्ठीभवन (बातचीत करने के स्थान) तथा नाट्यशालाएँ बनवाई थीं जिनकी प्रसिद्धि चिर काल तक बनी रही।

(३) डोमिशियन—(८१—९६ ई०)

अपने भाई टिटस से डोमिशियन सर्वथा भिन्न था। यह व्यक्ति अतिशय क्रूर था। इसी के राज्य काल में अग्रिकोला नामक व्यक्ति ने ब्रिटेन पर पुनः विजय प्राप्त करना प्रारंभ किया। इसके अनंतर ही ब्रिटेन में रोमन शासन बहुत कुछ स्थिर हो गया। ९६ ई० में इसकी क्रूरता से तंग आकर कुछ व्यक्तियों ने इसके विरुद्ध षड्यंत्र रचा तथा इसका घात कर दिया।

(४) नर्वा

डोमिशियन के घात के अनंतर अंतरंग सभा ने नर्वा नामक व्यक्ति को रोमन साम्राज्य का शासक उद्घोषित किया। नर्वा स्वभाव से बड़ा ही दयालु था। उसे प्रायः सभी लोग चाहते थे।

वह शांति से ही राज्य करना चाहता था; परंतु कुछ प्रसिद्ध सैनिकों ने नर्वा से डोमिशियन के घातक को दंड देने के लिये कहा तथा उसे पकड़कर स्वयं मार भी डाला। यह घटना देखकर इन सैनिकों का नियंत्रण करने के लिये नर्वा ने अपने दत्तक पुत्र ट्राजन को अंतरंग सभा द्वारा रोम का भावी शासक नियत करवाया। नर्वा तो १६ महीने राज्य करके मृत्यु को प्राप्त हुआ तथा उसका पुत्र राज्य का शासक नियत हुआ।

ट्राजन (६८—११७ ई०) पहला सम्राट् था जिसका जन्म रोमन जाति में नहीं हुआ था। यह स्पेन का रहनेवाला था। इसका परिवार इसकी बुद्धिमत्ता के कारण बहुत अच्छी दशा में पहुँच गया था। ट्राजन को संपूर्ण जनता ने बिना किसी प्रकार के भेद भाव के सम्राट् के रूप में अंगीकृत किया। यह घटना इस बात की सूचक है कि किस प्रकार प्रांतों में, इटली तथा रोम में, पारस्परिक भेद भाव मिट रहा था।

(४) ट्राजन

ट्राजन के समय से रोम में योग्य व्यक्तियों का शासन प्रारंभ होता है। इन सम्राटों के शासन काल में रोमन बहुत ही शांति से अपना जीवन व्यतीत करते थे। रोम के इतिहास में इनका शासन काल सबसे अधिक सुखदायी तथा शांतिकर समझा जाता है। इन सम्राटों के काल में साम्राज्य का शासन सम्राट् के पुत्रों को नहीं प्राप्त होता था, अपितु सम्राट् लोग सारे साम्राज्य में जिसको सबसे योग्य तथा

अच्छा व्यक्ति समझते थे, उसी को अपना दत्तक पुत्र बना लेते थे और उसी को उनकी मृत्यु पर साम्राज्य का शासन भार सौंपा जाता था। ट्राजन ने इस विधि का रोम में आरंभ किया। ट्राजन रोम में शांति से आकर रहा। उसका जीवन बिलकुल सादा था। जब वह रोम में शासक के तौर पर आया था, तब वह अपने साथ एक भी सैनिक नहीं लाया था तथा रोम की गलियों में अपनी स्त्री के साथ अकेला ही फिरा करता था। किंवदंती है कि ट्राजन की स्त्री ने जिस समय राजमहल में प्रवेश किया, उस समय उसने वहां के लोगों तथा स्त्रियों को संबोधन करके कहा—"मैं इस राजमहल में बड़े संतोष के साथ प्रवेश करती हूँ, और आवश्यकता पड़ने पर इस राज-महल को उतने ही संतोष के साथ छोड़ भी दूंगी।" अंतरंग सभा, जनता तथा सैनिक सब के सब ट्राजन को प्रेम की दृष्टि से देखते थे। इसका कारण यही था कि ट्राजन अंतरंग सभा के सभ्यों को अत्यंत मान की दृष्टि से देखता था; अतः वे तथा और सब लोग उससे प्रसन्न थे। उसने जनता के लिये पुस्त-कालय, गोष्ठीभवन और नाट्यशालाएँ बनवाई थीं; अतः उनका प्रसन्न होना स्वाभाविक ही था।

ट्राजन के युद्ध

ट्राजन एक वीर योद्धा था। १०१ ई० में उसने डेन्यूब नदी पार करके डेसियन को विजय किया तथा उसके बहुत से प्रदेश छीनकर डेसियन नामक एक नया रोमन प्रांत बनाया। ११४ ई० में ट्राजन

ने पूर्व में आर्मीनिया नामक प्रदेश पर आक्रमण कर दिया। उसका उद्देश्य एक बड़ी भारी विजय का था, परंतु फारस की खाड़ी तक ससैन्य पहुँचकर वहाँ से लौटते समय सन् ११७ ई० में मार्ग में ही मर गया। यह निश्चय नहीं होता था कि राज्य पर कौन बैठे। परंतु कहा जाता है कि अपनी मृत्यु के समय ट्राजन ने हेड्रियन नामक व्यक्ति को अपना दत्तक पुत्र तथा राज्याधिकारी नियत किया था। कुछ लोगों की सम्मति है कि ट्राजन अपना उत्तराधिकारी नियत न कर पाया था तथा उसकी स्त्री ने साम्राज्य में अशांति रोकने के लिये ऐसा प्रसिद्ध किया था, जिससे सैनिकों को संदेह हुआ और उन्होंने हेड्रियन को ही सम्राट् मान लिया।

हेड्रियन ने ट्राजन की आरंभ की हुई विजयों को बिलकुल छोड़ दिया और वह रोम की ओर चल दिया।

(६) हेड्रियन
(११७—१३८ ई०)

रोम के लिये दूर दूर के देशों का विजय करना व्यर्थ ही था, जब कि उन विजित देशों के प्रबंध के लिये एक बड़ी भारी सेना रखनी पड़े और उस सेना का व्यय भी व्यर्थ ही उठाना पड़े। हेड्रियन ने विजय की ओर बहुत कम ध्यान दिया। वह प्रायः रोम के प्रांतों में जाकर घूमा करता था और यह देखा करता था कि उनका प्रबंध ठीक तौर पर किया जा रहा है या नहीं। हेड्रियन पहला रोमन सम्राट् था जिसने सारे साम्राज्य का ही अपने आपको शासक समझा,

न कि केवल रोम या इटली का। वह ब्रिटेन में भी गया और वहाँ जाकर उसने देखा कि वहाँ पर रोमन रीति रिवाज पूरे तौर से फैल गए हैं। जहाँ जहाँ वह गया, वहाँ वहाँ उसने लोगों के लिये अच्छे मकान आदि बनवा दिए। गाल निवासी टिटस आरिलियस अंटोनियस को हेड्रियन ने अपना उत्तराधिकारी बनाया।

एंटोनियस को "डिप" की उपाधि मिली थी; क्योंकि वह अपने दत्तक पिता हेड्रियन को बहुत ही प्रेम की दृष्टि से देखता था। उसने बहुत ही दयालुता तथा सज्जनता के साथ शासन किया। यही कारण है कि उस समय उसको जनता अपने पिता के सदृश समझा करती थी। उसने मार्कस आर्लियस को अपना उत्तराधिकारी चुना था।

(७) एंटोनियस-प्रिय-(१३८—१६१ ई०)

एंटोनियस की मृत्यु पर मार्कस आर्लियस सम्राट् बना। इसने अपने भाई लूसियस वेरस को अपना साथी सम्राट् बनाया। वेरस इस कार्य के लिये सर्वथा अयोग्य था। यह व्यक्ति यदि सम्राट् बनता तो अवश्य ही नीरो का पद ले लेता। रोमन लोगों का सौभाग्य था कि यह १६९ ई० में मर गया।

(८) मार्कस आर्लियस (१६१—७८ ई०)

मार्कस बहुत अच्छे स्वभाव का था; परंतु उसका राज्य बहुत ही दुःखदायी हुआ। वह रोम में रहकर विद्याध्ययन

आदि करता, परंतु उसे अपना सारा समय युद्धों में ही खर्च करना पड़ा। जर्मन लोग रोम की सीमा पार करके साम्राज्य पर आक्रमण कर रहे थे। डेन्यूब नदी के सभी तटों पर जर्मनी-वाले आक्रमण कर रहे थे। इसका कारण यह था कि रूस के स्लव जाति के लोग जर्मनी पर स्वत: ही आक्रमण कर रहे थे। मार्कस आर्लियस ने जर्मनी को परास्त किया तथा पीछे भगा दिया। सम्राट् को जर्मनों के साथ लड़ने से ही मालूम पड़ गया था कि रोम का भविष्य बड़ा ही खतरनाक है। सम्राट् के साथ उसकी स्त्री का भी व्यवहार बहुत ही अनुचित था। उसका लड़का भी राजकार्य के लिये अयोग्य था। इन सब बातों से वह अत्यंत दु:खित हुआ। वह १८० ई० में वीना में जर्मनों से लड़ता हुआ मारा गया।

मार्कस आर्लियस के मरते ही रोम के अच्छे दिनों का अंत हो गया। रोम नगर और साम्राज्य दोनों में सर्वत्र विक्षोभ ही विक्षोभ हो गया। रोम की सेना दिन पर दिन शक्ति में न्यून होने लगी। इस समय के अनंतर रोम को साम्राज्य की रक्षा की ही दिन रात चिंता रहने लगी। रोम का यह अभिमान चूर हो गया कि हमारा संसार भर पर साम्राज्य है और उस साम्राज्य भर में शांति है। इस समय से रोमन साम्राज्य असभ्यों के आक्रमण से सभ्य जातियों की रक्षा करने के लिये प्रसिद्ध होने लगा। इसी समय में रोमन

रोमन साम्राज्य में परिवर्त्तन

साम्राज्य मूर्त्तिपूजकों के आक्रमण से ईसाइयों की रक्षा करने लगा था जिसका वर्णन हम आगे चलकर करेंगे।

कामोडस अपने पिता के सदृश राजकार्य में ध्यान देने-वाला न था। सिंहासन पर बैठते ही उसने अपनी क्रूरता से जनता को तंग कर दिया। सम्राट् होकर वह मुक्केबाजियों के खेल खेला करता था। इन सब बातों का यह परिणाम हुआ कि सैनिकों ने पहले उसके मंत्री पिरेन्निस को मार डाला; और तब सम्राट् को भी उसके दो एक नौकरों ने राज-प्रासाद में कतल कर दिया।

(९) कामोडस
(१८०—१९२ ई०)

सम्राट् की मृत्यु के अनंतर अंतरंग सभा ने अपने एक सभ्य पर्टिनेक्स को सम्राट् उद्घोषित किया; परंतु सैनिक लोग उसे पसंद न करते थे। वे उसके विरुद्ध उठ खड़े हुए तथा उसको उन्होंने मार डाला। सारांश यह कि रोम में अब सैनिकों का राज्य प्रारंभ हो गया जिसका वर्णन हम आगे चलकर करेंगे।

(१०) पर्टिनेक्स

———— ————

१२—सैनिकों द्वारा सम्राटों का चुनाव

(१९३—२८४ ई०)

इस समय से लेकर प्रायः सौ वर्षों तक सिपाही लोग ही सम्राटों का चुनाव करते रहे। यही कारण था कि इस बीच में रोम झगड़ों का घर बन गया। पाठकों को स्मरण होगा कि आगस्टस तथा जूलियस ने भी अपनी सारी शक्ति सेना द्वारा ही प्राप्त की थी। परंतु जब वे शक्ति प्राप्त कर चुके थे, तब उन्होंने उसका प्रयोग प्रजा की सम्मति के बिना नहीं किया। आगस्टस यह बात सर्वांश में नहीं कर सका था। उसने प्रिटोरियन गार्ड नामक सिपाहियों को अपनी सहायता के लिये रखा था। जैसा कि हम पहले देख चुके हैं, ये सैनिक भी प्रायः राजा का भाग्य निश्चित करने के कारण होते थे। परंतु अंततोगत्वा अंतरंग सभा ही राजाओं को चुना करती थी।

सैनिक शक्ति का प्रादुर्भाव

परंतु ये सब बातें तभी तक थीं जब तक रोम में शांति का विस्तार था और राजा लोग रोम में मुख्य मजिस्ट्रेट की भांति रहते थे। परंतु अब परिस्थिति बहुत कुछ बदल चुकी थी, सेना के नायक सम्राट् बन सकते थे। मार्कस आर्लियस (Marcus Auralius) को उसकी इच्छा के विरुद्ध इस बात के लिये बाध्य किया गया था कि वह सेना में रहकर सेनापति का

काम करे। इस समय राज्य में सिपाहियों की शक्ति बढ़ गई थो। वे नहीं चाहते थे कि अंतरंग सभा उनका नेता चुने।

जब प्रिटोरियन गार्ड ने पर्टिनेक्स को मार डाला, तब सारे देश में अशांति फैल गई (१९३ ई०)। इसके पश्चात् उन्होंने सारा साम्राज्य रोम के प्रसिद्ध धनी सिनेटर डिडियस जूलियेनस (Didius Julianus) के हाथ बेच दिया। यह बात सीमावर्ती सेना से न देखी गई।

पर्टिनेक्स (Purtinex) की मृत्यु और गड़बड़

उसने जूलियेनस के विरुद्ध शस्त्र उठाए और उसे मार डाला। इस प्रकार कुछ समय तक भिन्न भिन्न सेनाओं में युद्ध होता रहा; परंतु अंत में एक अफ्रिकन सेनापति सैप्टिमस सैविरस (Septimus Severus) ने सबको जीत लिया और वह स्वयंमेव राजा बन बैठा (१९३—२११ ई०)।

सैप्टिमस सैविरस वास्तव में एक सिपाही था। उसे सिनेट और प्रजा की कुछ परवाह न थी। उसने सदा बल दिखलाकर ही राज्य करने की कोशिश की, परंतु उसका यह प्रयत्न रहता था कि सेना मुझसे प्रसन्न रहे। उसके राज्य में सिपाहियों को बड़े बड़े अधिकार और बड़ी बड़ी तनख्वाहें मिलीं; और ऐसा मालूम देता था कि राज्य के सबसे मुख्य अंग वे ही हैं। अब तक प्रिटोरियन गार्ड सदा इटली-वासियों में से ही चुने जाते थे; पर सैप्टिमस ने इन्हें सेना में से चुना और उनकी

सैप्टिमस सैविरस

संख्या बढ़ाकर ५०,००० कर दी। इस प्रकार अब से रोम विदेशी सेनाओं के द्वारा शासित होने लगा। सैप्टिमस ने समझा था कि मेरी इस नीति से आगे के लिये राजा लोग प्रांतों की सेनाओं के प्रभाव से बच जायँगे और वे उन्हें सफलता-पूर्वक दबा सकेंगे। पर इस प्रकार से राज-संस्था सर्वथा भिन्न प्रकार की हो गई, और इसके अनुसार सैनिक लोग ही राज्य के शासक बन गए।

केराकल्ला (Caracalla)

इस प्रकार के परिवर्तन का फल भी देश को शीघ्र ही मिल गया। सैविरस का पुत्र, जिसका नाम लोगों ने केराकल्ला रख लिया था, एक बड़ा ही क्रूर पुरुष था। उसे यह ज्ञात था कि अगर सेना मेरे वश में रहे तो मैं सब को कठपुतली की तरह नचा सकता हूँ। उसने सब से पहले अपने भाई गेटा का वध कराया जो उसके तुल्य ही शक्ति रखता था। उसने अपनी प्रिटोरियन गार्ड नामक सेना के साथ प्रान्तों में प्रवेश किया और वहाँ खूब अत्याचार किया। वह पहला राजा था जिसने सब प्रान्तों पर अत्याचार किया। अलेक्जेन्ड्रिया में कुछ लोगों ने उसकी हँसी उड़ाई जिस पर उसे अत्यंत क्रोध आया। उसने सब को आज्ञा दी कि वे बाहर निकल आवें। जब वे बाहर निकले, तब उसने उन्हें सेना से कटवा डाला। उसने ऐसा कोई उपाय नहीं छोड़ा जिससे उसे धन-प्राप्ति की आशा थी। सिपाहियों की शक्ति

बढ़ाना एक बड़ा दोष था जो इस नई सरकार ने किया था। उसे सिपाहियों को बड़ी बड़ी तनख्वाहें देनी पड़ती थीं; और समय समय पर जब कभी सैनिक लोग राजा की किसी आज्ञा से अप्रसन्न हो जाते थे, तब उन्हें धन देकर मनाना पड़ता था। सिपाहियों को रुपए देने के लिये प्रजा पर कर लगाए जाते थे।

केराकल्ला की इन सब बुराइयों में एक गुण भी था; और वह सब प्रान्तों को रोमन नागरिक बनने का अधिकार देना था।

प्रान्तों को नागरिक बनने का अधिकार

इस प्रकार सब प्रान्तवाले भी अपने को रोमन कह सकते थे। इटली और अन्य सब प्रांतवाले समान हो गए थे; अर्थात् स्वतंत्र और परतंत्र देशों के अधिकार समान हो गए थे। इसका कारण यही था कि केराकल्ला इन प्रान्तों से भी उसी प्रकार कर लेता था, जिस प्रकार रोम नगर से। इस आज्ञा ने एक परिवर्तन का अन्त कर दिया जो केयस ग्रेकस (Caius Gracchus) के समय से धीरे धीरे हो रहा था। इससे साम्राज्य संघटित और परस्पर एक हो गया। यद्यपि रोम के विचार पहले ही से प्रान्तों में मान्य और प्रचलित हो गए थे, परंतु अब से वे (प्रान्त) नाम से भी एक (रोमन) हो गए। सब लोग अपने को बड़ी खुशी से रोमन कहते थे। एक प्रदेश का रोमानिया नाम अब भी प्रसिद्ध है जिससे सिद्ध होता है कि डेशियन

(Dacian) लोग, जिन्हें ट्राजन (Trojan) ने जीता था, रोमन लोगों में मिलने तथा अपने को रोमन कहने में कितने प्रसन्न होते थे।

पाठकों के लिये इस प्रकार के सब शासकों (राजाओं) के नाम जानने की कोई आवश्यकता नहीं है। वे सभी राजा औरों की भाँति सिपाहियों द्वारा सिंहासन पर बैठाए और अंत में मारे गए थे। सिपाही लोग पहले एक राजा को सिंहासन पर बैठाते थे। तत्पश्चात् जब वह उनको पसंद नहीं आता था, तब उसे उतार देते थे और किसी अन्य को उसकी जगह बैठा देते थे। इन सब राजाओं में से सेविरस (२२२—२३५ ई०) ही उत्तम राजा था। वह अपनी ओर से न्यायपूर्वक राज्य करने का यत्न करता था। उसने एक समय नियत किया था जिसमें वह सबके दुःख सुख की कहानियाँ और शिकायतें सुना करता था। उसके द्वार पर एक आदमी खड़ा रहता था जो अंदर जानेवालों से कहा करता था—"हृदय पवित्र किए बिना अन्दर मत जाओ"। अलेक्‌-जेंडर ने सिपाहियों की शक्ति कम करने की भरसक कोशिश की। उसने यत्न किया कि उनके साथ भी पक्षपात न हो। परंतु इस प्रकार जब सिपाहियों को भी दंड मिलने लगा, तब वे नाराज हो गए। एक बार जब वह जर्मनी के विरुद्ध लड़ने की तैयारी में था, तब किसी सिपाही ने उसे मार डाला।

अलेक्जेंडर सेविरस (Alexander Severas)

यद्यपि इस समय सिपाही बहुत शक्तिसंपन्न थे और जिसको चाहते थे, उसे राजा बनाते और जिसे चाहते उसे सिंहासन से हटाते थे, तथापि उनमें से कोई सेनापति बनने के योग्य न था।

रोम के शत्रु

जो कोई बड़ा सेनापति राजा बनने लगता था, उसके पीछे सिपाही लोग हाथ धोकर पड़ जाते थे। इस प्रकार जब ये लोग परस्पर लड़ रहे थे, तब रोम के शत्रु उसके मुकाबले में बलवान होते जाते थे। राइन और डेन्यूब के किनारे किनारे कितनी ही जर्मन जातियों ने रोम की सीमा में धावे करने शुरू कर दिए। इनमें से एक जाति का नाम फ्रैंक था जिसके नाम से फ्रांस देश का नाम पड़ा है। इससे पहले यह "गॉल" नाम से पुकारा जाता था। दूसरी जाति का नाम गॉथ था। ये इँगलिश जाति से बहुत भिन्न नहीं थे। पूर्व की ओर पर्शिया में भी कई शक्तिशाली शत्रु खड़े हो गए थे। वे प्राचीन काल में, जब कि रोम की शक्ति बहुत कम थी, एशिया के बड़े शक्तिशाली मनुष्य थे। उन्हें सिकंदर ने जीतकर पर्शियन लोगों के अधीन कर दिया था। सन् २२६ ई० में अपने नेता आरटाक्सँज (Artaxerxes) के सेनापतित्व में उन्होंने फिर स्वतंत्रता पाई और वे फिर एशिया में शक्तिशाली हो गए। इस प्रकार हम देखते हैं कि रोम के दोनों ओर उसके प्रबल शत्रु खड़े हो गए थे।

शीघ्र ही रोम की सैनिक और प्रबंध संबंधी दुर्बलताओं का भंडा फूट गया। रोम को भी अब उसी तरह के सिद्ध-

रोम की विपत्तियां

हस्त शत्रुओं का मुकाबला करना था जिस प्रकार पहले औरों को उसका मुकाबला करना पड़ता था। रोम में अब वे नागरिक नहीं थे जो अपने खेतों को छोड़ छोड़कर देश के लिये लड़ने जाते थे। इस समय तो केवल भाड़ के टट्टू ही शेष रह गए थे। २५० से २६७ ई० तक रोम चारों ओर पद पद पर हारता रहा। २५१ ई० में सम्राट् डेशस (Decius) गॉथ लोगों की लड़ाई में मारा गया। उसके पुत्र ने कर देना स्वीकार कर लिया। इसके अनन्तर फ्रैंकों ने स्पेन को दबा लिया और गॉथों ने एशिया माइनर और ग्रीस का सत्यानाश किया। पर्शियन लोगों ने आरमीनिया पर हाथ मारा। सम्राट् वैलीरियन (Vellirian) (२५३—२६० ई०) ने पूर्व की ओर आक्रमण किया, परंतु वह हार गया और पर्शियनों ने उसे कैद कर लिया। कहा जाता है कि उसे जंजीरों में जकड़ा गया था; और पर्शियन राजा जब घोड़े से उतरता था, तब उस पर पैर रखकर उतरता था! जब वह मरा, तब उसकी खाल पर्शियन मंदिर में रक्खी गई। इन पराजयों से साम्राज्य की दशा दिन पर दिन बिगड़ने लगी। गैलीनस (Gallienas) (२६०—२६५ ई०; जो उपर्युक्त राजा का पुत्र था) के समय में, रोम में ठगों का एक झुंड पैदा हो गया, जिसके सदस्य अपने को सम्राट

कहते थे। वास्तव में इस समय साम्राज्य टुकड़े टुकड़े हो गया था और प्रत्येक सेना अपने अपने नेता को राजा उद्घोषित करती फिरती थी। इस समय देश के प्रबंध की दशा सुधारना कठिन ही नहीं अपितु असंभव था।

इस समय एक बार फिर रोम में शक्ति का संचार हुआ। गैलीनस की मृत्यु पर एक वीर सिपाही क्लौडियस ने राज्य प्राप्त किया। यह इलीरिया का रहनेवाला था। इसने गाथ लोगों को (२६८ से २७० ई०) देश से बाहर निकाल दिया।

इलीरियन साम्राज्य (Illurian Empire)

इसके पश्चात् दूसरा इलीरियन, जिसका नाम आरेलियन (Aurelian) था, राज्य पर बैठा। इसने गाथ लोगों को डेशिया दे दिया; क्योंकि इसकी सम्मति में इस प्रांत के रखने से रोम को कोई लाभ न था। इस प्रकार इसके समय में फिर डेन्यूब नदी रोमन साम्राज्य की सीमा हो गई। आरेलियन फिर साम्राज्य को एक छत्र के नीचे लाया। इसके समय में रोम में फिर प्राण आए। फिर उसी प्रकार की शक्ति इसमें आने लगी, क्योंकि इसका नेता वीर और प्रबंध उत्तम हो गया था। परन्तु प्रबंध में जरा सी भी कमजोरी आने पर सीमा के शत्रु प्रान्तों में लूट खसोट करने लग जाते थे। इस प्रकार अब भी रोम की शक्ति का क्रम से ह्रास हो रहा था। यद्यपि इस समय रोम स्वस्थ प्रतीत होता था, परन्तु यह स्पष्ट प्रकट होता था कि उसका स्वास्थ्य देर तक ठीक नहीं रह सकेगा।

१३—डायोक्लीशन और कांस्टैन्टाइन कृत परिवर्तन

डायोक्लीशन ने शासन संबंधी विधियों में बहुत परिवर्तन किए। उसका पिता रोम में दास था। उसने अपनी योग्यता से ही सेना में इतना उच्च पद पाया था। उसे सिपाहियों ने सम्राट् बनाया था और उसके वे भय दूर कर दिए थे जो प्राचीन राजाओं को होते थे। इसने सिंहासन पर बैठते ही देखा कि मुझे कौन कौन कार्य करने चाहिएँ। सब से पहला काम जो उसे सूझा, वह अपनी सीमा को शत्रुओं से बचाना था। और दूसरा कार्य सिपाहियों से राज्य को बचाना था। उसने सोचा कि अगर राजा अपनी शक्ति को कुछ कुछ बाँट कर कार्य करे तो वह अच्छी तरह कार्य सम्पादन कर सकेगा। उसने वीर सेनापति मैक्सिमियन (Maximian) को अपना साथी चुना। इस सेनापति को आगस्टस की उपाधि भी प्राप्त थी। इसके साथ ही उसने सीजर उपाधिधारी दो सेनापतियों को (जिनके नाम गेलिरियस और कानस्टेंटियस थे) भी इस कार्य में शामिल कर लिया। इन सीजरों का पद उतना अच्छा नहीं था जितना कि आगस्टस उपाधि-धारियों का था, परंतु ये लोग भी आगस्टस की उपाधि पाने के उम्मेदवार थे।

इस प्रकार अब से रोम राज्य का शासन चार व्यक्ति करने लगे। थ्रेस, मिस्र और एशिया पर डायोक्लीशन, इटली और अफ्रिका पर मैक्सिमियन, गौल, स्पेन और ब्रिटेन पर कान्स्टेंटियस तथा डेन्यूब के आस पास की रियासतों पर गैलिरियस शासन करता था। इन चार व्यक्तियों ने सब प्रकार के उपद्रव शान्त कर दिए और सिपाहियों को सीमा प्रान्तों पर दीवारें बनाने की आज्ञा दी। राइन और डेन्यूब नदियों के किनारों पर तथा परशिया की सीमा पर बड़े बड़े किले तथा लड़ाई के लिये छावनियाँ बनाई गईं। उन पर सिपाहियों को नियुक्त किया गया। इस प्रकार कुछ देर के लिये रोम में शान्ति हो गई और असभ्य आक्रमणकारी दबा दिए गए।

सिपाहियों की शक्ति का ह्रास

इस प्रकार डायोक्लीशन की यह शासन विधि सफल हुई, क्योंकि इसमें चार शक्तिशाली पुरुष मिलकर कार्य्य करते थे; और जब तक इस शासन-प्रणाली के अनुसार कार्य्य किया गया, तब तक सिपाही लोग सर्वथा उनके वश में रहे। सिपाही लोग डरते थे कि अगर हम उनमें से किसी एक को मार देंगे, तो शेष अन्य सेना लेकर हम पर आक्रमण कर देंगे। इस प्रकार उलटे हमें ही दण्ड मिल जायगा और राजा का कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। इस समय से सेनाएँ सम्राटों के आज्ञानुसार चलने लगीं और बहुत दिनों के पीछे फिर एक बार लोगों को शान्ति के वास्तविक सुख का अनुभव होने लगा।

इन सब परिवर्त्तनों के साथ साथ रोम में भी परिवर्त्तन हुआ। यह परिवर्त्तन इस रूप में हुआ कि रोम का राजधानी के रूप में नाश हो गया, अर्थात् अब वहाँ राजधानी न रह गई। यद्यपि सिनेट वहीं रहती थी, पर राजा लोग वहाँ नहीं रहते थे। उन्होंने अपने लिये दूसरे उत्तम और सुरक्षित स्थान ढूँढ़ लिए। वे चाहते थे कि असभ्य जातियों के आक्रमणों की शंका होते ही हम वहाँ पहुँच सकें। इसी लिये डायोक्लीशन ने एशिया माइनर के निकोमीडिया नामक स्थान में निवास करना आरम्भ किया और मैक्सिमियन ने मिलान में डेरा लगाया। यह कोई छोटा मोटा परिवर्त्तन नहीं था। पाठकों ने देखा होगा कि शुरू शुरू में सम्राट् लोग रोम के मैजिस्ट्रेट तथा सेना के सेनापति होते थे. परंतु इन सम्राटों के ही शासन काल में रोम और अन्य प्रांतों में समानता आती गई। रोम की मर्य्यादा अब अन्य प्रान्तों से बहुत उच्च नहीं रह गई थी। अब यह जरूरी नहीं रह गया था कि शासन का कार्य खास रोम में ही रहे। अब यह साम्राज्य के चाहे जिस भाग में जा सकता था।

रोम से राजधानी उठ गई

जब से सम्राटों ने रोम में रहना छोड़ा, तब से उनमें यह शक्ति आ गई थी कि वे रोम के रीति-रिवाजों में परिवर्त्तन कर सकें। पहले रोम में सम्राट् साधारण नागरिक के अधिकारों का ही भोग करता हुआ रहता था और उसकी रहन सहन भी सादी ही होती

सम्राटों की शान शौकत

थी। परंतु यह सादगी अब धीरे धीरे दूर हो चुकी थी। जब हम डायोक्लीशन की शान देखते हैं, तो हमारे आश्चर्य का पारावार ही नहीं रहता। उसके कपड़ों की शान अनोखी थी और बगैर बहुत से नौकरों के श्रीमान् से बाहर ही नहीं निकला जाता था। वह अपनी प्रजा के सम्मुख बहुत ही कम आता था और बिना शान शौकत के कोई काम ही न करता था। इसलिये लोगों के मन में यह विचार उठने लग गया कि राजा हमसे भिन्न प्रकार का उच्च मनुष्य है। उसके सामने हमें बहुत नम्र होकर बोलना चाहिए और उसका आदर करना चाहिए। राजा के नौकरों के नाम भी बड़ी पदवियों की भाँति प्रयुक्त होने लग गए थे। उनका महत्त्व प्राचीन कौन्सलरों और सिनेटरों के नामों से भी बढ़ गया था। यह दूसरा बड़ा परिवर्त्तन था जो डायोक्लीशन ने किया था; और इसके कारण सिपाहियों और सम्राटों में मर्यादा का अतीव भेद आ गया था। अब वे लोग उसे अपने में से नहीं समझते थे। वे उसे बड़ा समझकर उसकी आज्ञा का पालन करते थे।

यह एक नई राजविधि थी जो डायोक्लीशन ने प्रचलित की थी। पीछे आनेवाले अन्य राजाओं ने इसे और भी आगे बढ़ाया। दूसरे, डायोक्लीशन इसलिये भी प्रसिद्ध है कि उसने अपने आप राज्य त्यागकर एकांत वास करना पसंद किया था। उसने २१ वर्ष

डायोक्लीशन का राज्य-त्याग

तक कठिन परिश्रम करके अपने कार्य का निर्वाह किया था। ३०५ ई० में जब उसका स्वास्थ्य कुछ बिगड़ने लगा, तब उसने अपनी प्रजा और सेना के सम्मुख अपना राजकीय वेष उतार दिया। वह अपने एक महल में निवास करने लगा; परंतु वहाँ रहते हुए भी उसे शान्ति प्राप्त न हुई; क्योंकि इन वर्षों में सीजर तथा आगस्टस में लड़ाई झगड़े शुरू हो गए थे जो ३२३ ई० में जाकर शांत हुए।

कांस्टेंटाइन दी ग्रेट

इसी समय फ्लेवियस वेलिरियस कांस्टैंटिनियस (Flavius Valirius Constantinius) नामक व्यक्ति कांस्टेंटाइन दी ग्रेट के नाम से राजपद पर आरूढ़ हुआ। यह कांस्टेंटिनस सीजर का पुत्र था। अपने पिता की मृत्यु पर यह ब्रिटेन की सेनाओं का सीजर बनाया गया था। यह वीर और बुद्धिमान् था तथा अपनी शक्तियों का विकास करना जानता था। इसी कारण इसने एक एक करके सब योद्धाओं को जीत लिया और ३२३ ई० में राज्य का अधिकारी बन बैठा।

ईसाई धर्म का प्रचार

जिस समय ये सब परिवर्त्तन हो रहे थे उस समय ईसाई मत का प्रचार भी बड़े वेग से हो रहा था। गिरजाओं तथा अन्य धर्ममंदिरों की क्रमशः वृद्धि हो रही थी। हम पहले बतला चुके हैं कि सम्राट् लोग ईसाइयों से प्रसन्न नहीं रहते थे; और यही कारण था कि उनमें से बहुतों को नीरो ने कत्ल करवा दिया

था। बीच बीच में कितने ही राजाओं ने ईसाइयों को पूरी तरह से दबाने का भी यत्न किया था। वे समझते थे कि ईसाई लोग राजद्रोही हैं और लोगों को नियम भंग करने के लिये उत्तेजित करते हैं। वे नहीं समझते थे कि ऐसे भी आदमी हो सकते हैं जिनका धर्म सर्वसाधारण के धर्म से भिन्न हो। वे नहीं समझते थे कि ईसाइयों के कुछ निज के और नए सिद्धांत हैं। वे तो चाहते थे कि राजकीय उत्सवों में तथा साधारण त्योहारों में सब लोग आया करें। परंतु ईसाई लोग ऐसा नहीं कर सकते थे; और यही कारण था कि राजा लोग समय समय पर उन पर अत्याचार करते थे। चाहे कोई अच्छा राजा हो या बुरा, वह ईसाइयों पर हाथ चलाना पाप नहीं समझता था। सभी यह समझते थे कि ये राज-द्रोही हैं और आन्दोलन करनेवाले हैं। ट्राजन, डेशियस (Dacius) और वेलिरियन (Valerian) आदि सब इसी प्रकार के राजा थे। परंतु डायोक्लीशन इन सब से बढ़ा हुआ था। इसके समय में ३०३ से ३१३ ई० तक समस्त साम्राज्य में जहाँ तहाँ ईसाइयों का वध किया गया। परंतु यह अंतिम ही बारी थी। इस बार भी ईसाइयों ने दिखा दिया था कि हम राजाओं की अपेक्षा अधिक दृढ़-प्रतिज्ञ हैं और अपने धर्म के लिये मर सकते हैं। सारे साम्राज्य में सभी लोग राजाओं का सिक्का मानते थे। केवल ईसाई ही ऐसे थे जो राजाओं के हत्थे नहीं चढ़े। इसलिये

स्वतंत्रता के अभिलाषी लोग आ आकर ईसाइयों में सम्मिलित होने लगे। पुराने सभी धर्म नष्ट हो चुके थे। उनके विषय में न कोई कुछ जानता था और न मानता था। दुःख-पीड़ित रोमन लोग बहुत दिनों से कोई धर्म्म ढूँढ़ रहे थे; और इधर ईसाई लोगों के साहस तथा पवित्रता ने उनके धर्म की प्रशंसा प्रत्येक मनुष्य की जिह्वा पर चढ़ा दी थी, इसलिये सब लोग आ आकर उसमें शामिल होने लगे। परिणाम यह हुआ कि अंत में कांस्टेंटाइन को राज्य की रक्षा के लिये यह आवश्यक जान पड़ा कि वह ईसाई धर्म को राजधर्म बना ले; और उसने ऐसा ही किया।

कांस्टेंटाइन ने केवल ३२३ ई० से ३३७ ई० तक राज्य किया था। वह पहला राजा था जिसने रोमन साम्राज्य का धर्म परिवर्त्तित किया। इस धर्म-परिवर्त्तन के साथ साथ रोम में और भी कई बड़े बड़े परिवर्त्तन हो गए जिन्होंने रोम को दृढ़ बना दिया। ईसाई धर्म्म ने लोगों को परस्पर प्रेम-सूत्र में बाँध दिया, जो रोम के लिये उस समय के विचार से बहुत ही आवश्यक था।

राज्य का धर्म-परिवर्त्तन

कांस्टेंटाइन को डायोक्लीशन के किए हुए परिवर्त्तन तथा उनके लाभों का ज्ञान था, अतएव उसने इन परिवर्तनों को और भी अधिक बढ़ाया। उसने यह सोचकर कि रोम में फिर पुराने विचार प्रबल हो जायँगे, नई राजधानी बसाई।

कांस्टेंटाइन द्वारा नए रोम की स्थापना

उसने इस शहर का नाम कांस्टेंटीनोपल (कांस्टेंटाइन का नगर) रखा। यह नगर थ्रेस के अंतरीप पर बसा था जिसका एक सिरा कृष्ण सागर में गया हुआ था। यह नगर एशिया के अत्यंत समीप था तथा इसके निवासी ग्रीक या यूनानी भाषा बोलनेवाले थे। अगर हम विचार करें कि उसने राजधानी को एशिया के समीप क्यों बसाया, तो हमें इसका कारण ज्ञात हो जायगा। इसका कारण यह था कि एशियावासी सदा एक राजा के नीचे रहे थे और उन्हें प्रजासत्तात्मक राज्य का कुछ भी ज्ञान न था; और कांस्टेंटाइन चाहता था कि मैं भी एक शक्तिशाली राजा बनूँ। रोम के प्राचीन विचारों से छुटकारा पाए बिना किसी का स्वेच्छाचारी सम्राट् बनना कठिन था। एक नए नगर को रोम का स्थान दे देने से वह इन सब झगड़ों से बच सकता था। रोम नगर में ये सब बातें संभव न थीं, क्योंकि वहाँ की अंतरंग सभा न होते हुए भी बहुत कुछ थी। कांस्टेंटिनोपल में भी सम्राट् ने एक अंतरंग सभा बनाई, परंतु उसमें उसने अपनी इच्छा के अनुसार ही सदस्य रखे।

रोम की अंतरंग सभा, कुलीन मंडल तथा स्वतः रोम से छुटकारा पाकर कांस्टेंटाइन ने सेना की शक्ति को भी घटाने का यत्न करना प्रारंभ किया। उसने प्रत्येक सेनापति के अधीनस्थ सैनिकों की संख्या बहुत ही अधिक घटाई। उसने सैनिकों को भी दो भागों में विभक्त किया। प्रथम

कांस्टेन्टाइन का साम्राज्य में परिवर्त्तन

भाग को जहाँ साम्राज्य की सीमा को सुरक्षित करने के लिये भेजा, वहाँ द्वितीय भाग को नगरों के प्रबंधार्थ रखा। यही नहीं, उसने बड़े बड़े प्रांतों को भी छोटे छोटे जिलों में विभक्त कर दिया। प्रति १३ जिलों पर चार राज्याधिकारी नियत किए गए जो जिलों के कार्यों के संबंध में सम्राट् के सम्मुख उत्तरदाता थे। इन कार्य्यों से सम्राट् की शक्ति बहुत ही अधिक बढ़ गई। परंतु इस प्रकार के प्रबंध में सम्राट् को अनंत धन व्यय करना पड़ा। इसका परिणाम यह हुआ कि साम्राज्य की प्रजा पर बहुत ही अधिक कर लगाए गए जिनके देने में प्रजा सर्वथा असमर्थ थी; क्योंकि अधिकांश लोगों के घर बार प्राय: असभ्यों के द्वारा लूट लिए जाते थे। वे कर देते ही कहाँ से !

कांस्टेन्टाइन की मृत्यु के अनंतर ३६३ ई० तक उसी का परिवार रोमन साम्राज्य पर शासन करता रहा। उसके परिवार में सबसे मुख्य तथा शक्तिशाली सम्राट् फ्लेवियस क्लाडिस जूलियन हुआ।

जूलियन

उसी के भतीजे ने जर्मनों को साम्राज्य की सीमा से बाहर निकाल दिया था। जूलियन मूर्त्तिपूजक था। उसने ईसाइयों को संपूर्ण राज्याधिकारों से पृथक् कर दिया था। वह बड़ा वीर था। उसने ईरानियों को बहुत से युद्धों में पराजित किया था। उसके बहुत यत्न करने पर भी मूर्त्तिपूजा का उद्धार न हो सका। नगरों में तो ईसाई धर्म प्रबल हो ही

गया था; जूलियन के समय तक केवल ग्रामों में ही मूर्त्तिपूजा की मुख्यता रह गई थी।

असभ्यों का आक्रमण

पाठकों को रोम के पूर्व वर्णित इतिहास से ज्ञात हो गया होगा कि किस प्रकार लगातार १५० वर्षों से जर्मन लोग रोमन साम्राज्य पर आक्रमण करते रहे और दिन पर दिन शक्तिशाली होते जाते थे। इन्हीं दिनों पूर्वीय देशों में हूणों ने गाल लोगों पर आक्रमण किया। उनसे पराजित होकर गाल लोग रोमन साम्राज्य पर आ टूटे। सम्राट् थियोडासियस ने बड़ी बुद्धिमत्ता से साम्राज्य को गाल लोगों से सुरक्षित किया और अपने ही कई प्रांतों में शांति से उनको बस जाने की आज्ञा दे दी।

१४—साम्राज्य में असभ्य जातियों का निवास

थियोडासियस अंतिम सम्राट् था जिसने संपूर्ण साम्राज्य पर शासन किया। उसकी मृत्यु के अनंतर सारा साम्राज्य उसके दो पुत्रों होनोरियस तथा आर्किडियस में बँट गया। होनोरियस अभी ११ ही वर्ष का था और स्टिलिको नामक एक वीर सज्जन के संरक्षण में था। जब तक वह जीता रहा, तब तक उसने साम्राज्य को गालों के आक्रमणों से बचाया। परंतु ४०८ ई० में होनोरियस को उसकी उन्नति तथा शक्ति पर संदेह हो गया; अतः उसने उसको मरवा डाला। स्टिलिको के मरते ही साम्राज्य में कोई ऐसा वीर व्यक्ति न रहा जो गाथ लोगों के रोकने में समर्थ होता। इस असभ्य जाति ने अपने राजा अलफी की अधीनता में ४१० ई० में रोम को घेरा और उस पर अधिकार कर लिया। रोम को जीतने के अनंतर वह मर गया और उसके स्थान पर अथाल्फ राज्य पर बैठा। उसने रोमनों से बहुत कुछ सीख लिया था, अतः उसने साम्राज्य को गाथ में परिवर्त्तित करने के स्थान पर रोमनों के साथ मित्रता कर ली और अपने अनुयायियों को वहीं बसा दिया। यहीं पर बस न करके उसने होनोरियस की बहन के साथ विवाह

स्पेन में गाथ लोगों का निवास

भी कर लिया और स्पेन तथा फ्रांस से जर्मनों को निकाल बाहर किया। वह अपने आपको रोमन साम्राज्य का एक राज्याधिकारी प्रकट करता था; परंतु वास्तव में उसने रोमन साम्राज्य में गाथ जाति का एक उपनिवेश बसा दिया था।

अभी बतलाया जा चुका है कि गाथ लोगों ने रोमनों के साथ बुरा बरताव नहीं किया था, बल्कि वे उनके साथ ही मिलकर रहने लगे थे। परंतु हूणों ने ऐसा नहीं किया। वे अपने सम्राट् एट्टिला (४३३—५३ ई०) के सेनापतित्व में सारे युरोप पर आ टूटे। ये रोम के बड़े भारी दुश्मन थे। जहाँ ये हूण लोग गए, वहीं उजाड़ कर डाला। एट्टिला ने ४५१ ई० में गाल पर आक्रमण किया, पर वह गाथों तथा रोमनों की सम्मिलित सेना से पराजित हुआ। सौभाग्य से वह दो ही वर्ष बाद मर गया और सारी हूण जाति तितर बितर हो गई।

हूणों का आक्रमण

इन्हीं दिनों में संपूर्ण युरोप पर असभ्यों ने आक्रमणों का ताँता लगा दिया था। दक्षिणी फ्रांस तथा स्पेन में गाथ, उत्तरी गाल में फ्रैंक्स, ब्रिटेन में आंग्ल, और अफ्रिका में वंडाल बस गए थे। इसी प्रकार इटली को जर्मनों ने अपने अधिकार में कर लिया था। यद्यपि उनके सेनापति अपने आपको रोमन सम्राट् का राज्याधिकारी ही कहते थे, पर वास्तव में वे जो चाहते थे, वही करते थे।

असभ्यों का निवास

इस विक्षोभ के समय रोमन साम्राज्य के पूर्वीय देश अत्यंत शांति में अपने दिन बिता रहे थे। एट्टिला और उसके हूणों ने गालों पर आक्रमण करके जैसा उत्पात मचाया, वैसा उन्होंने पूर्वीय देशों में नहीं मचाया था। इन्हीं दिनों में यूनानियों ने धर्मशास्त्र (Theology) का आविष्कार किया; क्योंकि उनके पास धर्म-चर्चा करने के लिये पर्याप्त समय था। वे लोग असभ्यों से सर्वथा पृथक् रहे। परंतु युरोप के पश्चिमी भाग में यह बात न थी; क्योंकि वहाँ के निवासी उन असभ्यों से शीघ्र ही मिल गए, जिन्होंने उन पर आक्रमण किया था।

पूर्वीय देशों में रोमन साम्राज्य

जिस समय रोमन साम्राज्य का पश्चिमी भाग असभ्यों के कारण टुकड़े टुकड़े हो गया, उस समय उसका पूर्वीय भाग बहुत कुछ संघटित रहा। सम्राट् जस्टीनियन के समय में रोमन साम्राज्य फिर बहुत कुछ बढ़ गया। उसने अपने प्रसिद्ध सेनापति वेलिसेरियस के द्वारा फारस को हराया और अफ्रीका को जीता। यही नहीं, उसने सिसली को अपने अधीन किया और इटली से गाथ लोगों को बाहर निकाल दिया। इससे जस्टीनियन रोम और कांस्टैंटिनोपल दोनों ही का अधिपति हो गया। परंतु वह अधिक समय तक अपने पद पर न रह सका, क्योंकि ५६८ ई० में जर्मन जाति के एक भाग लंबार्डज ने इटली के

जस्टीनियन का राज्य

उत्तरीय भाग को विजय कर लिया। इन्हीं दिनों में पर्शियन भी प्रबल हो गए थे और हूणों के ढंग की अवर्ज नामक एक जाति डेन्यूब के तट पर आ बसी थी। इस अवसर पर रोम को पुनः ईश्वर ने बचाया। सम्राट् हाराक्लियस अपने समय का हनीबाल था। उसने चार वर्ष तक ईरानियों को एक के बाद दूसरे अनेक युद्धों में पराजित किया और उनकी शक्ति सदा के लिये नष्ट-भ्रष्ट कर दी। उसी के समय में अरब लोग भी दुर्बल हो गए थे।

अन्य विपत्तियों के सदृश रोम के लिये अरबवालों ने भी एक नई विपत्ति का बीज बो दिया। अरब में प्रसिद्ध सुधारक

अरबों की विजय

मुहम्मद का समुत्थान हो गया था। इधर उधर बिखरे हुए अरबनिवासी मुहम्मद के झंडे के नीचे इकट्ठे हो गए और हूणों के सदृश ही विजय करने लगे। हूणों में और इनमें बड़ा भारी अंतर था; क्योंकि हूण लोग तो अपने राजा के मरते ही तितर बितर हो गए थे, पर अरबवालों के संबंध में यह बात नहीं थी। अरब-वाले बहुत समय तक एक दूसरे से पृथक् नहीं हुए। यही कारण था कि रोमनों के हाथ में सीरिया, मिस्र तथा अफ्रिका फिर कभी न आए। इन पर चिर काल तक मुसलमानों का ही प्रभुत्व रहा और अभी तक है। अरब-निवासियों ने स्पेन को भी जीतना चाहा; परंतु ७३२ ई० के संसार-प्रसिद्ध युद्ध में गाल के राजा चार्ल्स मार्टल ने इनको बहुत बुरी तरह

से पराजित किया। सम्राट् लियो तृतीय (७१७—४१ ई०) का इन्हीं दिनों में पोप से झगड़ा हो गया, इससे इटली का प्रदेश भी रोम से पृथक् हो गया। इटली और पोप के बीच चिर काल तक झगड़े चलते रहे। परिणाम यह हुआ कि ८०० ई० में अपने कृपापात्र गाल के राजा चार्ल्स दी ग्रेट को पोप ने रोम का सम्राट् बना दिया। इससे पहले प्रायः पोप ही रोम का शासन करता था और स्वयं कांस्टैंटिनोपल में रहता था।

साम्राज्य के दो विभाग

इन्हीं दिनों में संपूर्ण साम्राज्य दो भागों में विभक्त हो गया। इसका कारण यह था कि कांस्टैंटिनोपल का राजा अपने आपको रोमन साम्राज्य का उसी प्रकार सम्राट् उद्घोषित करता था जिस प्रकार कि रोम का सम्राट्। पिछले दिनों में पश्चिमी रोमन साम्राज्य का 'पवित्र रोमन साम्राज्य' नाम पड़ा; और उसका सम्राट् जर्मनी का राजा होता था। वह संपूर्ण पश्चिमीय युरोपीय जातियों पर अपना राज्य समझता था। परंतु ज्यों ज्यों समय बीतता गया और उसकी शक्ति घटती गई, त्यों त्यों उसके हाथ से देश निकलते गए और स्वतंत्र होते गए। इसी को भिन्न भिन्न जातियों का उद्भव समझना चाहिए।

पूर्वीय रोमन साम्राज्य की चिर काल तक तुर्कों से लड़ाई होती रही; परंतु १४५३ ई० में तुर्क लोगों ने इनको पराजित किया और उसकी राजधानी कांस्टैंटिनोपल को अपने अधीन

कर लिया और उसको तुर्की साम्राज्य की राजधानी बना दिया, जो अब तक ज्यों की त्यों ही चली आ रही है।

उपरि-लिखित विवरण से पाठकों को ज्ञात हो गया होगा कि किस प्रकार रोमन साम्राज्य के टुकड़े टुकड़े हो जाने पर वर्त्तमान कालीन युरोपियन जातियों की सृष्टि हुई। रोम की शक्ति इतनी अधिक थी कि उसका एक दम से नाश न हो सका। हाँ, वह स्वयं ही शनैः शनैः क्षीण होता चला गया। यही कारण है कि यह नहीं कहा जा सकता कि रोम का इतिहास कहाँ पर समाप्त होता है।

रोमन साम्राज्य का प्रभाव

युरोप की प्रत्येक जाति रोम की ऋणी है। अभी तक युरोपियन जातियों की भाषा में लैटिन के शब्द पर्याप्त मात्रा में हैं। जिन दिनों रोम की राजनीतिक शक्ति लुप्त हो गई, उन्हीं दिनों उसकी धार्मिक शक्ति अत्यंत अधिक हो गई। ईसाई मत का वह केंद्र था और पोप का भी वहीं पर निवास था। सुधार (Reformation) काल में युरोपियन जातियों ने रोम की इस शक्ति पर भी कुठाराघात किया। इतना होने पर भी युरोपियन जातियों मे अब तक पोप का महत्त्व है, यद्यपि उसकी राजनीतिक शक्ति कुछ भी नहीं रह गई है।

मनोरंजन पुस्तक-माला

अपने ढंग की यह एक ही पुस्तकमाला प्रकाशित हुई है जिसमें नाटक, उपन्यास, काव्य, विज्ञान, इतिहास, जीवन-चरित आदि सभी विषयों की पुस्तकें हैं। यों तो हिंदी में नित्य ही अनेक ग्रंथ-मालाएँ और पुस्तक-मालाएँ निकल रही हैं, पर मनोरंजन पुस्तकमाला का ढंग सबसे न्यारा है। एक ही आकार प्रकार की और एक ही मूल्य में इस पुस्तकमाला की सब पुस्तकें प्रकाशित होती हैं। इसकी अनेक पुस्तकें कोर्स और प्राइज बुक में रखी गई हैं; और नित्य प्रति इनकी माँग बढ़ती जा रही है। कई पुस्तकों के दो दो, तीन तीन संस्करण हो गए हैं। इसकी सभी पुस्तकें योग्य विद्वानों द्वारा लिखवाई जाती हैं। पुस्तकों की पृष्ठ-संख्या २००-३०० और कभो कभो इससे भी अधिक होती है। जिल्द भी बढ़िया होती है। इन पुस्तकों का मूल्य १।) है और स्थायी ग्राहकों से ।||≡),
जो पुस्तकों की उपयोगिता और पृष्ठ-संख्या आदि को देखते हुए बहुत ही कम है। आशा है, हिंदी-प्रेमी इस पुस्तकमाला को अवश्य अपनावेंगे और स्थायी ग्राहकों में नाम लिखावेंगे। अब तक इसमें भिन्न भिन्न विषयों पर आगे लिखी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। विवरण उस तरफ देखिए।

१ आदर्श जीवन, २ आत्मोद्धार, ३ गुरु गोविंदसिंह, ४ आदर्शहिंदू १ भाग, ५ आदर्शहिंदू २ भाग, ६ आदर्शहिंदू ३ भाग, ७ राणा जंगबहादुर, ८ भीष्म पितामह, ९ जीवन के आनंद, १० भौतिक-विज्ञान, ११ लालचीन, १२ कबीर-वचनावली, १३ महादेव गोविंद रानडे, १४ बुद्धदेव, १५ मितव्यय १६ सिक्खों का उत्थान और पतन, १७ वीरमणि, १८ नेपोलियन बोनापार्ट, १९ शासन-पद्धति, २० हिन्दुस्तान भाग १, २१ हिन्दुस्तान भाग २, २२ महर्षि सुकरात, २३ ज्योतिर्विनोद, २४ आत्मशिक्षण, २५ सुंदरसार, २६ जर्मनी का विकास भाग १, २७ जर्मनी का विकास भाग २, २८ कृषिकौमुदी, २९ कर्त्तव्यशास्त्र, ३० मुसलमानी राज्य का इतिहास भाग १, ३१ मुसलमानी राज्य का इतिहास भाग २, ३२ रणजीतसिंह, ३३ विश्व-प्रपंच भाग १, ३४ विश्व-प्रपंच भाग २, ३५ अहिल्याबाई, ३६ रामचंद्रिका, ३७ ऐतिहासिक कहानियाँ, ३८ हिंदी निबंधमाला भाग १, ३९ हिंदी निबंधमाला भाग २, ४० सूर-सुधा, ४१ कर्त्तव्य, ४२ संक्षिप्त राम-स्वयंवर, ४३ शिशु-पालन, ४४ शाही दृश्य, ४५ पुरुषार्थ, ४६ तर्कशास्त्र पहला भाग, ४७ तर्कशास्त्र दूसरा भाग, ४८ तर्कशास्त्र तीसरा भाग (छपने को है), ४९ प्राचीन आर्यवीरता, ५० रोम का इतिहास।

पता—

मैनेजर इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग